MANUSCRIPT NO.	733
NAME OF MANUSCRIPT	Krishan Dipika, Sidhand Pancha Dyayi , Rukmani Mangal
AUTHOR	Nand Dass
SUBJECT	Poetry
LANGUAGE	Hindi
SCRIPT	Devnagiri
BRIEF EXPLANATORY NOTE	The manuscript is written in Braj Bhasha by the famous poet Nand Dass. It contains the devotional songs in praise of Lord Krishna.

733.

ACCESSION NO. 733

AUTHOR. NAND DASS KRIT BHASA-SAHIT.

TITLE. KRISHAN DIPIKA, SIDHAND. PANCHADHYAYI, RUKMANI MANGAL.

દૂ. ગ્રં.
733

करावहिचंद॥ अरुजु महामति श्रीधरस्वा
मी॥ सबग्रंथनिके अंतरजामी॥६॥ तिन
कही श्रीभागवतजु ग्रंथ॥ जैसें छीरसमु
द्रकोमंथ॥ मंदरगिरिसे मज्जत जहां॥ रतु
कनूकाहोंको तहां॥७॥ तामें पुनियहद
समस्कंध॥ आश्रयवस्तुकोरसमैसिंध॥
अतिअगाधकेसें अनुसरों॥ क्यों सिद्धां
तिरतनउद्धरो॥८॥ मित्रकहत हे तो यह
ऐसें॥ अहो नंद तुम कहत हो जैसें॥ औ
परिजथासकतिकछुकीजे॥ अमृतरा
कुहूंदही जीजे॥९॥ दोहा॥ जो गुरुगिरि
थिविसकी सुंदरहयादेरैं॥ गुंगसकलपि
ई॥ अहटे पंगु चढे गिरिमेर॥१०॥ चौपई॥ प
नुजब औ नवलछनकोन तिनकोनी
च्याने॥ ऊतिहोन जबलगि याके भेदन

२

जाने॥ दसईवस्तुकोंपहिचाने॥११॥ नं

कहततेसुनिनवलछिरा॥ जेसेंबरनत

बडेबिचछिरा॥ सर्गविसर्गस्थानरुपोष

न॥ ऊतिमन्वंतरनृपगणतोषन॥१२॥ पु

निनिरोधअरुमुक्तिविचछिरा॥ आश्रय

वस्तुकेयेनवलचछिरा॥ महदादिकजेका

रनवर्ग॥ तिनकीसृष्टिजुकहियेसर्ग॥१३॥

कार्यसृष्टियहविश्वजुआहि॥ बिडुषवि

सर्गकहतहेंताहि॥ स्थयीदिकमर्यादवि

तान॥ ताहिस्थानकहतकबिजान॥१४॥

जद्यपिभक्तभयोबहुदोषन॥ ताक[illegible]

कहियेपोषन॥ साधअसाधवास

हा॥ ऊतिविभूतिसमफिलेतहा॥[illegible]

चीनधर्मकीप्रवर्ति॥ सोकहियेम

ति॥ मुँकुंदादिनृपनिकीकथा॥ से

कथासुनिजथा ॥१६॥ दुष्टनृपतिकोहरन
अबोध ॥ ताकोंबुधिजनकहतनिरोध ॥ अन्य
रूपकीत्यागनयुक्ति ॥ निजस्वरूपकीप्राप्ति
सुमुक्ति ॥१७॥ नवलछिनकरिलपियेजो
इ ॥ आश्रयवस्तुसमफिलेसोइ ॥ सोआश्रय
इहिदशमस्कंध ॥ प्रगटितमोचनलोचनअं
ध ॥१८॥ दशममध्यजुनिरोधबषान्यो ॥ दुष्टनृ
पहलनिसबहीजान्यो ॥ अबनिरोधभेदहैजि
ते ॥ अंतरंगदसुनिलेतिते ॥१९॥ भक्तहीउत
विषयतेनिरोध ॥ उतहिमोह्मसुषतेअवरोध
सुद्धप्रेममधिप्रापतिकरै ॥ इकनिरोधइहिवि
धिविस्तरै ॥२०॥ ज्योंव्रजवासनिमोचदिषा
ई ॥ ब्रह्मानंदबुहरिलेजाई ॥ मधुकरमूरत्तिवि
नुजबअकुलाने ॥ तवफिरिवुहस्योंव्रजही
ल्याने ॥२१॥ औरनिरोधभेदसुनिलेधों अ।

३

तिस्वरूपतहांमननैंहधो॥जदपिकोटिब्र
ह्मांडकेकरता॥अरुतिनकेभरतासंहर
ता॥२२॥परमसनेहभगतिहोइजाके॥
ईश्वरताकछुफुरैनताके॥ज्योंसुसुतसु
षमेंजगुपेष्यो॥पैसुतईश्वरकैनहीलेष्यो
॥२३॥ललितलाललीलालपटानी॥सो
वहभूतकृयासीजानी॥अवसुनिकृत्त
विषैकेनिरोध॥जदपिअनंतअषंडितबो
ध॥२४॥सोतवबंचकनाहिनफुरै॥जवह
ठिमातस्तनअनुसरे॥अवनिरोधमेहजे
आहि॥रसलीलनिमेंलीजेकुचाहि॥२५
॥दोहा॥भक्तिविनाश्रीभागवतकहेंसुनें
जेनंद॥द्दवीज्योंविंजननिमेंस्वादनजानें
मंद॥२६॥चोपई॥अवसुनिभक्तपरीछित
वातें॥श्रीभागवतप्रगटहैजातें॥सुंदर

रिमूरतिजोआहि॥उदरमध्यमोआयोचाहि
॥२७॥सबठांकृस्नपरीछिकलह्यौ॥यातेना
वपरीछितकह्यौ॥जेउत्तमश्रोतारससने
तिनमेंमुष्यपरीछितगने॥२८॥बिसरेजा
हिआहारविहार॥केवलहरिगुनश्रवन
आहार॥तेसईउत्तमबक्ताबने॥श्रीसुक
परमप्रेमरैसने॥२९॥कृस्नललितलीला
अनुरागी॥ब्रह्मतेनिकसिभयेवैरागी॥
सनकादिकअरुश्रीसुककहिया॥अंतर
वह्निइहिदुकुवनिमहिया॥३०॥तासोंकृ
स्नपरीछितकरी॥नषसिषकृस्नचरितरस
भरी॥होमुनितुमकरिरबिससिवंस॥नी
केकहरेहेनहीसंस॥३१॥अरुजेउभैवंस
केभूप॥तिनकेजजेचरितअनूप॥तेतुम
पा[illegible] आछेबरने॥मनहरनेजगमंगलक

रने ॥३२॥ अरुजदुधर्मशीलकौबंस ॥ सोपु
नितुमकरिभलैंप्रसंस ॥ धर्मशास्त्रबलनिमै
लहियो ॥ पितहिनअपनोंजोबनदियो ॥३३
तिहिकुलपरमेश्वरअवतरे ॥ अंसकलावि
भूतिकरिभेरे ॥ सोप्रभुइहिजदुकुलमेंआ
ये ॥ कीनेजेजेकर्मसुभाये ॥३४॥ तेविस्तार
सोंमोसोंकहो ॥ होमुनिसोतुमअमलसनग
हो ॥ रूपगुनानवादकेविषैं ॥ सबअधिका
रीअपनीइषैं ॥३५॥ मुक्तितेऊगावतरंगमी
नें ॥ जद्यपिसकलतत्त्वकरिहीनें ॥ सुमुषि
निकौंभवऔषधयहै ॥ जातेंसंसृतरोगनरहै
॥३६॥ विषईजनमनकोंआराम ॥ सबर
सधामपरमअभिराम ॥ विनापसुघ्नहिसो
प नरकोंन ॥ कहेकिहरिगुनअबहिसुनोंन
॥३७॥ पसुघनसोजोकर्मदिढावै ॥ क[illegible]म

नानबारनहीभावे॥हमरेतोहैंहरिकुल
देव॥तुमसबनीकेजानतभेव॥३८॥अ
र्जुनआदिपितामहमेरे॥जबकुरुसेनासा
गरघेरे॥अमरनिकरिअर्जुनजीतेजाही॥
भीष्मादिकअतिरथ्यजिहिमाही॥३९॥
तेऊतहांतिमंगलमोरे॥अपनीजातिके
मेछनहोरे॥तिमिङ्गलजातिमीनकीआ
हि॥शतजोजनबिस्तरहैजाहि॥४०॥ता
हिगिलतजोजलचरलहिये॥ताकोनांउति
मंगलकहिये॥तिनकरिमहादुरतयसोइ
जोदेषेमोअचिरजहोइ॥४१॥तहांश्रीकृ
ष्णसुनौकामेरा॥कबधौंतिनहिपारैलेगरा
अरुकेवलतेईनहीतोरे॥मेरेऊतनकेरष
वारे॥४२॥द्रोणपुत्रकोबानअन्यारो॥अ
निततातोरातोमारो॥जबआयोतबमे

यामेरी॥ दोरी सरन गाई जिनकेरी॥४३॥ मेरे
हितकरि विहरि केस॥ कुत्सित उदर दरी म
धिपेसे॥ कुरवनु कीतो संतत मात्र॥ पांडव
नुकी भक्त कौ पात्र॥४४॥ सो मेरो यह अंग
सुहायो॥ भसम भयो पुनि फेरि जिवायो
ताके चरित अम्रत मे सवे॥ हे सबदेउ सुना
वो अबे॥४५॥ तुम करि वि संकर्षण अर्ने॥
प्रथम ही कह्यो देवकी गर्भ॥ वु हरि जु ता
हि रोहनी जने॥ देहांतर विनु के सवने॥४६
अरु ईश्वर भगवान मुकुंद॥ परमानंद कं
द स्वछंद॥ ते काहे ते पिता गेह ते॥ ब्रज आ
ये तेको न नेह ते॥४७॥ ब्रज बसि कवन कव
न पुनि कर्म॥ कीने पर्म धर्म के वर्म॥ पुनि म
धपुरी आइ ब्रजचंद॥ बरषे कवन कवन
आनंद॥४८॥ अरु साछात मात को [illegible]ता

सो वह कंस हत्यो किहि वाता ॥ किति क वरष
द्वारावती बसे ॥ किति क ललित लल ना मेल
से ॥ ४९ ॥ जद्दपि तज्यो है मैं जल अन्न ॥ तद
पि न ह्वै है मो तन षिन्न ॥ तुव मुष कमल ह
रि चरित सार ॥ चलि है परम अम्रत की धा
र ॥ ५० ॥ पान करत अस रस अनयास ॥ का
कें छुधा कों न कें प्यास ॥ तब बोले श्री सुक
गुन नेरे ॥ राजा पर अतिशय रस ढेरे ॥ ५१ ॥
कह्यो कि धन्य धन्य नृपसत्तम ॥ नीकें करि
निश्चत मति उत्तम ॥ जाते कृष्ण कथा रस
मई ॥ ताते उपजत अति रति नई ॥ ५२ ॥ पैं कृ ष्ण गु
ष्ण कथा की जहा ॥ श्रोता वक्ता पृछक तहा
पावन करत सबनि कों ऐसें ॥ गंगाजल धा
रा जग जैसें ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ निगम कलपतरु को
सुफलु वीजन वकुला जाहि ॥ सुक मुष पु

निपरस्योमरसरसिकपिवक्कुकिनताहि॥
॥५४॥दोहा॥नृपरूपकेअसुरविकारी॥की
नीजवभूभारकरिभारी॥तबयहगाइरू
पधरिधरती॥क्रंदनकरतीअसुवनभरती
॥५५॥विधिसोजाइकहीसबबात॥सुनि
कलमल्योकमलकोतात॥अमरनिकरि
शंकरसंगलए॥तीरछीरसागरकेगए॥५६॥
देवदेवपुरुषोत्मजहां॥स्तुतिकरिबिनती
कीनीतहां॥गगनमेंभईदेवकीधुनी॥सो
ब्रह्मासमाधिमेंसुनी॥५७॥सुनिकेबोल्यो
अंबुजतात॥सुनहुअमरगनमोतेबात
आग्याभईविलंबनकरो॥जदुकुलबिषै
जाइअवतरो॥५८॥तहांबसुदेवनांउअ
भिराम॥व्रजदिहैश्रीहरिजाकेधाम॥सस
सहससुषसबसुषदाता॥ह्वैहैंपुत्रसुकेअ

गुजख्याता ॥ ५७ ॥ औरजोगमायागुनमई ताहूकोंप्रभुआज्ञादई ॥ इहिविधिविधि विबुधनसोंकही ॥ पुनिआस्वसितकीनी मही ॥ ६० ॥ मथुराजादवकीरजधानी ॥ श्री गोविंदचंदकीमानी ॥ जहांलगिहैंब्रह्मा डअनेक ॥ अंसनिकरिनिसतेंएक ॥ ६१ ॥ हरि
जिहिंब्रह्मांडमधपुरीलसै ॥ पूरनकृस्नचंद तहांबसै ॥ सम्यकशास्त्रदिष्टजेलहें ॥ आत महेप्रकारतेकहें ॥ ६२ ॥ एकजीवएकभक्ता तमा ॥ जोनितपाइपलोटतरमा ॥ जबहरि लीलाइछाकरें ॥ भक्तातमाप्रथमअवतरें ॥ ६३ ॥ तिनकेप्रभुकोपरिकरजितो ॥ प्रगट होतलीलाहिततितो ॥ तबश्रीकृस्नअव तरेंआइ ॥ पूरनकरहिभक्तकेभाइ ॥ ६४ ॥ सूरसेनजहांजादवनाम ॥ परमभागवतस

बगुनधाम॥ ताकेसुतबसुदेवअनूप॥ प्रगटे
केवलनिगमसरूप॥ ६५॥ जाकोजन्मसुन
तसुरहरषे॥ दुंदुभिबजेपहुपनिबरषे॥ देव
कजादेवकेइककंन्या॥ जिहिअसजनीज
ननीसोधंन्या॥ ६६॥ सर्वदेवमयसबगुनभ
री॥ आनब्रह्माविद्याअवतरी॥ स्यामबरन
तनअसकछुसोहे॥ इंद्रनीलमनिकीछ
बिकोहे॥ ६७॥ जनककनकआगनमेंषेल
ति॥ कोटिकोटिछबिपाइनिंपलति॥ बोल
तिहसतिहरतिऽमहियो॥ जनुबिधिपुत
रीमेंजियदियो॥ ६८॥ व्याहनजोगजानिरंग
भीनी॥ सोदेवकीबसुदेवहिदीनी॥ भयोबि
वाहपरमरंगभीनो॥ देवकबहुतदाइजोदी
नो॥ ६९॥ षटशतरथकंचनकेनरा॥ गजशत
चारिमतछबिछरा॥ पइहशतसुसुभगकिं

क्यानि॥ कनकढरेनगजरेपलानि॥७०॥ बर
वरनीतरुनीरंगभीनी॥ हासीबीनितीनि
शतद्दानी॥ नईबरातबिदाह्वैसजे॥ भेरी
मंदलकंद्दलबजे॥७१॥ उग्रसेनदेवकको
त्राता॥ ताकोपूतकंसबिष्याता॥ भीनोन
वकुंकुमकेरंग॥ कंचनरथअनेकजिहि
संग॥७२॥ भगनीरथकोसारथीभयो॥ प्री
तिबिबसहरलोंगयो॥ बानीभईगगन
मेंगूढ॥ रेरेकंसमहामतिमूढ॥७३॥ जाको
तूंभयोजातुहेजंता॥ आठवोंगर्भसुतेरो
हंता॥ सुनतहीपापरूपवहकंस॥ धाइदे
वकीगहीन्रसंस॥७४॥ हुलहनिवरनबि
मेंमसलहरो॥ जेतुबिधआनिबिधंतुदग
ह्यो॥ कादिषरगमारनकोलयो॥ आनक
दुंदुभितबतहांगयो॥७५॥ महाराजजिन

८

करिअसकाज॥ जाकाजतेहोइजगलाज
नगिनीबालाअरुयहसमें॥ तबउनागग
नकरिअसअमैं॥७६॥ जोतकहैमरनम
यमारी॥ होइआपनीकरोरषवारी॥ तोवह
ग मरननहिंहैजाइ॥ विधिनालिष्योलिला
रवनाइ॥७७॥ अबहिमरोकिवरषसत
बीते॥ छुटेनकोऊकालबलीते॥ तातेपा
पाचरननकरियै॥ रंचकसुषबहुरोंदुष
भरियै॥७८॥ नहीतबहूरजबहिनरमरै
तवहीऔरदेहकोधरै॥ ज्योंतृणजोकव
गानिअनुसरै॥ आगोगहिपछलेपरहरै॥
॥७९॥ जैसेकर्मविवसयहजंत॥ देहधरन
दुषभारनअनंत॥ इनबातियनिसुकंस
क्यौंमानैं॥ असुरग्यानपरतषषुवानैं॥८०॥
तबवसुदेवदयादिषरावै॥ सामवचनक

हिकहिसमझावै ॥ यहतेरीअनुजावरवाला
पुतरीसीबिधिरचीरसाला ॥ ८१ ॥ नकरिअ
मंगलमंगलकाल ॥ जातेंतबडहीनदयाल
तदपिनताकेंरंचकव्यापी ॥ कैवलपापीम
हासुरापी ॥ ८२ ॥ दोहरा ॥ निकटबिकटसं
गमअगमजिमदर्पनमेंछाह ॥ जदपिरहत
आगैतदपिमिलेनभरिभरिबाह ॥ ८३ ॥ चौ
पई ॥ निपटहीताकौनिग्रहजान्यो ॥ तबबसुदे
वअवरमतुठान्यो ॥ नीचहिसुतअरपिबोहि
ठाकु ॥ मीचकेमुषतेयाहिछुडाकु ॥ ८४ ॥ जब
मेरेउपजेंगेतात ॥ धाताकीअनंतहैबात ॥ जौ
वननगरअजिनिपरजेरें ॥ ढिगकेरहेंदूरकेज
रें ॥ ८५ ॥ तबवसुदेवविहसिकैकहो ॥ हेराज
नरंचकडतचहो ॥ डरतौतोहिआठयेगरभ
को ॥ नहीयाकोनहीअवरअरभको ॥ ८६ ॥

५

होतोहिदेहोसिगरेतात ॥ छुयेकहतयह
तेरोगात ॥ करीवृतातितवैवसुदेवकी ॥ छा
डिदईहसिकैसुदेवकी ॥ ८७ ॥ प्रथमकीर्ति
मंतसुतभयो ॥ बसुदेवताहिलयेहीगयो
सतवृत्यज्ञत्रन्द तनेडस्यो ॥ सुतपालनला
लनपरिहस्यो ॥ ८८ ॥ अतिसुंदरबिलोकि
केवाल ॥ कंसभयोतिहिकालदयाल ॥ घर
लैजाकुदेवइहिअरभै ॥ दीजोमोहिआठ
योगरभै ॥ ८९ ॥ चल्योसदनपैबदनउदा
स ॥ नीचनिकोकछुनाहिबिस्वास ॥ बसुदे
वघरलेजाननपायो ॥ नारदसबहिकंसपै
आयो ॥ ९० ॥ कंसकेसांतिहोइजोअबै
देवकाजतोबिगस्योसबै ॥ आइकहीता
सोंसबबाते ॥ अहोकंसकछुजानतघातै
॥ ९१ ॥ बसुदेवादिकजादवजिते ॥ गोपीकुल

मेंनंदाहिकतिते एतोसबैदेवताआहि राज
नरंचकजिनपतयाहि कहिहैगयोब
चनइहिविधिको परघरघालकबालकबि
धिको तबहीकहमिसुफेरिमगायो बसुदे
वताहिलयेंहीआयो डास्योपटकिन
उपजीमया असुरन्नपतितिनकैकहाद
या पहिलेकालनेमिहोंकृतो बिसुसदा
कोबैरीसुतो देवकीबिषैंअवसिअ
वतरिहैं मेरवधकोउद्यमकरिहैं अवके
औसेंजतननिजतों बिसुहिगर्भवीचही
हतों तबबसुदेवदेवकीआन पाइ
निसुद्दिटसंषलाबान राषनिकटबिकट
असठोर कोउजहांजाननपावेऔर
जोईजोईवालकउपजतजात सोसोह
तेनपूछेवात बिसुजनमकीसंकारहे म

तऊनहींमैंतेमोहिगहे॥८५॥ उग्रसेनअपनो
महतारो॥ सोबांध्योदीनोदुषभारो॥ महाब
लीअरुमहाउद्दंस॥ राजाभयोमथुपुरीकं
स॥८६॥दोहरा॥ नंदजथ्यामतिकेतथ्यावर
न्योद्वयमअध्याइ॥ जाकेरंचकसुनतसब
करमकसाइ नसाइ॥८७॥इतिश्रीदश
मस्कंदेमहापुराणेकृष्णदीपिकायांनंददास
कृतभाषायांद्वयमोध्याइ॥२॥चौपई॥ अब
सुनिलेतृतियअध्याइ॥ जामेंब्रह्मादिक
सबआइ॥ गर्भस्तुतिकरिहैंसिरनाइ॥ चर
नकमलवेभवदिषराइ॥१॥ जेतेनीचबुरेई
बुरे॥ तेसबआनकंसपेजुरे॥ अघवकबकी
प्रलंबअरिष्ट॥ तृणावर्त्तषरकेसीनष्ट॥२॥
मागधजरासंधमदअंध॥ तासोंयाहिसुसुर
संबध॥ जादवनुकोंदेनदुषलागे॥ तजितजि

देसविदेसनिभोग॥३॥कितकरहेताहीउ
रगाने॥अक्रूरादिकअनमनमाने॥देवकी
केजबषटसिसुकंस॥हतेमहाबलपरम
नृसंस॥४॥सप्तमकुक्षकलाअभिराम॥
आएसंकर्षनबलराम॥ताकरिदेवकीअ
तिनप्रकासी॥हरषशोकदुहुबनिआना
सी॥५॥जैसेंप्रातकमलकीकली॥कछुफू
लीकछुनाहिनफूली॥जदुकुलकोदुष
हिपिभगवान॥आतुरभयेजानमनजा
न॥६॥बोलिजोगमायामनहरनी॥तासोंप्र
भुबातेंसबबरनी॥हेमेंडेबडभागिनिमहा
भागमहिमतुवकहियेकहा॥७॥जातेंतुअ
बगोकुलजाहि॥परमअलौकिककौतुकचा
हि॥आहिजगतयहरचनातेरी॥वहसंपति
इकन्यारीयोमेरी॥८॥गोपीगोपनिकरिअ

तिमंडित॥जामेनित्यानंदअखंडित॥राजत
गोपराजजहांनंद॥मूरतिधरेसुपरमानंद॥
॥९॥ताकेघरवसुदेवकीघरनी॥दुरीरहति
रोहनीवरवरनी॥देवकीजठरगरभजोआ
हि॥रोहिनीउदरताहिलैजाहि॥१०॥गरभ
मरनसंकाजिनकरै॥मेरीकलानकवहूंम
रै॥तदनंतरजिहिजठरअनूप॥ऐहेंहमप
रपूरणरूप॥११॥व्हैहैंतुवितेरैवहुनाम॥
पूरनकरिहैंसवकेकाम॥भवाभवानीमृडा
मृडानी॥कालीकात्यायनीहिमानी॥१२॥
ऐसेप्रभुकीआज्ञापाइ॥मायातुरतमही
तलआइ॥रोहिनीविषैदेवकीगर्भ॥आ
न्योकरषतवहिवहअर्भ॥१३॥नगरमेंवग
रवगारव्हैगयो॥देवकीगर्भविस्रंसितभयो
तवईश्वरसवअंसनिभरे॥आनकदुंदुभ

मनसंचरै ॥१४॥ वसुदेवतिहिछिनअतिशय
सोहै ॥ ज्ञानसमानपरतनहीजोहै ॥ मनही
करिदेवकीमेंधरै ॥ नकछूधातसंबंधहिररै ॥
॥१५॥ ज्योंगुरुस्निग्धसिष्यकेहेत ॥ हृदगति
वस्तुदयाकरिदेत ॥ उरधरहरिदेवकीअति
सोही ॥ अपनेरूपआपहीमोही ॥१६॥ औप
रघरहीघरआभासी ॥ वाहिरनहिनतनक
परकासी ॥ जैसेंघटमेंदीपकजोति ॥ भीतरज
गमगजगमगहोति ॥१७॥ अरुजिमवंचक
मेंसरस्वती ॥ परउपकारकरतनहीरती ॥ औ
सेंजगमगातिहीजहां ॥ आयोकंसपापमति
तहां ॥१८॥ कहतकिमेरोहंताजोई ॥ अवके
निश्चेआयोसोई ॥ जातेंपाछेंकुतीनऔसी
महानिर्धूमअग्निहोइजैसी ॥१९॥ कोउद्य
मकीजेइहिकाल ॥ खसागुर्वेनीवकुरोवाल

१२

याकोवधनअयकोंकरै॥ आयुकीर्तिसंपति
सबहरै॥२०॥ त्यांसबकोऊधिगधिगकरै॥ म
रैबहुरिरौरवमेंपरै॥ इहिप्रकारविचारहि
आइ॥ फिरिगयोघरपैकछुनबसाइ॥२१॥
निशिदिनजनमउतीछाकरै॥ थरथररह
रैनींदनहींपरै॥ बैठतउठतचलतचकिर
हे॥ मतइतहीतेउठिहरिगहे॥२२॥ अंब
रफारसेजपरसोवै॥ भोजनकरतसीतटक
टोवै॥ बैरभावजियअसबढगयो॥ सबज
गजाहिविस्नुमयभयो॥२३॥ तदनंतरब्रज
संकरनारद॥ अवरअमरबरमुनिबरसारद
दरसनहितआयेअरबेरै॥ अतिमुदमनरोम
चेभरे॥२४॥ जाकेजठरमध्यजगसवै॥ सो
देवकीउदरमधिआवै॥ देवकीहियमधिफल
कतऐसे॥ रतनमजूषामेंनगजैसे॥२५॥ कति

दंडवतमहामुदमेरे॥ एकहीबारसबपाइनि
परे पुनिपुनिउठिपाइनिलटपटे॥ कीटनिके
जुत्र्प्रगुकटपटे॥२६॥ वनीमुकटरतननिकी
जोति॥ तुश्रीहरिकोत्र्प्रारतीहोति॥ गदगद ज ५
कंठमहामुदमेरे॥ अंजुलिजोरस्तुतिअनु
सेरे॥२७॥ कहतकिअहोसत्यसंकल्प॥ स
बविधिसत्यनित्यबडकल्प॥ तुमहिंप्रपन्नभ
एहमसबै॥ रछ्याकरोहमारीअबै॥२८॥ जो
कहोकितुमहूसबलाइक॥ जगनाइकअ
रुसबफलदाइक॥ क्योंलिलातसेवोलतवे
न॥ तहांतुमसुनहुकमलदलनेंन॥२९॥ तु
मपरमेश्वरसबकेनाथ॥ विस्वसमसततु
म्हारेहाथ॥ छिनकमेंकरो भरोसंहरो॥ ऊनें
नामनलोंपुनिविस्तरो॥३०॥ तुमतेहमसबउ
पजतऐसें॥ अग्नितेविस्फुलिंगगणजेसे॥

एअहुतअवतारजुलेत ॥ बिस्वहिप्रतिपाल
नकेहेत ॥३१॥ दिनदिनजोदिनमनिनउगा
इ ॥ तोसवअंधधंधहैजाइ ॥ अरुअपनेभ
गतनिकोहेत ॥ हुलनमुक्तिसुलभकरिहे
त ॥३२॥ तुवपदपंकजनौकाकरिकै ॥ पारप
रेंभवसागरतरिकै ॥ जोकहोकिवहनावसु
दार ॥ मुकतिभएसुगएलेपार ॥३३॥ वाररहे
तिनकीगतिकैसे ॥ तहांकहतब्रह्मादिक
ऐसें ॥ तुवपदपंकजसंनिधिमात्र ॥ तवही
भएमुक्तकेपात्र ॥३४॥ तिनकोंभवसाग
रभयोऐसें ॥ गोवच्छपदकोपानीजैसें ॥ तु
वपदपंकजसुंदरनाउ ॥ इतहीछाउगएभ
रिभाउ ॥३५॥ जैसेंइतरतरहिभवसिंधु ॥
परमसुहृदह्वैसवकेबंधु ॥ जेविमुक्तमानीम
दभरे ॥ तुवपदकमलअनादरकरे ॥३६॥ ते

ऊंचेचढिचढिघरहरे॥धमकधमकनरकनि
मेंपरें॥जिनकरचरनकमलआदरे॥तेवक
बकुअघुटनहीपरे॥३७॥तिहिविधितुमसें
बांध्योनेह॥जैसेमूढकुटंबीगेह॥जगमेंजे
विषनिनिकेराइ॥तिनकेसिरपरधरधरपा
इ॥३८॥विहरतनिर्भयमकतुम्हारे॥तुम
सेप्रभुजिनकेरषवारे॥तेवसुंदरचरनसरो
ज॥याअवनीपरपरिहेंषोज॥३९॥तेहम
ढोरढोरदेषिहें॥जीवनजनमुसफललेषि
हें॥तबदेवकीआस्वासितकरी॥तुमसीको
हेभागनिभरी॥४०॥जाकीकुक्षिविषेंभग
वान॥ज्योंसाछ्यातपुराणपुमान॥आख्योरछ
कजदुवंसको॥ध्वंसकअसुरवंसकंसको
॥४१॥पुनिवंदनकरिकेजदुचंद॥चलेघरनि
वृंदारकवृंद॥दोहरा॥गर्भस्तुतिहरिअर्भकी

मुनेजुहुतियध्याइ॥सोनपरेखुनिगर्भम
लनंदनिर्मलव्हेजाइ॥४॥इतिश्रीदशमस्
कंधेमहापुरानेकृष्णदीपिकायांनंददासकृ
तभाषायांदुतियध्याइ॥२॥चौपइ॥अब
सुनिमित्रत्रितियध्याइ॥प्रगटेहेहरिपूरण
माइ॥तातमातसोंवातवनाइ॥वरषहेसुष
निजव्रजमेंआइ॥१॥प्रथमप्रगटनयोसोम
नकाल॥सवगुनवलितसुनित्यरसाल॥अति
सोहनरोहनीनछित्र॥जाकेसबग्रहव्हेंग
णमित्र॥२॥जोग्रहमित्रनताकेरहें॥जगत
मध्यतवकाकेकहें॥ठांठांमंगलपूरनमही
कितियकनदीहृधद्यतवही॥३॥सबकेम
नप्रसन्नभएऐसें॥निधनमहाधनपायेजै
सें॥भाहेसलिलस्वछअसभरा॥जैसेंमुनि
मननिर्मलनरा॥४॥दिशाप्रसन्नसकोछवि

गनो दिसदिसचंद उगे हे मनो कुसमित
वनराजी अरु राजी असी नहि नवसंत
विराजी ॥५॥ बुरे अगिनि आपही वर उ
ठे हसि हसि मिले जु ते जे रुठे विनरी
सर्मे कमल कुल फूली। तिन पर लंपट अ
लि कुल फूले ॥६॥ मंद सुगंध पवन अस
वहे लै सुवास त्रिभुवन चकि रहे सिंध
सिंध प्रति अंबु हगर जे धर्म के मनो दमा
में बजे ॥७॥ हरषे सुनिवर अमर पुरंदर
वरषे सुमन सुंदर सुंदर गगन में अगनि नि
त बजें दुंदुभी दुर्जन मन कंटक सी चुभी
॥८॥ नित्ति अमरन टी छविजटी लट
कति मनो छुटनि की छुटी सुंदर अधर
यन जवगई रस सिंगार मई छवि छई
॥९॥ तब देव की तप्र गटे असे पूरव ते

रणासमिजेसे ॥ पूरवजठरमधिनहीकछु
चेदा ॥ नावमाञ्चञसदेवकीनंदा ॥१०॥ व
सुदेवअद्भुतवालकदेषि चकितभयो
चितनिपटविसेषि माथेमनिमयमुक
टसुदेस ॥ सचिकनसुंदरघुघरेकेस ॥११॥
कुंडलमडितगंडसुलोल ॥ मंदहसनिमि
लिकरतकलोल ॥ कंचनमालमुकतनि
कीमाल ॥ झलमलातछविछतीविसा
ल ॥१२॥ वड्डेलोइनअसकछुलोने ॥ पा
छेभएनआगेहोने ॥ सुंदरकंठसुकोस्तुभ
लसे ॥ निकरविभाकरद्युतिकोहसे ॥१३॥
गंधलुवधजेअहुनभृंग ॥ तेआएवनमा
लासंग ॥ छविवावरीसावरीवाहु ॥ मेटत
वसुदेवहियकोदाहु ॥१४॥ कटिकिंकिनि
चरननिमनिनूपुर ॥ होबलिबलिकीनानि

नऊपर॥सुंदरबरपीतांबरधरें॥संषचक्रआ
युधकरकरें॥१५॥बसुदेवआपनेमनमनगु
नें॥असेबालकहोतनसुनें॥पुनिकीनोंप्र
तिसारबिचार॥मेरेघरईश्वरअवतार॥१६
कह्योजुतोसोभयोहेअबै॥पूरनमनोरथ
मेरसबै॥वढ्योजुआनंदसिंधसुहायो॥ता
हीमेवसुदेवअन्हायो॥१७॥हरषसहआगा
येरंगभीनी॥मनहीकरिसंकल्पितकीनी
सुद्धबुद्धवत्सलरसभस्यो॥अंजुलिजोरअ
स्तुतिअनुसस्यो॥१८॥वक्रुतस्तुतिकरी
हरिदेवकी॥जहांलगिहीबुद्धवसुदेवकी॥
पुनिकहीहोईश्वरअभिराम॥अवजुप्रग
टनेरमेरेधाम॥१९॥कहतकिहोप्रभुमेंवु
मजानें प्रकृतितेपरेजुपुरुषवषानें जा
कोंमुनिसमाधिमधिहेरें सोसाक्षातदृष्टि

पथमेरें॥ होउमनुअवतुरुइहांअवतरे॥ ब्रह्मा
दिककरिप्रार्थितकरे॥२०॥ न्रपछलकरिव
देअसुरविकारी॥ कीनीहेधरनरकरिभारी
तिनहिनिदरहो न्रुभैहरिहो॥ संतनकोरष
वारीकरिहो॥२१॥ अेपरसावधानइहिवी
च॥ निपटहीबुरोकंसहेनीच॥ तुम्हरेजेन
महिसुनिकेअवे॥ अेहैलीनेंआयुधसवे॥
॥२२॥ श्रीदेवकाजीकीअस्तुति॥ तदनंतर
देवकीअवहेरे॥ महापुरुषलछनसुतके
रे॥ कंसतेसकुचतमृदुमुसकाइ॥ कीनी
स्तुतियोरीयोवनाइ॥२३॥ ब्रह्मजोति
गुनअविकार॥ सत्तामात्रजगतआधार
अरुअध्यातमदीपजुकोई॥ बुध्यादिक
परकासकजोई॥२४॥ सोसाक्षातत्वस्त
वुमआहि॥ नयसांकाहांकहियेकाहि

जवयहबिस्वचराचरजितो लीनहोतमाया
मेंतितो ॥२५॥ तववतुमहीतहांरहतअकेले
हेमधामनिजरसमेंझेले सोयहवुम्हरोअद्भु
तरूप ध्येयवस्तुनिपटहीअनूप ॥२६॥ याछ
विकीमोहिलगोबलाइ चरमचषनवलिजि
नदिषराइ रूपअलौकिकउपसंहरो हेसुंद
रवरनरवपुधरो ॥२७॥ जोकहोकिमोसोसुत
पाई पेहोजगमेंवडीवडाई तरुतुमसुनोक
मलनेंन याअनूपरूपसोंवनेंन ॥२८॥ जाकेज २ल
ठरमध्यजगजितो जथावकासरहतहेतितो
सोममगर्भभूतजोसुनिहे हसिहेंमोहिअसं
भोमनिहे ॥२९॥ अरुप्रभुमोतेजन्मतुम्हारो
जिनजानोंयहकंसहत्यारो तववोलेश्रीहरिमु
सकात तुमजोयाकंसतेडरात ॥३०॥ तोमोहि
उहिगोकुलनंदकेके लेरापोआनंदकंदके ३त

नीकहिकैमोहनलाल ह्वैगएतवहितनकसे
वाल॥३१॥धाइदेवकीकंठलगाए आनतेआंधि
कपियारेपाए वसुदेवकहेविलंवनलाइ दैमो
हिसिसुरिपुजैहेआइ॥३२॥लैलदिरहीदृगनि
जलनाइ अतिसुंदरसुतदयोनजाइ पुनिकं
सतेमहाडरडरी पिछलेपूतनकीसुधिकरी
॥३३॥लीनोतनकपयोधरप्याइ फूलसोमत
मगमेंकुल्हिलाइ पुनिपुनिवदनचंद्रमाहमि
दीनोसुतपैअतिदुषघमि॥३४॥वसुदेवलैच
लेतिहिकाल अपनोंअद्भुतमोहनवाल आ
पहीउघरेकुटिलकिवार ज्योंरविउदैभजत
परे अंधियार॥३५॥पोरिनैंपहरुवाऔसें अतिमा
दकमधपीयेजैसे आनंदभरिअंवुदघिरिआ
ए फुईफूलबरषतेसुहाए॥३६॥तेसहिसको
नसेवकसेस करिलयोफननिकोछत्रसुदेस

आगेंजमुनासुधिनहीपरे॥ वढीगगनसोंवातेंक
रे॥ ३७॥ दृष्टिपरेहरिमोहनजवही मध्यतेइत
उतह्वैगईतवही हीनोमगुरवितनयाऐसे
सीतापतिकोंसागरूजेसें॥ ३८॥ इतसोचतदेव
कीमहतारी ह्वैहैमेरोललनदुषारी भरिभा
दोंकीरेनिअंध्यारी लहलहातविजुरीवजमा
री॥ ३९॥ वह्कुस्योंवीचकलिंदीकारी॥ भरिरही
नीरभयानकभारी॥ चंदैंवदनडस्योनहीरहि सो
है॥ देयाकोऊहरिमिलहिहै॥ ४०॥ फिरतहेंवुह
तकंसकेदूत॥ दईकुमारसोंजैहेपूत॥ योंविल
लाइदेवकीमाइ॥ कहतकिहोहरितुमहीस
हाइ॥ ४१॥ देष्योजदपिद्भुतपरभाव॥ तपदिंको प्रेम
यहसुभाव॥ आनकदुंदुभगोकुलगए॥ देषेस
वनिद्रावसेभए॥ ४२॥ सुंदरनंदभवनजोजा
परमानंदरह्योहेछाइ वेनेजुपरिककन

ककेअैना ॥ मानोंनंदमदनकेनेना ॥४३॥ वसु
देवतिनहिनिरषिसकुचाने ॥ हेरेंहेरेंहारापहि
चाने ॥ जसुमतिकादिगसुतपोढाइ ॥ परीसुता
इकतहातेपाइ ॥४४॥ लेआराघरतेहीवाट ॥
जुरतेसेईकुटिलकपाट ॥ बैठेवुहरिपहरिपग
बेरी ॥ ज्योंकोऊगाडिधरनिधनटेरी ॥४५॥ दोहा
॥ इहित्रतियअध्याइकाकथाजथामतिनंद
वरनीसुभकरनीसदाहरनीकलिमलदंद ॥४६
इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधेएकादशी
पिकायांनंददासकृतभाषायांत्रतियोध्याइ ॥३॥
अवचतुर्थअध्याइसुनिमित्र ॥ जामेंचंडीवचन
बिचित्र ॥ सुनिकेकंसमहाडरडरिहे ॥ उठिकेप्रा
तवातविस्तरिहे ॥१॥ वालकधुनिसुनिपराजुरी
र ॥ जगेपहरुवाठोरहीठोर ॥ धाराग एकंसकेऔ
ना ॥ अठवोगरभमहाभयदेना ॥२॥ सुनतहाउ

छ्रोतलपतेकंस॥ कहतकिआयोकालन्हसं
स॥ करकरवारसु बगरेवार॥ नकछुसभार
महाबिकरार॥३॥ अपुरतपरतसुबिहवल
भयो॥ डरतडरतसूतीग्रहगयो॥ बोलिउठी
देवकीछबि मई॥ मैयानडरभनैजीमई॥
॥४॥ याहिनमारिहैपिहिसिमेरी॥ हौंअनुजा
मनुजाधिपतेरी॥ डारिहैतेहतबकुतेरे॥ पा
वककीउपमासिसुमेरे॥५॥ याहइकमोको
मागीदीजे॥ बलिबलिअतिअनीतनहीकी
जै॥ नीचनिकैकासोंहदभाउ॥ तामेंयहनी
चनिकौराउ॥६॥ चपरिछुतीसोंलईछिडा
इ॥ पकरिपांउऊंचेउचकाइ॥ सिलपरपटक
निकौभयोजबै॥ करतेनिकसिगईसोतबै॥
॥७॥ जाइगगनमेंदेवीहुइकै॥ बोलीवचन
कंसहियहुइकै॥ रेरेमंदकछूनविचारतू॥
हमसीरूपननिकतकहुमारत॥८॥ उपजो

हेतुवमारनहारो ॥ औरेनऽजिनकरिजिय
गारो ॥ ताकेबचनसुनतहीकंस ॥ निपटहीड
र्योपर्योजियसंस ॥ ९ ॥ कहतकिदेवीबानी
महा ॥ झूठपरीसोकारनकहा ॥ जिहिविसवा
ससबसाकेतात ॥ सौनकज्योंमेकीनेघात ॥ १०
देवकीवसुदेवदीनेछोर ॥ विनतीकरतकंस
करजोर ॥ अहोभगनीभगनीभरता ॥ मोस
मनहीकोऊपापकोकरता ॥ ११ ॥ राछिसज्यों
मे अपनेसिसुषाइ ॥ सौंकीनोंनीचसुभाइ ॥ ज्यों
ब्रह्महाजीयतहीमर्यो ॥ तैसोहोंहूंविधना
कर्यो ॥ १२ ॥ नरतोजनोंअनतहीपगे ॥ अम
रोअनतबकनपुनिलगे ॥ सोचनकरोसिम
निकेराग ॥ जातेतुमसमुझतवडभाग ॥ १३
निजप्रारब्धकर्मकरिवोरे ॥ रहतनजेतसदा
इकठौरे ॥ तजहुसोकदारुनदुषमई ॥ कर्मवे
वसजुभईसोभई ॥ १४ ॥ छमाकरोमेरोअपरा

ध॥ जातेदीनवंधकतुमसाध॥ ऐसेंकहिलोचन
जलढर्यो॥ दोरिवहनिकेपाइनिपर्यो॥१५॥ श्या
तभयोदेवकीकोरोष॥ वसुदेवहूकीनोपुनि
तोष॥ सोरठा॥ वुरोकरेजोकोइ॥ साधनतऊमा
नेंबुरो॥ षरोउजेरोहोइ॥ छारलगायेंमुकुरजिम
॥१६॥ आप्पापाइजाइघरकंस॥ कन्यावचनप
रीसुनिसंस॥ रजनीगयेंभयोपरभात॥ मित्रनि
वोलिकहीसववात॥१७॥ सुनिनृपवचनअसु
रभिहराने॥ अमरनिपरनिपटहीरिसाने॥ कह
नलगेजोऐसेंआही॥ राजनरंचकडरकुनका
ही॥१८॥ हमदसदिनकेवाल कजिते॥ हमस
वमारिडारिहेंतिते॥ कोउद्यमकरिहेंसवदेव
हमतोनीकेंजानतभेव॥१९॥ अनैठोरतोवला
नुकरें॥ भीरपरेतेघरघरडरें॥ सुरपतिकोनअल
पवलताहि॥ वूह्मावपुरोतपसीआहि॥२०॥ शं
भनकछूतियनितवुस्यो रहतइलाहूतवन

मेंडुस्यो॥ विस्नुकछुएकांतहिपस्यो हेराजन
तेरेंडरडस्यो॥२१॥ औपरअरिअल्पनजानियें
मर्मद्रुमदवकुतेमानियें॥ कितकहोतवहकं
टकजैसें चरनमाऊषटकतहेंकेसें॥२२॥ अ
रुज्योंअंगरोगअंकुरे॥ तवहीजोनजतनअ
नुसरे॥ तोवढिजाइनकछुवसाइ॥ तातेंकीजे
तुरतउपाइ॥२३॥ प्रथमहीउत्तममतियहक
धरि रो॥ धरिंरूपधरनिसंचरो॥ गाइनिमारोमषनि
बिगारो॥ रिषनिकोपकरिमषनहीडारो॥२४॥
विस्नुकेंवधिकोयहेउपाइ॥ हतियेंबेदविप्र
अरुगाइ॥ मंत्रनिमिलिजबयहमतुठान्यो॥
दुर्मतिकंसमहाहितमान्यो॥२५॥ संतनुको
बिद्वेषजुआहि॥ म्रत्युमात्रजिनजानहुताहि
आयुकीर्तिसंपतिसवहरे॥ अवरुवहुतअ
नर्थकछुकरे॥२६॥ दोहरा॥ नंदकहतहेमित्र
तेसुन्योचतुर्थअध्याइ॥ वुरोहोनकोहोइ

जवतवउपजैराभाइ ॥४४॥ इतिश्रीभागव
तेमहापुराणेदशमस्कंधेकृष्णदीपिकायां
नंददासकृतभाषायांत्रयोदशोध्यायः ॥१३॥ चौ
पई ॥ अवसुनिलैपंचमअध्याइ ॥ सवप्रप
चवंचतैजाइ ॥ नंदमहरघरसुतजवजायौ है
सुनिकैंसवनिप्रानसोपायौ ॥१॥ नंदपरम
आनंदसुभरे ॥ डहडहेनैननिराजितघरे
ज्योंसुतउदयपयोनिधिपेषि ॥ वढतहैरंग
तरंगविसेषि ॥२॥ वोलेव्रजकेद्विजवड
भागी ॥ जिनकेंकृतीयहेलोलागी ॥ स्वछे
सलिलअन्हवाए ॥ विप्रनिचंदनतिलक सुगं
वनाए ॥३॥ नंदकेभूषनदिषमनुभूल्यो ॥
जनुआनंदमहीरुहफूल्यो ॥ विधिवतजा
तकर्मकरवाइ ॥ लागेदानदेनव्रजराइ ॥
॥४॥ दैलविधेनसवछवछरुदूधी ॥ षपेम

प्रसूतासुंदरसुधी ॥ कंचनभृंगमटीसोहनी
॥ कंचनकीवडडीसोहनी ॥ ५ ॥ तिलअरुम
कतारतनमिलाइ कीनेसवशयलनंदरा
इ ॥ नवकंचनकेछादनछाइ ॥ दीनेवूजके
द्विजनिवुलाइ ॥ ६ ॥ अवरवड्डतदीनोंवु
जराज ॥ अपनेपूतउदैकेकाज ॥ जाचकज
नपरिपूरनभये ॥ हारिदलेकेदारिदगये
॥ ७ ॥ तिहिछिननंदसदनकीसोभा ॥ न
हिकहिपरतलगतजियलोभा ॥ आनंद
घनजिमडुंडुभिवजे ॥ जिनसुनिसकलअ
मंगलभजे ॥ ८ ॥ इतजुवेदधनिकीछविव
टी ॥ मंगलवेलिसीत्रिभुवनचढी ॥ फनि
सुनिगोपमहामुदभरे ॥ चलेमहरघररंगि
नुररे ॥ ९ ॥ पहिरहेंवेअंवरसुंदर ॥ जेकवहूं
निरषेनपुरंदर ॥ मंगलभेटकरनमेंलिये

मेनसेलरिकनिआगेंकिये ॥२०॥ तापाछें
गोपिनसुनिपायो ॥ महरिजसोमतिढोटा
जायो ॥ मुदितवचनचलीभांतिनिभली ॥ फू
लीजनुनवकंचनकली ॥२१॥ तापाछेंगो
पींगानचली ॥ आनंदरलीसुलागतभली
कुंकुमरससरंजितमुषसोहे ॥ कनककमल
तिनआगेंकोहे ॥२२॥ गंडनिमनिकुंडल
झलमले ॥ वेगिचलनकछु जनुकलमले
अंजनजुतलोचनछविवढे ॥ षंजनजनुकु
मुदनिपरचढे ॥२३॥ हाथनिथारलसतअ
तिभले ॥ मनुकमलनिमयंकचढिचले ॥
चंचलगतिउपजतरसमूल ॥ षसतजुलस
तसिरनतेफूल ॥२४॥ जनुपरगतिपररीझे
केस ॥ हरषतवरषतसुमनसुदेस ॥ चकू
रिसतेआवतछविपावति ॥ नौतनमंगल
गीतनिगावति ॥२५॥ रंगरगीगोपीजव

२६
द
ला
की

चली ॥ ब्रजकीगलीलगीं अतिभली ॥ जबु
नवप्रेमनदीछबिपावै ॥ नंदसैनसागरके
आवैं ॥ १६ ॥ महरअजिरमेंलगीसुहाई ॥
जनुयेसबककर्में चलिआई ॥ छिरकतसब
निहरदअरुदही ॥ तवैंछबिनपरतेकछु
कही ॥ १७ ॥ नाचतग्वालअनंदिनवोरे ॥
हरददहीमाषनतनषोरे ॥ अंबरबारतकं
वरबारत ॥ बहुधनडारतकछुनविचारत
॥ १८ ॥ कहीनपरतअतिमंगलभीर ॥ नि
कसिनजाइफटततनचीर ॥ इतएरागरागि
नीगावत ॥ नृततनदीजहीछबिपावत ॥
॥ १९ ॥ इतमागधबंदीजनरहै ॥ इतएसूतपु
राननिपढै ॥ तैसेईसुरबरबरिषतफूलनि ॥
डारतदिबादुकूलअमूलनि ॥ २० ॥ जित
कहूंतीब्रजगोबछबाछी ॥ तेलहरदकरि
आछीकाछी ॥ माथेमनिमयपटोवनो

ई ॥ कंचनदामसबनिपहिराई ॥२१॥ तादिन
ब्रजछबिकहेंबनेंन ॥ सबनिकैं ह्वैगएकंच
नत्रैंन ॥ नगजुलगेजगमगेसुहाये ॥ घरनि
कें मनहुंनयनह्वैआये ॥२२॥ मुकताबंद
नमालजुलसें ॥ जनुआनंदभरेघरहसें ॥
धामधामप्रतिध्वजनिकीसोभा ॥ जनुनिक
सीब्रजछबिकीगोभा ॥२३॥ तिनपरचपल
पताकाचमकैं ॥ बिनुघनजनुकिदामिनीद
मकैं ॥ जितीकब्रजबछवाछीगांइ ॥ कंचन
मालसबनिपहिराइ ॥२४॥ नवतेअद्भुत
छबिब्रजलसी ॥ रमारीझकैतहांहीबसी ॥
दोहा ॥ जद्यपिनित्यकिशोरब्रजराजतअंबु
जनेंन ॥ प्रगटभयापुनिनंदघरसवेवसमुष
दैंन ॥२५॥ चौपई ॥ बालकवदनविलोकैंनंद

दिन दिन पावै परमानंद ॥ दिन दिन बढत
अंग की कांति ॥ निर्मल बाल कई इंदु की भांति
॥२६॥ सोवति रैन नंद अकुलाइ ॥ उठि के प्रा
त पूत दिग जाइ ॥ बदन उघारे छवि हि निहा
रै ॥ बार बार आपन पो वारै ॥२७॥ रंच कहूं र
सभा में आइ ॥ बहुर्यो नंद सुवन उठि जाइ
मास दिवस के मोहन लाल ॥ कछु कमेरो मु
ह चुहे रसाल ॥२८॥ जसुमति के सुष की को
कहै ॥ बार ही बार बदन छवि चहै ॥ दोहा ॥
इतिया तिछिनई देवकी विध दिषियै जिम
नंद ॥ पून्यो सी जसुमति लसी पूरन जहां ब्रज
चंद ॥२९॥ श्री नंद जू के प्रेम की उपमा कह
तहै ॥ दोहरा ॥ रंक महानिधि पाइ ज्यों रहै छु
ती पर लाइ ॥ तैसें नंद महर अहिर सुंदर सु

तकोंपाइ ॥३०॥ ज्यौंमणिगजियारेंमणी
विरहतकरतग्रनंद ॥ त्योंसुतसुषकंदहि
निरषिविचरतव्रजमेंचंद ॥३१॥ चौपई ॥ (न)
ऐसेंमाऊमहरदुषपायो ॥ कंसकरदैनों को
दिनआयो ॥ रहिकरापिषोषमेंभले ॥ मथु
रानगरनंदजूचले ॥३२॥ तनुआगेंमनुपा
छेंऐसें ॥ दंडकेसंगपताकाजैसें ॥ तुरतआ
इनृपकौकरदयौ ॥ व्रजपतिव्रजचलिवेकों
भयौ ॥३३॥ समाचारवसुदेवजुपाए ॥ सष
हिमिलनमिलानिहीआए ॥ निरषिजुउर
नदनरिनेह ॥ ज्योंप्राननिकेंआयेंदेह ३४
जिहिविधिमीतिमिलनहैकह्यौ ॥ सोवसु
देवनंदकैलह्यो ॥ वैठपरमप्रेमरंगमगे ॥
वसुदेववातकहनतवलगे ॥३५॥ अहो

भ्रातबडमंगलनथयो॥विधनातुम्हारेपूतसु
दयो॥बडेभयेहेकरतबिलास॥कौनेकुंती
पूतकीआस॥३६॥अरुहममिलेनथयो म
नभायो॥फिरिकेबकुरिजनमुसोपायो॥
सबह्वैकेआवेअपनेद्वार॥मीतमिलनदुल्ल
भसंसार॥३७॥ज्योकबहूंकाहूंसंजोग॥
आनिमिलहिजप्रीतमलोग॥तोयेनाना
कमेविचित्र॥इकठेरहननपावैमित्र॥
॥३८॥जैसेनदीतरंगनिपाइ॥मिलतुहैआ
ठकाठवहिआइ॥बहुरस्यौकोऊलहरिउ
ठिआवै॥पकरिपकरिधोंकितहिंबहावै॥
॥३९॥पुनिपूछतसुतकीकुसरात॥गदग
दकंठकुरेनहीबात॥अहोभ्रातवह तात
हमारो॥नीकोहैरोहिनीपियारो॥४०॥

तुमकरितोषितपोषितगात॥तुमहीमान
तहैहेतात॥जदपिअर्थधर्मअरुकाम॥इ
नकरिनयोपुरुषकोधाम॥४१॥अहोमित्र
तदपिनसुषकोई॥सुहृदनिकोबियोगतहां
होई॥नंदसमोधितनिकोचित्त॥सवअ
हहिवसहोतहैमित्त॥४२॥जोपैनिपटहि
बिकलविधाता॥केतेहतेकंसतुवताता॥कं
न्याएकजुपाछैंमई॥सोकअहहिलईउडि
गई॥४३॥हेसवउहिंअहहिकेधोरें॥बिछुरे
मिलवेमिलेविछोरें॥तवकहीअहोनंदवु
जजाहु॥पूतहिंरचकजिनपतियाहु॥४४॥
एह्विपिफरकतमेरेगात॥ब्रजमेंआहिकछू
उतपात॥सुनतहीमहरमहाकलमले॥अ
पुरतपरतगेहकोचले॥४५॥कहतकिहोह
रिसरनतुम्हारी॥बासिसुकीकीजोरषवारी

दोहरा ॥ नंदकृपनधनलोभसचौयहपंचमञ्ध्याइ ॥ जहांधरे तहांनेनमनप्रानरहेंसवज्ञाइ ॥४६॥ मंगलगोकुलनंदकेनंदजथामतिपाइ ॥ वरन्योनितमंगलकरनइमपंचमञ्ध्याइ ॥॥४७ ॥ इतिश्रीदसमस्कंधेमहापुराणेकलदीपिकायांनंददासकृतभाषायांपंचमोध्याइ ॥५॥ दोहरा ॥ सुनिछठवोंञ्ध्याइञ्रवञ्रहोमितञ्रतिचित्र ॥ जहांसकलकलमलहरनवकीचरित्रपवित्र ॥१॥ चोपई ॥ ञ्रवसुनिञ्ध्याइपवित्र ॥ जामेंवकीचरित्रपवित्र ॥ महाराक्षसीसहजनसंस ॥ पुनिपुरीनिंद्दियनृपकंस ॥२॥ ग्रामनगरपुरपत्तेनतिते ॥ मासवीचकेवालकजिते ॥ तिनहिसघारतकछुनविचारति ॥ केईमारतिकेईषाइहीडारति ॥३॥ विचरतिविचरतमो

छठैं

वहवकी॥इकदिनवुजआईतकनतकी॥राजा
सुननतनिपरहीडरे॥ताकोसमाधानसोकरे
॥४॥जितैंमात्रहोइजहां॥औसितुकौप्रम उरनाम
वनहीतहां॥सोसाक्षातनंदकोधाम॥नय
संकयाकोकोह्योकाम॥५॥अद्भुतवनिता
वेषुबनाइ॥अंगअंगरूपअनूपचुचाइ॥
पहिरेललितअमूलडुकूल॥षसिषसिपर
तसीसतेफूल॥६॥लटकतिचलतिसुको
छबिगनै॥परिहेदूटिलटीकटिमनौ॥कम
लफिरावतिनैनडुरावति॥मधुरेगावतिचि
तनिचुरावति॥७॥गोपीचकीचाहिकैता
हि॥कहनलगीकिरमायहआहि॥अपने
पतिकौंहूटतडोलत॥यातेनहिकाहूसों
बोलति॥८॥गोपसबेइहिविधिकरिमोहे

३०

जानतमएनहिनहमकोहे॥लरिकनिल
हतिलहतिछविछुई॥सुंदरनंदनुवनमे
गई॥१९॥आछीवनककनककौपलना॥
पौटैजहांतनकसेललना॥बालभावमेंडु
रिरहेऐसें॥तीछिनआगिनिमसममघिजे
सें॥२०॥आवतितकीवकीनिजऐना॥मू
देनेनकमलदलनेना॥मेरेहेरेवेषुकपटकौ
[illegible]रहिहैनहीपूतनाअटकौ॥२१॥याते
मूदिरहेहगनाथ॥विश्वचराचरजिनके
हाथ॥मुसकतिमुसकतितहांचलिगई॥
लालहिलपकलेतहीभई॥२२॥देषतिकौ
तोछुटनोवाल॥ऐपरिआहिकालकोका
ल॥सोवतिपस्योभुजंगमजेसें॥रज्जुबुद्धि
कोऊगहतिहैतैसें॥२३॥असककछूरूपत्र

नृपमछुडी।।जसुमतिपुनिननिवारतिम
ई।।जैसेंअतितीछिनकरवार।।ऊपररतन
जटितपरियार।।२४।।जसुमतिचलीचाहि
केताहि।।होजननीकिजननीयहआहि।।
आईहेंज्योंजुगतिवनाइ।।तरलगरलदुहूं
थननिचुचाइ।।२५।।ललहिंपयोधरप्याव
नलागी।।चूमतिजातकपटरसपागी।।इक
कुचमुषइककरिमेंलियें।।पियतगोविंद
चंदहितहियें।।२६।।अकिलौविषुअपथ्य
डुषदाई।।लीनेंताकेप्रानमिलाई।।अंगअं
गविछितनईजबनारी।।कहतकिछाडि
छाडिहोंवारी।।२७।।क्योंहेंछाडतनृपबा
लक।।जगपालकअरिमेघरघालक।।छुटई
नसिसुअपनोंसापची।।मनहुनीलमणि
कंचनषची।।२८।।तबधरिअपनोंरूपपचि

धारी॥ भयोजुनादभयंकरभारी॥ सुरगारसा
तलभूतलजिती॥ सबहलहल्यो षलभल्यो
तितै॥१९॥ हौऊकुचपकरिउचकिवहना
री॥ लेडारीगोकुलतेन्यारी॥ षटुकोसकेल
ताद्रुमजिते॥ चूरनह्वैगएतिहितरितिते
॥२०॥ जेद्रुमलतानिपरप्रतिकूल॥ द्रुतेन
गोकुलकद्रुअरुकूल॥ तेतिहितनतरिचू
रनकरे॥ उवरेजेब्रजहितकतिभरे॥२१॥ ब्र
जजनताकेनादजुडरे॥ तहांतहांसवगि
रिगिरिपरे॥ पाछेउठिउठिदेषनधाए॥ देषि
रूपअतिविस्मयपाए॥२२॥ परीजुमुद्रु
वायेविकराल॥ तपततांमुसे वगेरेवाल
गिरिकंदरसेनासाअंति॥ हलहंडसेबदुदे
हंत॥२३॥ अंधकूपसेनयनगंभीर॥ धसि
जुगराप्राननिकोपीर॥ जठरभयंकरला

गतत्रैसो॥विनुजलमहासरोवरजैसो॥ज
घनसघनजुभयानकभारे॥महानदीकेज
नोकिरारे॥२४॥ताकेऊपरमोहनलाल॥
षेलतउभयसुनैनविसाल॥जेपहरहितम
गतननहिये॥लालनिरमासबैमनहिये॥
॥२५॥आजशिवजिन्हैपत्याननरती॥तेप
हलुंठतवकीकीछती॥गोपीपरमप्रेमरस
वोरीं॥फिरतपूतनातनपैदोरीं॥२६॥लल
हिउचाइछतीलपटाइ॥लैआईजहांजसुम
तिमाइ॥वुजरानीअनेकधनवारत॥पुनिपु
निराईलोंनउतारत॥२७॥गोपीसबैनेहरस
भीनी॥द्वादशनामनिरच्छाकीनी॥नीदेषि
पयोधरप्यायौ॥जननीजीवतवचआयौ॥२८॥ जठर
तौहियदेषिअतिविस्मयपायौ॥वदनचूमितव
जसुमतिभाष्यो॥आजुपूतपरमेस्वरराष्यो॥

३२

तबलोंनंदादिकब्रुजआये ॥२९॥ लैलैतीछ
नधारकुठार ॥ छेदेताकेअंगकरार ॥ करषि
कटेरिहृरिलैगये ॥ बहुतदारुदेदाहतभये
॥३०॥ उघ्रानुधमपूतनातनको ॥ परमसुगं
धहरनमुनिमनको ॥ वगरवगरसुअगरज
नुषरा ॥ अमरनगरपुनिवासितभरा ॥३१॥ अ
चिरजनहीनकृष्णभगवान ॥ जाकोकियो
पयोधरपान ॥ सिसुघातिनीपरमपापिनी
संतनिकीडसिनीसाँपिनी ॥३२॥ बहुस्यो
हरिकहुमारनगाई ॥ सुतियमुकतिकीरानी
भई ॥ जेजनश्रद्धाकरिअनुसरैं ॥ मधुरवस्तु
लेआगेंधरैं ॥३३॥ तिनकीकोनकहिसकें
कथा ॥ गोकुलकीगोगोपीजथा ॥ सुघतसु
घतब्रुजजनजिते ॥ नंदमहरघरआएतिते
॥३४॥ समाचारसुनिविस्मयपार ॥ ललहि

निरषिहगजरतजुडारा॥नंदपरमआनंद
हिपाइ॥लीनोतनयकंठलपटाइ॥२५॥क
हिकिजहांगयोवकुरिनआयो॥तहांतेमे
यहटोटापायो॥कीनीवकुरिबधाईनंद॥
दीनेवकुधनगोधनवृंद॥२६॥यहसुपूतना
चरितविचित्र॥अहोमित्रअतिपरमपवि
त्र॥जोयहकहैसुनैमनलावै॥सोगोविंद
विषैंरतिपावै॥२७॥दोहरा॥दानवकुलभो
जनकरननंदसुवनभगवान॥प्रानपूतना
केतहांकियेप्रथमपोसान॥२८॥नंदनंद
रिहरिप्रीतिकरिहियधरिछठोंअध्याइ॥
पूतभईजहांपूतनापयसुहिअपेयपियाइ॥
॥२९॥इतिश्रीदशमस्कंधेमहापुरानेकलदी
पिकायांनंददासकृतभाषायांषष्टमोध्याइ
॥६॥दोहरा॥अवसतमअध्याइसुनिसुंद

३३

रक्षतिकोसार॥जामेंलालरसालकेवाल
चरितमधधार॥१॥चौपई॥अवसत्तमत्र
धाइमुनिमित्र॥जामेंअद्भुतवालचरित्र
सकटविकरउचाटनकरिहे॥तृणावर्त
अधडारिनिदरिहे॥२॥मुनिकेयहपूतना
स चरित्र॥वालभाववसिधिपवित्र॥मगनम
योनपगदगदगारें॥पुनिसुकमुनिसोंवि
नतीकरें॥३॥होप्रभुहरिकोवालचरित्र॥
अतिविचित्रअरुपरमपवित्र॥जदपिअ
वरहरिकेअवतार॥मंगलरूपसकलक्ष
तिसार॥४॥पैयहवालचरितमधधार॥इ
अवर हिसमनकछूसंसार॥पियतत्रपतिनहि
माननितकांन॥अरोरकहोजानमलिजांन
॥५॥फुरेजुवालचरितरसरंग॥कहतनलगे
सुकपुलिकितअंग॥इकदिनआपहिक

रवट्लई॥ जननी निरषि अति हरषित भई॥
बोलि सकल गोकुल की बाला॥ उत्सव कियो
महा तिहि काला॥ सकट के अधधरि कंचन
पलना॥ सुत हि सुवाइ नंद की ललना॥ ७॥
विदा करन लोगनि को लगी॥ डोलत सुत मने
हर गमगी॥ बरहे चरत फिरत जिम गाइ॥ स
ब मन हरति वछ पे जाइ॥ ८॥ रतन मिलै ति
ल चावरी कीनी॥ भरि भरि गोद सबनि कों दी
नी॥ पूत उदय के हित ललचाइ॥ मत कोऊ
मनै लोक रिजाइ॥ ९॥ लगी जु मूषल लन तब मे
जे गो॥ मधुर मधुर धुनि रोवन लगे॥ करति ही
समाधान जसु उत को॥ सुन्यौ न रुदन पियारे
सुत को॥ १०॥ पलना ढिग बुज बालक आइ
निरषे हरि बालक के भाइ॥ कबहू किलकि
किलकि कलकिलत॥ चरन अंगूठा मुष मे

मेलत॥२१॥इतनेवीचअसुरइकधाइ॥
विकटसकटमैंआटकौआइ॥ललनहिंज
वहिदलनकौंनयौ॥तिहिछिनअद्भुतकौ
तुकनयौ॥२२॥तनकचरनऊचेंउचकाइ॥
उडिनिमैउडिगयौदयौउडाइ॥वडोसक
टजबउलटिपस्यौ॥दिषिसबलोगअचंभै
भस्यौ॥२३॥छतीछुवतिगईजसुमतिमै
या॥कहतिकिकहाभयौहयदैया॥तातर
पूतकुसरसौंपायौ॥जननीजठरजीवतब
आयौ॥२४॥नंददािकसबधायेआये॥सक
विलो टुकिसुबिस्मयपाये॥तिनसौंकहनलगे
सिसुवात॥अहोमहरिइनतेरेंतात॥२५॥
तनकचरनऔंसेंकरिकिस्यौ॥तोयहसकट
लटकिहैपस्यौ॥कहतकिकहाजानैएवोरे
उलटतकूटकमलकैमारे॥२६॥सबनिकहै

कि नंद वड भागी॥ लरिकहिं चकचोरन
लागी॥ तबते नंद महरकी ललना॥ पूतहि
पस्यो पत्याग्य न पलना॥२७॥ इकदिन लेये गोद
झुलरावति॥ लालके वालचरित कछु गाव
ति॥ तृणावर्त जान्यौ आवतौ॥ चाहति कि
यो ताको भावतो॥२८॥ मात महित जो मो
हि उडैहै॥ तो मेरी मैया दुष पैहै॥ ताते लल
न भयौ अति भारी॥ चकित भई जसुमति म
हतारी॥२९॥ थम्यो न सुत अपनौ सोक स्यौ
तवघरी नीधरनी पर धस्यौ॥ आयो चक्रवा
त रिस भस्यो॥ सुनिके नाद सबै हजडस्यो॥
॥३०॥ उडवति धूरि धौर कों करी॥ सबनिके
हगनि परी सांकरी॥ लैगयो लरिकहि गगन
उडाइ॥ तरफति फिरति जसोमति माइ॥
॥३१॥ मूदें लोचन टूटति डोलति॥ रकित ग

योएतयोंबोलति॥जितहिंधस्योहोतितहि
नपायो॥जसुमतिजियधोकिनबिरमायो॥
॥२२॥परीधरनिधकिकियोंविललाइ॥ज्योमृ
तवत्सगाइडिडयाइ॥जसुमतिधकनिसुनि
धाईगोपी॥बातेअधिकविरहरसओपी॥
॥२३॥परिगईजसुमतिढिगढिगऐसें॥कं
चनवेलिपवनवसजैसें॥त्रिभुवनकोजुभा
रुहोजितो॥श्रीहरिउदरधस्योहोतितो॥
॥२४॥दियोतृणावर्त्तेवल्लजोजुड्यो॥ऐसे
सिसुकोलैनभउड्यो॥धोरिकहरिगयोरंग
मगयो॥पुनिअतिभारभस्योडगमग्यो॥२५॥
कहतकिवहसिसुहाथनआयो॥मेंकोऊ
गिरिवरजाइउठायो॥लरिकहिडारनकों
अरवरे॥लरिकाउस्योलपटिगयोगरे॥२६॥
गरकेंगहतिनिचेष्टतभयो॥हगनिकीबा

टनिकसिजियगयो तबवहअसुरखलहि
खरहस्यो ब्रजकेबीचसिलापरपस्यो
किरचकिरचह्वैटिकुटिगयोऐसे हरसर
हत्योत्रिपुररिपुजैसे ताकेउरपरसुंदरबा
ल क्रीडतिनिर्भयनेनविसाल गो
पिनधाइजाइसिसुलयो आनिजसोदा
जनिनिहिदयो मुनिकेसबजनधायेआ
ए निरषिरूपअतिविस्मयपाये चेंस
तिवदननंदबडभागी पोछतरेनतनय
तनलागी कहतिकिकवनपुंन्यहमकि
ये हरिअरचेकिदानवहुदिये काल
केमुखमेंबालकगयो तहांतेफेरिविधाता
दयो॥पापीअपनेपापहिमरे साधकीरक्षा
ईश्वरकरे॥३॥दोहा॥ दीपकुवगद्योनंदघ
रनिर्मलजोतिअनंग॥उडिउडिपरनलगे

तहांदानवदुष्टपतंग ॥३२॥ चौपई ॥ तृणा
वर्त्तआवनमेंवाल ॥ भयोज्युअतिगरुवो
तिहिकाल ॥ जननीकेजियमंकारहै ॥ हरि
वहभारजनायोचहै ॥३३॥ इकदिनलल
हिलियेगोदमें ॥ जसुमतिमगनमहामोद
में ॥ बैठीमधुरपयोधर प्यावति ॥ अंगुरी
देदेमुहमुसकावति ॥३४॥ अरुनअधरदं
तनकीजोती ॥ जपाकुसुममघिजनुबिंब
मोती ॥ ललनहितनकजंभाईआई ॥ जसु
मतिदिषितहांबिस्मयपाई ॥३५॥ धरअंबर
ससिसूरजतारे ॥ सरसरितागिरिसागरभा
रे ॥ बिश्वचराचरहैयहजितो ॥ सुतमुषमंध्य
विलोक्योतितो ॥३६॥ नैंननमूंदिरहीचकि
चाहि ॥ कहतकिकछुयहछायाआहि ॥
मायाकिधौकिधौयहसपनो ॥ किधौंबुद्धि

त्रमहैयहअपनो॥३७॥वक्करिकहतियह सपननहोइ॥नहिमायानहिछायाकोइ॥परमपुरुषपरमेश्वरजोइ॥मेरेघरयहबालकसोइ॥३८॥विश्वहिकरेहरेसंहरेऊनेनानल्लोपुनिबिस्तरै॥वक्करिकहतिमायानहिहोइ॥अवधिभूतईश्वरजोकोइ॥३९॥जगविस्तरैभरेसंहरे॥सोयहमोसुतइमनधरे॥जवओसैकरिजसुमतिजाने॥तवहसिकेहरिगरलपटाने॥४०॥पुत्रसनेहमईरसमई॥मायाजननिनिउपरिफिरिगई॥जननीउपरिमायाजुबितानी॥अहोमित्रहरिहियकीजानी॥४१॥दोहरा॥ईश्वरताकछुनहिडुरीसबकोऊजानततहि॥सोप्रभु [illegible] सुतकरिपाइवोयहअतिदुर्लभेनआहि॥४२॥इतिश्रीदशमस्कंधेमहा

३०

पुराणे कृष्णदीपिकायां नंददास कृति भाषायां सप्तमोध्याइ ॥ ७ ॥ चौपई ॥ अब अष्टम अध्या
इ सुनि मित्र ॥ नामकरन अघहरन पवित्र
सुत मुष मधु विधु ब्रज बच ह्यो ॥ सो जसुम
ति ब्रजपति सोक ह्यो ॥ १ ॥ ब्रजपति हूं के मन
नेयगयो ॥ नामकरन जु नाहिनै भयो ॥ या
तेहो तहै छाया आइ ॥ लीजे लरिकनि नाउ
धराइ ॥ २ ॥ तबही गरग परोहित आयो ॥
नामकरन बसुदेव पठायो ॥ ताहि निरषि अ
ति हरषे नंद ॥ जनु घर आये परमानंद ॥ ३ ॥ अ
ग्रथम आसी बचननि करि अरचे ॥ पाछे चं
दन बंदन चरचे ॥ कही कितु म पर पूरन ना
थ ॥ निधि रिधि सिधि सब तुमरे साथ ॥ ४ ॥ क
वन भाति करपूजा कीजे ॥ ज्यो दिन मनि कौ
दीपक दीजे ॥ महापुरुष जो चलत ठिठोर ते ॥

नहिकछुजाचनकाज्ञओरते ॥५॥ कृप
नअनुग्रहममताकेबधे ॥ चलिनसकतिदृदि
फंदनफधे ॥ केवलतिनकोकरनकल्यान
दिषियतुनहिनप्रयोजनआन ॥६॥ अप
नोकछूप्रयोजनआहि ॥ श्रीव्रजराजकह
तिहैंताहि ॥ जोतिशास्त्रअतींद्रियज्ञान
ताकेतुमहीबीजनिधान ॥७॥ पूरवजनम
शुभाशुभकरे ॥ जिनिकरिजंतइहासंचरे
आगेहोनहारसुनिहोइ ॥ प्रभुतुमसमप्रक
जानतसोइ ॥८॥ नामकरनलरिकनकोकी
जे ॥ कवनसुविधिमोहिआयुसदीजे ॥ गरग
कहतसुनिहोव्रजराज ॥ यातेअवरनउत्ति
मकाज ॥९॥ अपरिहोंगुरुजादोंवंसको ॥
मोहिबडोडरवाहीकंसको ॥ कंन्यावचन
सुन्योहेजवते ॥ दिननचैंननिसिनीदनतब

ते ॥२०॥ मुनिपावेनी चनुकोराइ ॥ तोतोहो
इवडोअन्याइ ॥ नंदकहततोअसेकरो ॥
घरभीतरइकांतअनुसरो ॥२१॥ तनकस्व
स्तिवचनकरिदीजे ॥ लरिकनुकछूनांउ
धरलीजे ॥ गरगहिअरगगयेलेनंद ॥ अगि
निहोत्रकरिमंदहीमंद ॥२२॥ प्रथमरोहि
लगे नीसुतकेनाम ॥ धरनैद्विजसवगुनधाम ॥ या
कौनामएकसंकरषन ॥ जातेसवकेहिय
कौकरषन ॥२३॥ वहुस्योरामपरमअभिरा
म ॥ अतिवलतेकहिहैवलराम ॥ अवसुनि
अपनेसुतकेनाम ॥ पूरनकामसकलगुन
धाम ॥२४॥ इकश्रीकृस्ननामअसकैहै ॥
ससिसमसुधासवनिपरचैहै ॥ कवहूंपूर्व
जनमसुततेरो ॥ पूतभयोहैवसुदेवकेगो ॥
॥२५॥ तातेवासदेवइकनाम ॥ करिहैसवके

पूरनकाम॥याकेअवरजुनामअनंत॥गन
तगनतकोफलहैनअंत॥१६॥वकुतकहा
कहियेहोनंद॥देहेतुमकोंपरमानंद॥नारा
यणमषिपुनहैजिते॥तेरेसुतमेंफलकतति
ते॥१७॥छबिसंपतिकीरतिरसमई॥नाराय
णहूतेअधिकई॥मुनिनंदपरमआनंदे॥वा के
रवारद्विजवरपदबंदे॥१८॥जसुमतिताहिव
कुतसुषदयो॥गरगअरगउठिमथुरागयो॥ (नै)
अवसुनिसुंदरबालबिनोद॥देतजुनंदजसो
दहिमोद॥१९॥जानुपानिडोलनिजगमगे
मणिमयअगनारेंगनलगे॥सचिकनेंकोर कच
घुघुरारे॥कोहेंमधकरमधमतवारे॥२०॥
अंजनजुतनेनामनरंजन॥अतिसोहेंकोहे
नवषंजन॥लटकनिलटकतललितसुभाल
नि॥दमकतरुचिरचषोंडागालनि॥२१॥

तनकतनकसीनाकनाथूली॥फबिरहीनी
लसुपीतफ्रगूली॥जरितवधूलीछुतियनि
लसै॥ह्वैह्वैचंदकलनिकोंहसै॥२२॥कटित
टिकिंकिनीपैजनिपाइनि॥चलतिघुटुरु
के वनितिनँचाइनि॥निजप्रतिबिंबनिरषिब
ढ्ढ मूलनि॥सुषदिषदिषमैयनिकोफूल
किलकि नि॥२३॥किलकिंघुटुवनिकीधावनि॥डर
पिकैमैयनिपैफिरिआवनि॥मैयनिकीब
ह्मगरलपटावनि॥चुंबनमधुरपयोधरप्या
वनि॥२४॥ठाढेह्वैनलगेरंगमगे॥धरतगुच
रनधरनिडगमगे॥भुजवधआवतिललहि
षिलावति॥अगुरीगहाइकैपगनिचला
वति॥२५॥कबहूंनचावतिअतिगतिनई
दोधकदोधकदोधकथेई॥चरननिचलनि
अधिकरगमगे॥दौरिपौरिलगिआवनलगे

॥२६॥रुनझुनझुनअंगनिकीडोलनि॥म
धरतेमधुरतोतरीबोलनि॥अपनेरंगनि
षेलतमोहन॥लगीफिरतिजसुगोंहनगों
हन॥२७॥आगिनितेनगनितेषगनितेडेरै
जसुमतिमाषतिराषतिफिरै॥दिषिदिषिबा
लचरितअभिराम॥बिसरेसबनिधामकेका
म॥२८॥लैब्रजबालकअपनीबयसिके॥
दधिमाषनकीचोरीचसिके॥अरगअरग
आवहिदुरिजाहि॥दूधदह्योमाषनलेषा
हि॥२९॥जबघरआवहिमोहनलाल॥अंत
रसहिनसकेंब्रजबाल॥उरहनमिसमिल
नंदाकेत॥आवहिमुषछबिदेषनहेत॥३० नि
अहोमहरियहतुम्हरोतात॥कहाकहेंह की
मयोंबात॥असमेंदेयबछरुबनिछोरि॥ठा
ढोहसेषरिककीषोरि॥३१॥औरुसुनकुल

रिकनिकीवातै॥कितसीषीचोरीकीघातै॥
किंकिनिपटमेंलेइछिपाइ॥डुकतडुकतघ
रभीतरजाइ॥३२॥दह्योमह्योमाषनजो [illegible]
[illegible]पावै॥आपनषाइलरिकनहिषवावै॥
चोरीकोदधहितमोंषाइ॥जोहमदेहितो
देइवगाइ॥३३॥जसुमतिसुंदरसुततनच
है॥हसिहसिगोपवधूनिसोंकहै॥वारीतो
तुमऐसेंकरो॥दिनदशभाजनऊचेधरो॥
॥३४॥जबलगियाकीबुद्धिअयानी॥तबल
गितुमहीहोऊसयानी॥होजसुजोकोऊ
ऊंचेधरे॥तहांतुमसुनऊजुजतननिकरे॥
॥३५॥पीढनिऊपरिऊषलनावै॥ताऊपरि
इकसषहिचढावै॥तापरआपुनचढिकेंषा
इ॥चोरलोइतउतचितवतिजाइ॥३६॥वडु
सोबुद्धिवंतअतिआहि॥तेसोईछिडुवना

(मोती)

वैताहि॥ मुषतेदधिकनगिरिगिरिपरै॥ ससि
तेमनुमुक्ताहलझरैं॥ ३६॥ घरैंजवघरहारै
आवे॥ उतरिकेताकेंसनमुषधावे॥ मुषभरि
षीरनयनभरिताके॥ चपरिजाइयेचरितहं
याके॥ ३७॥ औरोऊधमकहियेकाहि॥ तुम्ह
रेनिकटसाधमनोआहि॥ नयभरीचषनि
चंमिनंदरानी॥ वक्करिकहतितिनसोंम
धवानी॥ ३८॥ वलिवलितोअवक्रोसेंक
रो॥ लैदधिदूधअधारैधरो॥ तहांकहतिगो
पींछविओपी॥ इहिरसजिनक्कक्रियासब
लोपी॥ ४०॥ अहोमहरिक्रोसेंहूकस्यो॥ लै
दधिदूधअंधारेंधस्यो॥ कोटिदियासमअं
गसुहाये॥ पुनिमनिभूषणतुमजुवनाये॥
॥ ४१॥ जितहिजाइयहतनयतिहारो॥ क
वनमवनतिहिरहैअंधारो॥ वोलीअवर

की

एकव्रजवाला॥हसिकैंहरितननेंनविसा
ला॥५२॥अहोव्रजेश्वरीसुनिइकबात॥मे
रैंघरयहतुम्हरोतात॥अरगअरगइकलो
ईगयो॥तहांइकअद्भुतकौतुकभयो॥
॥५३॥निकटिषंभमनिकेंमथिदह्यो॥माषन
सहितधस्योहोमह्यो॥लोंन्योलेनेलग्योत
हांझाई॥निरषिषंभमनिमेंनिजझाई॥५४॥
अरुबालककीसंक्यापाइ॥तासोंठाटोकि
तोलिलाइ॥कहतुकियहमाषनसबली
जे॥अहोमित्रभयनाहिनकीजे॥५५॥नि
तहीमेरेंगोंहनरहो॥अपरिमेयासोंझिनक
हो॥यहसुनिविहसिपरीव्रजरानी॥इतनी
जन्मसफलतामानी॥५६॥धरिघसरतनि
रषिसुगात॥पोंछतिमातकहतयोंबात॥
अरेपूतपूतनानिपाततनि॥तोसोंइककहि

सकतिनवातनि॥४७॥रहतजुनिपटघरि
मेसुन्यो॥पूरवजनमसुकरमेमनो॥अद्भुत
सिसुकछुसमुझिनपरै॥सवहीविधिसव
केहियहरै॥४८॥कवहूंदिषियैमाषनचो
र॥कवहूंफलकेनंदकिशोर॥ऐसेसबब्र
जकोंमधफ्यावत॥बिचविचईश्वरतादि
षिरावत॥४९॥मधरवस्तुजोंषातेंकोइ॥ है
वीचअमलरसरुचिकरिहोइ॥सिसुनुसों
कहिराष्योजसुमाइ॥दिषियकुबलियहच
पलकन्हाइ॥५०॥माटीषाइसलिलमेजा
इ॥वलिवलिमोसोंकहियोआइ॥इकदि
नकवहूंतनकहरिवारे॥मुषमेलीमाषनमो
होरे॥५१॥घाइगएसिसुजहांजसुमाइ ते
रेकान्हरमाटीषाइ॥सहनसकीजननीय
हवात॥हितसोंपिजीजसोमतिमात॥५२॥

४२

धाइ जाइ गहि कें विवियानि ॥ डाटन लागी
आगन आनि ॥ रेरे चपल गात अनुपाई ॥ कों
तें डुरि कें माटी षाई ॥ ५३ ॥ ये सिसु सबे कहत
यह बात ॥ अरु तेरो अग्रज भ्रात ॥ मेयमे री
अषियनि कहत कन्है या ॥ मैं माटी नहीं षा
ई मैया ॥ ५४ ॥ ये सब मिथ्या वादी आहि ॥ इन
के कहें न तनक पत्याहि ॥ जसु मति कहत तु कि
अग्रज तेरो ॥ यह न मृषि वोलत वल मेरो ॥ ५५ ॥
तब हरि कहत कि जो न पत्याहि ॥ मैया तो मे
रो मुष चाहि ॥ जननी कहति तो इते लाइ धों
देषों रदन हि बदन वाइ धों ॥ ५६ ॥ जगत गया
न मध मथन मुरारि ॥ डरि कें हीनों वदन पसा
रि ॥ जसु मति जहां चिते चकि रही ॥ थिर चर
डंवर अंवर मही ॥ पावक पवन चंद रवि तार
क ॥ सत रज तम गुन ति नें धारक ॥ ५७ ॥ ज्योति

यह

के

चक्रजलतेजअनंत॥इंद्रियगनमनमूरतिवं
त॥शब्दस्पर्शरूपरसगंध॥कालस्वभावक
र्मिजियबंध॥५८॥जीवबुद्धिअरुलिंगशरीर
महदादिकतत्वनिकीभीर॥पुनितहांबुजअ
पनपेसमेति॥सोटलियेसिसुकक्कुसिषिदृति
॥५९॥चाहिचकितभईसबसुधिगई॥कहति
किकहाआहियहदई॥सपनुकिधौंहरिदेव
कीमाया॥मोमतिभ्रमीकिधौंकछुछाया॥
॥६०॥जनुयकुसिसुदर्पनसमकस्यो॥जगप्र
तिबिंबितासमधिपस्यो॥पुनिप्रतिबिंबबिब
मेंकैसें॥देषतहोयासिसुमेंतैसें॥६१॥वकुरि
कहतुदिषियतुयहजितौ॥सोयासिसुमेंल
षियतुतितौ॥जाकीमायाकरिसबनचे॥द
रपअहंममतामदमचे॥६२॥ऐसीकुमति
परीपगबेरी॥सोश्रीकृष्णहैहोऊगतिमेरी॥

ऐसेंजवनिश्चयकरिजाने॥तवहरिहिमिल
सिउरलपटाने॥६३॥अपनींमईदिढमग्य॥
जननिउपरिकरिडारीदृग्या॥कहतकिहम
ईश्वरजानिवी॥सुलभहैश्रुतिमतिपहि
चानिवी॥६४॥औपरिहमसुतकरिपाइवी॥
अतिदुर्लभनहमिहियलाइबी॥सुनिकैंन्रप
तिमहामुदमनस्यो॥पूछतिसुकहिप्रेमरंग
ढस्यो॥६५॥कवनकर्मकीनोंअसनंद॥
पायोपरमउदैकौकंद॥महाभागजसुमति
को कियो॥जाकौमधुकरपयोधरापियो॥६६॥अरु
एअद्भुतवालचरित्र॥हियोहरतिजगकर
तिपवित्र॥गावतिकविवररंगनिभरे॥विवु
धारसनारसकरे॥६७॥जिनकेंहितहरिउ
तअवतरे॥तेसुषतिनकेकाननपरे॥श्रीसु
ककहीकिहेन्रपसत्तम॥सवतेंप्रेममनगत

रतिउत्तम॥६६॥निरवधिवत्सलरसजोआ
हि॥निगमोआगमकहतिहैताहि॥सोवत्स
लरसव्रजहैनंदकें॥घरघरप्रतिआनंदकंद
के॥६७॥बसुदेववरन्योनिगमसरूप॥विद्या
ब्रह्मदेवकीरूप॥नंदजोपरमानंदहैकोई॥
ताकीमूरतिव्रजमेंसोई॥६८॥ऐसेंसमाधा
नसुककियो॥रसकरिभरिराष्योनृपहियो॥
कहीकिवालचरितकछुऔर॥बरननिक
रोरसिकसिरमोर॥६९॥सोरठा॥वालचरित
मधुधार॥ताकेपीवनहारजे॥मुकतिचुचा
रिप्रकार॥छुवेनषारेवारिजिमि॥७०॥दोह
रा॥इहिअष्टमअध्याइरसनंदपिवहिजो
कोइ॥मातपयोधररसहिपुनिसोनकुपिवे
नसोइ॥७१॥इतिश्रीदशमस्कंधेकल्लदीपिका
यांनंददासकृतिभाषायांअष्टमोध्याइ॥८॥चौप

अबसुनिमित्रनवमअध्याइ॥ जामेंअद्भुतअ
द्भुतभाइ॥ जोगीजनमनदूटतजाको॥ बाधें
गीहठिजसुमतिताको॥१॥ इकदिनभोरही
उठिनंदरानी॥ आपुहिमंजुमथानीआनी
थोरोदहीपूतकेंहितही॥ राषतजसुजमाइ
नितनितही॥२॥ आरजुनंदमहरघरदह्यो
कितुकआहिकछूपरतनकह्यो॥ घेरीतहां
अनेकजुदासी॥ मंथनकरैंसवैकमलासी
॥३॥ उतनोंसोहाथमथैंबुजरानी॥ सोमान
हीकछुजातिवषानी॥ सुंदरगौरवरनतनमों
ओटेकंचनकोरंगकोहै॥४॥ मदुउज्जलगं
गाजलपहिरें॥ उठतिजुतनमेंछबिकीलहि
रैं॥ नेतकीकरषनिमुषकीहरषनि॥ सीससेसु
समकुसमकीबरषनि॥५॥ बिपुलनितंबल
लितगतिमलकनि॥ नगनिजरीकबरीकी

दरकनि॥भ्रमबनकनसुबदनपरवनी॥कन
ककमलजनोओसकीकनी॥६॥रजकीराज
निभुजनिकीभ्राजनि॥कंकनकिंकिनीकीक
लवाजनि॥लालकेवालचरितकछुगावति
भागभरीसबरागगरिझावति॥७॥सोवतसुत
तनपुनिपुनिदेषति॥मुंकतिजातिजनमफ स
ललेषति॥अरगअरगजननीढिगजाइ॥नेवु
गह्योअतिहेतवढाइ॥८॥सुतहिभरिपरिह
रिजुमथानी॥लैबैठीब्रजराजकीरानी॥मधु
रपयोधरप्यावनलगी॥कहीनपरतिजुप्रेम
रसपगी॥९॥चापिकेंचूमतिचारुकपोल
नि॥वोलतिललिततोतरीबोलनि॥पूतको
प्यारोपीयनोपयो॥अषिकअचितेउफन
तभयो॥१०॥यातेसुतकोधरकेंधरनी॥धाइ
गईतहांनंदकीघरनी॥पयकोंपयमीतंमि हिजु

लाइ॥पूतपैवक्करिगाइजसुधाइ॥२१॥अत
पतिसुतअतिरिसिकेंभर्यो॥नाजनुभांजि
नवननमेंडुर्यो॥सुतकोकरमनिरषिनंदरा
नी॥मुसकीजनमसफलतामानी॥२२॥व
क्कुरिकह्यौतिअतिलडिकुनकीजे॥लरिकहि
नेकुकछूसिषुदीजे॥अरगअरगजोनीतरि
जाइ॥चढ्यौउलूषलमाषनषाइ॥२३॥जन
नीनिरषिभीजंकीनांई॥उतरिभग्योतिहूं
लोककोसाई॥जसुमतिमोहनगोंहनल
गी॥तिहिछिनअद्भुतछबिजगमगी॥२४
जसुपैतेसेंधाइनजाइ॥श्रोणीभरअरुको
मलपाइ॥षसतजुसिरतेकुसमसुदेस॥च
रनचलनजनुरीझकेस॥२५॥आगेंपक्कूप
ह्वहिकचकरें॥तिनपरब्रजरानीपगधरें॥
जोगीजनमनजहांनजाही॥इतएवेदपरे

विलालाही॥१६॥ताकोंजसुमतिपकरतिम
ई॥रहपटएकबदनढूंदई॥जननीगहिज
बआगनआने॥जिनसोंडरुडरपैसुडराने॥
॥१७॥चषिनतेमषिमुषप्रसरतिऐसें॥निर्म
लविधुकलंकक जैसें॥१८॥नयननीरसुतहि
निरषिनहनारि॥करतेलकुटदईउतडारि
कहतकिरंचकबांधोयाहि॥जैसेंसिषला
गेलरिकाहि॥१९॥तिहिछिनगोपबधूघिर
आई॥हसतपरसपरलगतिसुहाई॥हरित
नचहतिकहतिमनभाई॥एनहोहिबलि
बलकपराई॥२०॥तबजसुतनकदांवरील
ई॥लालकेपटलपेटतनई॥ऊषलसोंजब
बनीनगाठि॥तासोंऔवरलईतबसांठि॥
॥२१॥सोपुनिपरिपूरनानहिभई॥तबहसि

वडीदावरीलई॥ वहौनतनकउदरफिरि
आई॥ तवजसुमतिअतिविस्मैपाई॥२२॥
धामकीदामदावरीजिती॥ गोपवधूलेआ
ईतिती॥ तदपिऊनद्वैआगुरलसे॥ वृजति
यहसैंजसोमतिहसे॥२३॥ आदिअंतकछू
पैयैजाको॥ वंधनअवसिपूछियैताको॥ आ
दिअंतजोकोऊनपावै॥ तनकजिवरियाकि
तफिरिआवै॥२४॥ निपटअमितजननीक
छुंजानी॥ निरवधिवत्सलरसपहिचानि॥
जदपिअवसईश्वरजगदीस॥ ताकेवसवि
धिविष्णुगिरीस॥२५॥ ताहिजसोमतिवांधि
तमई॥ वत्सलरसरसनादिढनई॥ भक्तव
त्सतानिगमजुगाई॥ सोपरगटश्रीकृष्णदि
षाई॥२६॥ दोहरा॥ ज्ञानआगमनिगममहि

आगमनिपटआगमजमनेम॥सबबिधिदुगमबु
जेसमुतसुगमराकहीप्रेम॥२७॥चौपई॥सुक
छुप्रसादजसोमतिपायो॥सोकाहूसपनेनहि
पायो॥जदपिविधिशिवआतमा॥औरूवहैष व
रघरनीरमा॥२८॥तिनहूकवहूंनाहिनचहो
सुसुषनंदकीललनालहो॥हेनंदपरासुजसोद
नंदन॥नित्यआनूपरूपजगवंदन॥२९॥भक्ति
वंतकहुसुषदहैजेसें॥ज्ञानीमानीकोनहीतें
सें॥बंधनसहितसकतिब्रजगोपी॥कहतिज
सोंरसओपी॥३०॥अहोमहरिअबबंधनछो
रो॥सुंदरसुतपरभयोनथोरो॥डरतेमुषपीरी
परगाई॥ललितकपोलनिपरछबिछाई॥३१
छीजतइमदेषहुतजिमोन॥महुलमुकरपर
जिमसुषपोन॥हहाकरतिजसुमतितिनआ

गैं॥रहनदेह्कृतनज्यौंसिथिलागैं॥३२॥नमुमति
तनकनवनमेंगाई॥इहांअवरइकअद्भुतभ
ई॥द्दिपरअर्जुनद्रुमद्वैवे॥शापकृतेनारदमु
निजुवै॥३३॥रगतरगततहांचलिगए॥लरि
कामोंहनगोंहनभए॥ऊषरतनकतिरीछो
करिकैं॥डारिदएतरुतिनमेंबरिकैं॥३४॥दो
हरा॥नंदनवमअध्याइयहवरनिकवनपेजा
इ॥चातकचंचुपुटलटीसबघनुकितहिस
माइ॥३५॥नंदनवमअध्याइकोउरधरिराषो
षेलु॥सहजहिउतमहोइहैज्योंतिलुतेलफु
लेलु॥३६॥इतिश्रीदशमस्कंधकृष्णदीपिका
यांनंददासकृतिभाषायांनवमोध्याइ॥९॥चौ
पई॥अवमुनिदशमदशमअध्याइ॥सुतकु
वेरकेगहिकेंपाइ॥कृतिकरिहरिपैअज्ञा

कधमकनरकनिमेंपरे॥श्रीमदकरिजुअंध
ह्वैजाइ॥दारिदअंजनबडोउपाइ॥२२॥त
नदुर्बलमनदुर्बलरहे॥अपनीउपमाकरि
सबचहै॥कंटकचरनचुभ्योहोइजाकें॥
औरदुषहियपरसैताकें॥२३॥जाकेकंटक
चुभ्योनहोइ॥काजानैपरपीरहसोइ॥पुनिबो
लेमुनिकरुनाभरे॥क्योंतुमदुमसैरहिगराष
रे॥२३॥तबअतिडरदोरिपगपरे॥परमदयाल
दयाल दयाअनुसरे॥मथरामंडलगोकुलज
हां॥अर्जुनद्रुमतुमउपजहुतहां॥२४॥नंद
केनंदनबालकह्वैहै॥बंधेउलूषलतुमकोछ्वै
है॥शुद्धहोइअपनेंग्रहऔहो॥डुर्लभबस्तुसु
लभहीपैहो॥२५॥तेदोऊअर्जुनद्रुमअसभ
ए॥बटतबटतअंबरलोंगए॥नारदवचनसु

मिरहरिजाइ॥दीनेगिरिमेदोऊगिराइ॥२६॥
निकसेदिव्यरूपविबिवीर॥पहिरेंअद्भुतभू
षनचीर॥जैसेंदारुमध्यतेंआगि॥निर्मलजोति
उठतहैजागि॥२७॥नंदसुवनकेपाइनिपरे
अंजुलिजोरिअस्तुतिअनुसरे॥अहोहोकृ
ष्णअमितअनुभाव॥नहिकहिपरतअचिंत्य
प्रभाव॥२८॥व्यक्तअव्यक्तजुविश्वअनूप॥प
रमपुरुषसबतुम्हरोरूप॥तुमहींसबभूतनि
कोगेह॥इंद्रियअहंकारअसदेह॥२९॥तुमह
हीकालबिसालसुवसुकर॥विष्णुबियापीअ
व्ययईश्वर॥तुमहीप्रकृतिरूपमहततु॥धारअं
वरआडंबरसतु॥३०॥जोकहोकुकिअंसेंह
मसबही॥घटपटज्ञानमयेतेतबही॥हेम
रोज्ञानसबनिकिनबनैं॥तहांकहतकुबेर

केतने ॥ २१ ॥ प्रभुतुम ग्राम बक्रते परे इंद्रि
यवाद तुरे अरबरे ॥ जैसें चषिफलरूपहि गा
हैं ॥ फल केर सहि नाहि नेलहें ॥ २२ ॥ निजमहि
मा मधिछिपिरहे ऐसे ॥ अनमेरबिदविरहत
है जैसें ॥ तैसें तुम अग्राह्य स्वछंद ॥ तातेनमो
नमोबुज चंद ॥ २३ ॥ नारद परम अनुग्रहक
स्यो ॥ पायो दुलन दरसरसमस्यो ॥ तहांतहां
जगतहि जो अनुसरे ॥ रबिज्यौं निबिरतिमि
रसबहरे ॥ २४ ॥ बोले नलकूवर मनिग्रीव ॥
अंजुलिजोरि नमितकरिग्रीव ॥ हमपरदेव
दयाकरि ऐसें ॥ पूर्वसुभावन उपजे जैसें ॥ अ
पने जानि दया अस कीजे ॥ अनपाइनी भग
तिरति दीजे ॥ २५ ॥ बानी तुमरे गुन गन गुनो
श्रवन परम पावन जस सुनो ॥ करअवरक
रमजिनि करे ॥ प्रभुकी चरचा में अनुसरें ॥ २६ ॥

मनअलिचरनकमलरसरसो॥चित्रकमलज
गमूलिनबसो॥तुम्हरियोमूरतिभक्तिहारे
नितनिरषौंनेनहमारे॥२७॥बोलेदामोदर
अभिराम॥पूरनहोउक्तिहारेकाम॥वारबार
परकरमादेहि॥सुंदरबदनबिलोकेंलेहि॥
॥२८॥अज्ञामईरह्योनहीजाई॥चलेनाथ
कोंमाथनवाइ॥श्रीकृष्णकीनगतिरतिपाइ
बनीजुछबिकछुवरनिजाइ॥२९॥उत्तरदिसि
गवनेरगमगे॥अतिजगमगेप्रेमरसपगे॥
चलेजातजनुबिबरबिटूक॥किधौंनिधूम
हेपावककूक॥३०॥दोहरा॥आपतनकबं
धनवधेतासोंकछुनबसाइ॥दृढबंधनसं
सारतेगुह्यकदियेछुडाइ॥३१॥नंदयथाम
तिकथितयहदशमेंशमअध्याइ॥सुनेजु
क्तिरंध्रनिकोंऊवंधनसवमिटजाइ॥३२॥

इतिश्रीदशमस्कंधेकृस्नदीपिकायांनंददासमक्ति
तिभाषायांदशमोध्यायः॥१०॥चौपई॥अब
सुनिएकादशअध्याइ॥जामेंश्रीवृंदाबनआ
इ॥अबसुनिअद्भुतअद्भुतकेलि॥नंदकनिप
रमअमीरसवेलि॥१॥उख्यावकथा॥सुनि
कुमशहसबेवुजङस्यो॥कहतकिआनिव
जेवुजपस्यो॥नंदादिकतहांधाएआरा॥परे
कुमनिदिषिबिस्मयपार॥२॥बडेअकाय
दोऊरूषरे॥धरनितेजरनिसहितऊषरे॥सो
चनलगेपतनकोकारन॥प्रबलपवननही
नहीवडवारन॥३॥कारनकोंनजुएतरूपरे॥
दिषिसवलोगअचंभेंभरे॥तिनसोंकहनल
गेसिसुवात॥अहोमहरइनतेरेतात॥४॥
आपुनइनकेअंतरवस्यो ऊषलतनकति

५२

रह्यौकस्यौ॥दयेउघारिदोऊद्रुमभारे॥एह
मसिगरेदेषनहारे॥५॥ निकसेउभैपुरुषद्व
तिभारे॥ष्याटोटाकेपाइनिपरे॥ऐसेजवउन
लरिकनिकह्यो॥किनहूगह्यो॥किनहूनही
गह्यो॥६॥ बैठेहरीद्रुमनिकेऐंना॥डरपेम
गसिसुकेसैनेंना॥नंदनिरषिवछलरसभरे
धाइजाइऐकवारीकरे॥७॥ बंधनछोरि
दा) छुतीलपें ए॥पोंछतसुंदरऐंगसुहाए॥ज
सुसौकहतकछूरिसिआई॥ऐसेसिसुको
ऊबांधतमाई॥८॥विरेहेनलगेवालकहि
भाइ॥जेसेमोहिकोऊजानिनजाइ॥व्रजके
बहूकहूनंदलालहि॥पकरिनचावहिनें
नविसालहि॥९॥ जेजेविकटमानउपजा
वहि॥तेसबसहजनाचदिषरावेहि॥बहु

ति न चावैं माषनु देहि॥ चुंवन करैं वलैया लेहि॥२०॥ कवहूं कछू टहल अनुसरैं॥ वुज
की वधू कहे सो करै॥ अहो कान्ह वे पावरी
लावो॥ वलि वलि ने कु पिढी पकरावो॥२१॥
गराई वसन ग्गुनाहि ने उचे॥ ना कछु ललनु
पचावनु पचे॥ कोउ कहे उरे आइ हो लाला
मुह गुहि देय हफूल की माला॥२२॥ कोऊ
लाल लाड़ दोहनी॥ कोऊ कहे मोह गहाव
सोहनी॥ शिव सब सुस बश्रुति को हियो॥
सो वुज वधू षिलौना कियो॥२३॥ कवहू वि
रत जमुना तीर॥ धूरि धूसरत सुभग शरीर॥
कुमनि मषेलत जसु मति डरे॥ दई कोऊ तरु
वर टूट न परे॥२४॥ लरकनि संग रग रग मग
म धरे बोलत डोलत मगे॥ तिन कौं लेन ग

ईजसुमात॥ठाढीकहतसुनोंहरिवात॥२५
मोरकेंआएहोहोऊमैया॥कोंयानहिनक
लेऊदैया॥देषेंआहिवलिगाईमैया॥घरि
चलिहैमेरोमेलोकन्हैया॥२६॥अहदिषि
वलिएसंगकेवारे॥मेयनिकैसीभांतिसिगा
रे॥तुमहूंअन्हाइतनककछुषाइ॥बलिब
लिबकुरिषेलियोआइ॥२७॥बैठेमहरप्यार
परआइ॥मोसोकह्यौकन्हैयहिलाइ॥तुम
विनुतातभातनहीषात॥चलिवलिमेरसा
वलगात॥२८॥नाचहिंषेलमगनअतिभए
तवजसुबाहपकरिहोऊलए॥मगमेंकहत
जातजसुमाइ॥सोईराजाजुप्रथमघरआइ
॥२९॥दोहरा॥हरिगुनरतननिमाहिषचि
मनिमनिकुंजसुछंद॥विषयकाचकरकच

निबिचपोइ विगारननंद ॥२०॥ चोपई ॥ म
हाविनोदमहावनठयो ॥ अबचाहतव्रंदाब
नगयो ॥ अंतरजामीअपनोधरम ॥ ताकरिबु
रेसबकेमरम ॥२१॥ इकदिनगोपसभामेबै
से ॥ अमरनगरमेंअमरनऐसे ॥ शिसुनकीर
साकरबीअबे ॥ इनकेमरतमेरेहमसबै ॥२२
॥ दोहरा ॥ बगरबगरकान्हरकथासबब्रजय
हव्योहार ॥ जैसेंअमरनगरसगराकेअमी
अहार ॥२३॥ चोपई ॥ तहांउपनंदनामइक
कोइ ॥ ज्ञानबृद्धवयबृद्धहेसोइ ॥ कहनलगेपो
हितेकीबात ॥ अबलोंपरीआहिकुसरात ॥
॥२४॥ अबलरिकनुकीरछ्याकरो ॥ ह्यांतेबेगि
अनतअनुसरो ॥ आइप्रथमबकीघरघाल
क ॥ कालकेमुषतेउबरेबालक ॥२५॥ अरुब

सब

हसकटविकटमारमस्यो॥याशिसुकेऊपरन
हिपस्यो॥पुनिवहपवनचक्रह्वैआइ॥लेगयो
लरिकहिगगनउडाइ॥२६॥बक्कस्योंआनि
शिलापरनाष्यो॥तवयहशिसुपरमेश्वररा
ष्यो॥जेतरुनमसोबातेकरे॥तेतरुअकस
मातसुविपरे॥२७॥जोजगदीसमहाइनहो
इ॥तिनतरआगोवचेनकोइ॥चाहतहोजो
व्रजकोमलो॥तोतुमतेअवहीचलो॥२८॥
आगेसुपुनहोतपुनिगते॥इततेचलेमलेइ
हिमते॥सुंदरवृंदावनइकनाम॥सवगुन
धामपरमअभिराम॥२९॥जामेगिरिगोव
र्द्धनआहि॥सवरितुसंततसेवततहि॥गो
पीगोपगाइवछलाइक॥सुषदाइकसुभन
करनसुनाइक॥३०॥एकेवुद्धिसबेजनगुठे

व्रज

सुनतहिसाधकसाधककहितउठे॥ अपअपनेंस
कटतुरतहीजोरि॥ बडेडेमेंदलकेंदलघोरि
॥३१॥ गोधनवृंदधरिलयेआगें॥ धरेसरासन
नीकेलागे॥ कंचनसकटनिचढिचढिगोपी
चलींसुनंदसुवनरसओपी॥ ३२ कंठनिप
दिकपरमदुतिलसै॥ नूतनकुचनवकुंकुम
रसै॥ चपलनयनआननछबिवढे॥ षंजनज
नुचंदनपरचढे॥३३॥ बालचरितलालनुकेगा
वति॥ रागनरीसवरागरिझावति॥ रोहिनिस
हितनंदघरनी॥ वेठसकटपरतिनहिवरनी की
॥३४॥ रमाउमासीदासीजाकी॥ सुरपतिरवनी
कवनबराकी॥ ललितललाहिगोदमेंकिये
चंदजननीजनुचंदहिलिये॥३५॥ दैकानजसो रही
मतितहां॥ सुतगुनगोपीगावतिजहां॥ याछ

विसोवृंदावनआये॥पंकतिपंकतिसकटब
नाये॥३६॥अद्भुतवानवनांछोंऐसें॥निर्मल
अर्द्धचंदहोइजेसें॥वृंदावनगोवर्द्धनगिरि
वर॥जमुनापुलिनमनोहरतरवर॥३७॥रस
केपुंजकुंजनवगहवर॥अमृतसमाननेरज
लसरवर॥जदपिअलोकिकसुषकेधाम॥
श्रीवलरामकुंवरघनस्याम॥३८॥तदपिनि
रषिछविवृंदावनकी॥उतमप्रीतिलगिग
ईमनकी॥औरोनवरमधकररवराजें॥परम
वीन प्रवीनजनुवाजे॥३९॥तेहांजहांनततमत्त
जुमोर॥रीझेहरिलषिउनकीवोर॥वोलत
पिककलकंठसुहाए॥जनुमधवधमिलि
मंगलगाए॥४०॥निरझरझरतगिरिनितेऐ
से॥निर्जरनगरअमीरसजेसें॥त्रिगुनपवन

लैआगैआइ॥संघतहरिनिहवदनउठाइ॥

॥५१॥वालवैसरसमैंजगमगै॥वालकसंग

ंगरगमगै॥वलसमेतशिसुसबअभिराम

कंचनभूषनकंचनठाम॥५२॥तिनमधिमधि

नाइकजुनंदकौ॥वरषतअमीकोटिचंदकौ

वृजसमीपलगैवछचरावन॥सीषतवेनुव

जावनगावन॥५३॥अतिगतिचलतसुअ

तिछविपावन॥नूपुरकलकिंकिनीवजाव

न॥वदिवदिहोडनडेलनिमेलनि॥कहूंपर

स्परवेलनिषेलनि॥५४॥कहूंकृतिमगैवृष

भलरावत॥तैसेंहीनादततिनहिभिरावत

इकदिनकान्हकुवरमनभावन॥जमुनकछू

गैवछरचरावन॥५५॥तहांइकअसुरवछ

कैआइ॥कहूंकेंवछरनिमेंमिलिजाइ॥न

ष्टदुष्टबुद्धिधरिआयो ॥ सोम्भी कह्लत वहिल
हिपायो ॥४६॥ चिदानंदमयअपनेवह्म ॥ वह
प्राकृतअरुअधमअसुह्र ॥ नेनसेनकरिवल
हिजनाइ ॥ अरगअरगताकोदिगआइ ॥
॥४७॥ पुत्रसहितलैपिछलेपाइ ॥ दियोफिरा
इफिराइबगाइ ॥ महाकायऊपरहीमस्यो
वक्रुतकपिथनतुलेधरपस्यो ॥४८॥ मलमल
कहिवलवालकहरषे ॥ सुरहरषेनवफूलनि
वरषे ॥ दोहरा ॥ कलईकेसेअंनजिमदंनेक
राजिनकोइ ॥ दिनदशाकीरसकीचसकअ
तहिबिगूचनहोइ ॥४९॥ चौपई ॥ पुनिइक
दिनवलअरुवलवीर ॥ सषनिसहितगए
सरवरतीर ॥ पहिलैपानीवछरनिदियो ॥ ता
पाछैआपनपयपियो ॥५०॥ तादिगएकअ

सुरवडआम॥ वकीअनुजवककजाकोनाम॥
निपटनृसंसकंसकोहियो॥ जिहिडरअमर
नमानतजियो॥५१॥ सोतिनतेंतिनपहिले
हीआइ॥ बैठ्योवककोवेषुवनाइ॥ कहन
लगेवककहोतनअैसो॥ वज्रहत्योगिरिशृंग
हेजैसो॥५२॥ अैसेठाटेकरतविचार॥ इतउ
तचितवतनंदकुमार॥ महाअकाइसुरिस
भरिधाइ॥ गह्योतनकसोमोहनआइ॥५३
जबबकग्रस्योकुंवरनंदलाल॥ बकसमेत
सवब्रजकेवाल॥ भएविचेतनतेतनअैसें
प्रानविनागनिइंद्रियजैसें॥५४॥ वककोता
लमूलजवजस्यो॥ तबइहिविचविचारिप
रपस्यो॥ मैंअपनेकरकाजुबिगास्यो॥ गहिकें
प्रथमतहीनहिमास्यो॥५५॥ अबकेमारिडा

रिनषिजाउ॥ तापाछेयेसिगरेषाउ॥ ऐसेक
हिबकउगलनलग्यो॥ तिहिछिनअद्भुत
कौतुकजग्यो॥५६॥ मुषतेंनिकसतमधरमुरा
रि॥ पकरिकैचुचफारिदियोडारि॥ कटको
करनहारनरजैसें॥ डारतफारिपेटरहिजैसें
॥५७॥ बककेमुषतेंकुवरकढ्ढपाइ॥ षिरि
गएवलसमेतसबधाइ॥ पुनिपुनिहरिहिअ
लिंगतऐसें॥ मरयोबछरुफिरिआवतजैसें
॥५८॥ जयजयधुनिअंबरमेंभई॥ बरषतफू
लसूलमिटिगई॥ बछरालेछबिसोंव्रजआ
ए॥ सुनिकेंगोपसुबिस्मयपाए॥५९॥ ज्योंको
ऊमरिपरलोकहिजाइ॥ अपनतुबछरुरिमि
लतुहैआइ॥ तैसेंमुषअवलोकनुकरें॥ चट
दृगनि पटीपलकनहिपरें॥६०॥ तिनमेंगोपीरूप

तिनत्र्प्रैसें॥ अमृतहि पाइ ट्टषित कोऊ जैसें
पूरबजनमपुन्यबहुकियौ॥ बहुतनि अन
यहानहेंदियौ॥६१॥ तो अैसी घारी घरघाल
क॥ तिनतेंउबरत है यह बालक॥ सबकोऊक
हत मीचहैं जिती॥ याटोटाकहुंआईतिती॥
॥६२॥ अैपेमीचौमरि मरि गई॥ पावकपरिप
तंगजिम मई॥ नंद महर तब हरि तन चह्यौ॥ ग
रगबचन लोगनु सों कह्यौ॥६३॥ नारायनम
घिगुन हैं जिते॥ तेरेसुत मेंफलकहि तिते॥ अ
सें समाधान करि नंद॥ चूम्यो बदन परम सुख
कंद॥६४॥ दोहरा॥ एकादशअध्याइ यह अग
दराजकीधार॥ नंद नेकपानहि करहु मिटै रो
ग संसार॥६५॥ इति श्रीदशमस्कंधे महापुराने स
रदीपिकायां नंददासकृतिभाषायां एकादशोधा

५१

दो॥२१॥ चौपई॥ अबसुनिलेद्वादसौंअध्याइ॥
महासर्पवपुधरअघआइ॥गिलिजेहेवछवा
लककोटि॥हतिहेंहरिताकोगलघोटि॥१॥
इकदिनपुनिआनीहरिमनमें॥करिहेंकाल्ह
कलेऊवनमें॥प्रातकालउठिमोहनलाल
वेनुवजाइवुलाएग्वाल॥२॥जेमेंकमलअमो
दहिपाइ॥ठठेमधुपउठतअकुलाइ॥वन
भोजनजुकान्हमनआनी॥वेनुवजावनहीं
मेंजानी॥३॥सुंदरविंजनसुंदरछीकीं॥कनक
लकुटियनीलटकेनीके॥लैलैअपनेवछरनि
आए॥कान्हकेवछरनिआनिमिलाए॥४॥
उज्जलउज्जलवछसुहाए॥मृदुलफटकके
मनोंवनाए॥जिनकेतनमेंवालकजिते॥नि
जप्रतिविंवविलोकततिते॥५॥वेनुवजा

वतगावतचले ॥ सबैमग्गनमेलागतनले ॥ ति
नमेंनंदसुवनसुषदाइक ॥ ऐसेंनगनिकेम
धिमधिनाइक ॥ दो ॥ छीकछुतेबिंजननिचुरा
वतु ॥ तेतोइतकछुओरवःआवतु ॥ हसिहसि
कहतकिदेषिकन्हैया ॥ कहादयोइहिया
कीमैया ॥ ७ ॥ ऐसेंषेलतषेलसुहाए ॥ सुंदर
श्रीवृंदावनआए ॥ केईकग्वालतालढिग
जाइ ॥ आवतैबगनषिजाइ ॥ ८ ॥ केईशिसु
कलकौंलनिषिजावत ॥ केईमधुमत्तमधु
पसंगगावत ॥ केईषगनिकीछायागहिधा
वत ॥ केईमिलिकलकोकिलनिकुकाव
त ॥ ९ ॥ पुनिपुनितिनकौंचोंपदिवावति ॥ ह
सितहसितवकुस्यौंफिरिआवति ॥ कोईअ
नुचरवनचरढिगजाइ ॥ आवततैसेंईताहि

बैठ
कि

षिजाइ॥२०॥कहूंद्रिषिनतनतमोरकिशोर
तैसेंहीनतनतरुचितचोर॥केईअपनीप्रीति
कनिसौंऔर॥गारिदेहिवक्रस्योंहसिपरे॥
॥२१॥वृंदावनकीकुसमसुकली॥गजमोत
नितेलागतभली॥छविपुंजागुंजाअतिसो
हे॥ललितलालरीझतितहांकोहे॥२२॥तिन
केरुचिरहारगुहिलावे॥आनिनंदलालहि
पहिरावे॥जबहरिदूरिजातरसलोभा॥देष
तिवृंदावनघनसोभा॥२३॥तबरग्वालवा
लमिलिआछें॥अंतरुसहतनधावतपाछें॥
आपुमेंअरतअमीसेवासें॥तेराजापहिलेंही
सरसे॥२४॥इहिविधिविहरतनरिअनुराग
श्रीशुकवरनततिनकोभाग॥इहिसुषपेंहि
तनहिअनुसरे॥रहतहेजद्यपिब्रह्मसुषररे॥

॥२५॥सेवकपुनियहसुषनहिलहै॥ईश्वरजा
निडरतनितरहै॥मायाश्रितजुबंधजनआ
हि॥नरहारककरिमाननिताहि॥२६॥इन
समपुंन्यपुंजकोऊनाही॥बिरतवनमाहीग ह
रषांही॥बकुतजनमजोगीतपकरे॥दुषनरि
चपलचित्तकछुधरे॥२७॥ताकरिजाप्रभुकी
पदधूरि॥दूटतफिरतितदपिहूंदूरि॥सोहरि
जिनकेनेननिआगे॥निसिदिनरहतप्रेमरस
पागे॥२८॥तिनलोगनिकीभागबडाई॥क
हाकहियेकछूवरनीनजाई॥तिहिछिनअ
घआयोतककतको॥बालकेलिसुषदेषिनस
को॥२९॥बकअरुबकीदुहूनितेछोटो॥अै
परिगुनकरिउनसोंमोटो॥जिहिडरअमरन
गरकेडरैं॥जद्यपिअमृतपानहैकरैं॥३०॥क

हतकिजवलोयहअघजियो॥तवलगिव्यर्थ
अमृतकोपियो॥किंवावालकेलिमुषचहै॥अ
मरनगरमेंमिलिसवकहै॥२१॥कहामयोजो
अमृतहैपियो॥हरिरसबिनुकछूगनतनजि
यो॥सोअघअजगरवपुधरिनीच॥पस्योआ
निमारगकेंवीच॥२२॥इकजोजनविस्तरि
मुषवाइ॥रह्योग्रसनआसालवलाइ॥अध
कोअधाधरापरधरें॥ऊपरकोजलधरमेंकरै
॥२३॥वालकचकेचाहिकेंताहि॥कहनल
गेकिकहायहआहि॥कोऊकहैकछुवन
सोभासुंदर॥कोऊकहैगिरिकीगहवरकंद
र॥२४॥तामेंवहमारगकीलीह॥लपकतिज
नुअजगरकीजीह॥कोऊकहैगगनमेंघनऊ
न यो॥रविकरपरसिअरुनह्वैगयो॥२५॥तरह

रिताकीछायापरी॥ तिनग्रहधरनिअरुनहेक
री॥ कोउकहेरेतुमकहतहोकहा॥ यहकेव
लअजगरमेंमहा॥२६॥ हमहिगुसनआसाल हे
वलाइ॥ परहोआइबडआननवाइ॥ जोअ
जगरहेतोकहाकरिहे॥ बकुलोंग्रहोनीचु
कोउमरिहे॥२७॥ योंकहिनंदनंदनमुषचा
हि॥ देषहियाहिकहाधोंआहि॥ नहिनडरे
अतिशयमुदितभरे॥ देदेकरतारीतहांवरे॥
॥२८॥ अलबलेईश्वरनंदनंदन॥ नृपशिसु
ज्योंपेलतजगबंदन॥ जवरासवताकेमुषव
रे॥ तापाछेंविचारपरपरे॥२९॥ यहतोसांच
हीअजगरमहा॥ अटकेनहिमेंकीनोकहा
अबह्यांबनेकवनबिधिकियें॥ अजगरमरे
बालबछजियें॥३०॥ आइगईईश्वरताअसें

वालकनृपकेरछ्काकजेसे॥ चले चलेतामुषमे
गरा॥ चेतननिरषिअचेतनभरा॥३१॥ इंद्रादि
कसुकोटिनिकोटिनि॥ देषतिहेघनओटनि
ओटनि॥ हाहाकारपर्योअतिडर॥ कहति
किअबहमसिगरेमरे॥३२॥ जबलीलनकों
रंचकनयो॥ तिहिछिनअद्भुतकौतुकभयो
तनैंसोसिसुमुषद्वारेषरो॥ रुकिगयोताको
सिगरोगरो॥३३॥ भयोनिरोधप्रानघटघुट्यो
ताकोब्रह्मरंध्रतवफुट्यो॥ निकसिजोतिअं
बरमेंगई॥ दामिनिसीफिरिठाढीभई॥३४॥
जवलगिनंदकेनंदगोविंद॥ वछराअरुव्र
जवालकवृंद॥ अमृतदृष्टिकरिसीचजिवा
इ॥ लैआएवाहरिनिजभाइ॥३५॥ तवलगिर
हीगगनमेंजोति॥ चहूंदिसिजगमगहोति॥

55

होति ॥ मुनिके देषत अति दुति मानी ॥ उलहि
आइ हरि मांझ समानी ॥ ३६ ॥ तदनंतर निर्जर
बर बरषे ॥ नवल मालतीफूल निबरषे ॥ मुनि
हरषस्तुति रस जग मगे ॥ गंधर्वी गुन गावन
लगे ॥ ३७ ॥ निर्तत अपछरा को छबि गनो ॥ लट
कति फिरति दामिनी मनो ॥ कोलाहल मुनि
के सुरओक ते ॥ अज आराजु अपने लोक ते ॥
॥ ३८ ॥ नंद नदन महिमा अवलोकि ॥ बिस्मय
करि हिय लीनों रोकि ॥ अज गरु चरम करम
गुन भस्यो ॥ सको वृंदाबनमें परयो ॥ ३९ ॥ ब्र
जके जिते ग्वाल बछ वाल ॥ षेलें रहे तहां वकु
काल ॥ यह को मार वैस कौ कम ॥ अति बिचि
त्र छैटक अघ मम ॥ ४० ॥ सौ पौगंड बयस कौ
पाइ ॥ कह्यो तिन लरिकनि ब्रज आइ ॥ आगु

न

६१

डुति जो की सा क

एकनंदकेलाल ॥ मास्यौव्यालमहाविकराल ॥
॥४१॥ हमसबताकेमुषमेंगए ॥ तहांतेराषिकव
नविषिलए ॥ अरुयहजोतिपरम ॥ सानी ॥ ह
मदेषीइनमांफसमानी ॥४२॥ अहोमित्रकछू
चित्रनआहि ॥ श्रीहरिकीमहिमाननचाहि
मनोमईमूरतिंकोर ॥ रचकआनिहियेमेंधरे ॥
॥४३॥ ब्रह्मादिकिंगतिजेसी ॥ सोवहसहजही
पावैतेसी ॥ सोंज्ञातआपुबलिआइ ॥ निवसता
केहियमेंजाइ ॥४४॥ अचरिजुनयोजुश्रीसुकगा
वे ॥ हरिसारूप्यअघासुरपावे ॥ सूतकहतद्विज
सोंरसटस्यो ॥ राजासुनिअतिअचिरजभस्यो ॥
॥४५॥ पुनिपूछेमुनिगहिकेपाइ ॥ सुनिवविषे
बढ्योअतिचाइ ॥ यहकोमारवयसकोकरम
कीनोमलनेनंननिजुधाम ॥४६॥ पुनिपोगंडब

कै

मसमेंआइ ॥ कह्योलरिकनिगहबनेंमाइ ॥
कबहूंइतेहरिमायाआहि ॥ होमुनिसत्तमबर
नेंकुताहि ॥ ४७ ॥ हमसबधंन्यभयाहीसंसार ॥ पी
वतकृस्नचरितमधुधार ॥ पुनितवबदनक
मलतेंफेरें ॥ मधुरतेमधुरमहासुषकेरे ॥ ४८ ॥
ऐसेंजबपूछेमुनिसत्तम ॥ परमभागवतउत्त
मउत्तम ॥ सुमिरहरिचरितरसरगमगे ॥ हियउ
उगमगेदृगनिजगमगे ॥ ४९ ॥ हरेंहरेंतिहिर
सतेजगे ॥ राजाप्रतिसुषबरषनलगे ॥ दोहरा ॥
यहद्वादसअध्याइजोसुनेंतनकचितलाइ ॥
अघनरहेंअघज्यौंसुनरुनंदआनघरकेजाइ ॥
॥ ५० ॥ नंदहियेंधरिनेहनरियहद्वादसोंअध्या
इ ॥ अघसेमलनिर्मलजहांकृस्नपादरसपाइ
॥ ५१ ॥ इतिश्रीदशंमस्कंधेमहापुराणेकृस्नदीपि

कायानंददासकृतिभाषायांद्वादशोअध्याइ॥१२॥

अबसुनितेरहोंअध्याइ॥ हरिहैंविधिवह्नबा
लकआइ॥ श्रीहरितेमेंईओरवनाइ॥ षेलि
हेंएकवरषइहिभाइ॥१॥ श्रीसुकउवाच नीकें
प्रश्नकरीनृपसत्तम॥ होवडभागभागवतउ
त्तम॥ कृष्णकथाजुपरमरसमई॥ सुनतहोंवा
रवारकरिनई॥२॥ जेभागवतनेरहरिभाव॥
राजनतिनकोयहेसुभाव॥ छिनछिनप्रति
नौतनसीसुनैं॥ सुनिसुनिपुनिपुनिमननमेंगुनें
॥३॥ सुनतनृपतिमानतनहींऔसें॥ परतिय
वातनिलंपटजेसें॥ अवसुनिसावधानह्वैता
हि॥ जद्दपिपरमगोप्ययहआहि॥४॥ शिष्य
स्नेहवंतज्योरहे॥ तिनसोंगुरुगुपतोपुनिक
हे॥ अघमुषतेजिवाइवछवाल॥ लेगएजम

नकूलनंदलाल ॥५॥ भोजनकियोचहतिति
हिकाल ॥ करतिहैंअरुकतिपुलिनगोपाल ॥
अहोमित्रदेषहुयहठोर ॥ असोनहिनपाई
येओर ॥६॥ उजलमृदुलवालुकासच्यो ॥ जमु
नासुकरतरंगनिरच्यौ ॥ इतयेअमलकमलअ
तिबने ॥ तिनपरभ्रमतभ्रमररससने ॥७॥ दि
गदियेसुंदरतरुफूले ॥ फूलिफूलिजमुनाजल ग
झूले ॥ षगनिकीधुनिप्रतिधुनिहियेहरे ॥ मंद
सुगंधपवनअनुसरे ॥८॥ नृपबलगीहेभोजन
करे ॥ इतयेवछ्छकछ्छमेंचरे ॥ मंडलदेवेठवृज
वाल ॥ मध्यबनेतहांमोहनलाल ॥९॥ सोह
तसबकेसनमुषअैसे ॥ कमलकेवीचकरनि
काजैसे ॥ भोजनकरतकुवरसांवरे ॥ छबिदिषि
अमरभयेबावरे ॥१०॥ भोजनविविधगुवाल
निठने ॥ फलदलसिलवल्कलअतिवने ॥ अ

पनेविजनतिनमेंधरे॥ चषतचषावतअतिमु
दभरे॥२१॥ तिनकेवीचवनेनदनंदा॥ उडमंड
लमानोपूरनचंदा॥ पटुअरुजठरवेनुवरकि
ये॥ वेतविषानकाषमेलिये॥२२॥ लेलेविंजन
चषनिचषावनि॥ हसनिहसावनिपुनिडह
कावनि॥ मनुजवालकेलिअसकरे॥ तनकन
ईश्वरजानेपरे॥२३॥ वछराजववनघनअनु
सरे॥ द्रिषिसवग्वालवालभयभरे॥ तिनसोंक
हतकमलदललोचन॥ अद्भुतसिसुभयको
भयमोचन॥२४॥ अहोमित्रतुमभोजनकरो
अपनेंमनतनकोजिनडरो॥ वछरनिहमलै
औहैंअबै॥ वेठरहोलहोसुषसबै॥२५॥ अैसेंक
हिबनगहवरकुंज॥ तमकरिभरीदरीजहांपु
ज॥ ढूंटतवछसविश्वकेनाथ॥ भोजनकवरल
येंहीहाथ॥२६॥ तबहनेतारकमलजतहांआ

यो॥ अघकौतुकदिषिबिस्मयपायो॥ केसेंग
ईश्वरहैंमकहे॥ तिनकीमहिमाचितयोच
है॥२७॥ लेगयोकछुतेवछचुराइ॥ इततेली
नेवालकआइ॥ ढुंढुवनिवनघनढूंढनल
गे॥ डोलतप्रेमपगेरंगमगे॥२८॥ पुनिहसिय
रेकछूरिसभरे॥ इतेकामइनविधनाकरे॥
जोअवहमइतचुपुकेरहे॥ तोइनकीजननी
कहाकहे॥२९॥ अरुजोइनहीकोंअवआने॥
तोविधिमोमहिमाकहाजाने॥ यातेनंदलाल
तिहिकाल॥ आपभयेवछवाछीवाल॥३०॥
वैसेईअंवरकंवरहार॥ वैसेईसहजअहार
विहार॥ तैसेईसवनामहामगुनजेसे॥ वेतबि
षानवेनुदलतेसे॥३१॥ तैसेईहसनिचहनिपु
निबोलनि॥ तैसेईलटकनिमटकनिडोलनि
कंकनकिंकिनीनूपुरजितो॥ सबविष्णुमयहै

६६

यहतितौ ॥ योयहबानीनिगमनिगाई ॥ सोप्र
भुमूरतिवेंतिदिषाई ॥ २२ ॥ आपहीआपघेरि
बछवाल ॥ लैआएब्रजमोहनलाल ॥ आपही
अपनेबछनिबेरि ॥ लेगएअपनेषरकनिघेरि
॥ २३ ॥ वेनुकीधुनिसुनिगोपीधाई ॥ अपअप
नेंकंठनिलपाई ॥ धूरिझारिपुनिपुनिमुषचूम
नि ॥ नहिकहिपरेप्रेमकीघूमनि ॥ २४ ॥ उबटि
सुगंधसलिलअन्हवाए ॥ मनभाएविंजनअनु
गताए ॥ उपज्योप्रेमतिनबिषैंअसो ॥ पाछेंनं
दसुवनसोंजैसो ॥ २५ ॥ अबसुनिलेगयनिको
प्रेम ॥ जिहिदिषिबिसरतमुनिमननेम ॥ षरि
कनिकटजबबछराबोले ॥ सुनतहीगोधन
हंदकलोले ॥ २६ ॥ हूंकिहूंकिउततेवहआ
वनि ॥ इततैंइनबछरनिकीधावनि ॥ चुषनि
चुषावनिचाटनिचूमनि ॥ बारबारहितकीब

हहूंमनि ॥२७॥ आपहीबछराआपहीग्वा
ल ॥ विहरतब्रुजवनमोहनलाल ॥ इकेंगिरि दिन
गोधनपरगाइ ॥ चरतिहिचढीआपुनेभाइ ॥
॥२८॥ ब्रुजसमीपबछरनिअवहेरि ॥ चलींजु
ग्वालसकेनहींफेरि ॥ स्वछपुछऊंचींकरिल
ईं ॥ मानहुचवरदुरतछविछई ॥२९॥ अति
गतिपगडारनिहूंकारनि ॥ सीचतिधारहिदू
धकीधारनि ॥ बछरीबछरनिपैंचलिआई ॥
मिलींधाइकछूनहिकहिजाई ॥३०॥ पाछैंगो
पजुधाएआए ॥ छोहभरेअतिश्रमकरिपा
ए ॥ सुतनिनिरषितवसबसुधिगई ॥ उपजी
प्रीतिनईरसमई ॥३१॥ शिसुनिविषैदिषिब्रु
जकौंनेहु ॥ वलिकेबढ्योअधिकमंदेहु ॥ क
हतकिपाछेंहुतोनअसो ॥ निरवधिनेहुअव
हिहैजैसो ॥३२॥ अरुमेरेंहूउपजतअसो

६५

कान्हकमललोचनसोजेसो॥ एवछबालक
वेतोनाही॥पाछेंकुतेजुइहिवृजमाही॥३३॥
अबजोनामदामदलअंबर॥बेतविषानवेनु
वरकेंबर॥कंकनकिंकिनीआभरनजिते॥सोहि
श्रीकृस्नअभाशततिते॥३४॥संकरषनतब
नीकेंजान्यो॥जबहसिहरिसबभेदुबषान्यो॥
वीत्योबरषहरषभरिधायो॥समाचारविधिलें
नहीआयो॥३५॥जोदेषेतौजमुनातीर॥वेसे
हीबिरतबलवीर॥इनहिनिरषिउतधायोग
यो॥तेसेईदेषिअतिविस्मितभयो॥३६॥इत
आवेपुनिउतकोंधावे॥पचैविरंचमरमनहि
पावे॥पुनिअपनेविधिदेषनिगयो॥पाछेंअद्भु
तकौतुकभयो॥३७॥जोविधिफिरिआवइहि
ठोर॥ह्वेरहीकछूऔरकीऔर॥बालकवछ

इत हीहेजितेबेनुविषानवेत्रदलतिते॥३८॥

ह

मुकतावलिगुंजावलिजुही ॥ नूपुरकंकनकिं
किनीसुही ॥ अंबरकंवरसवरंगजिते ॥ चहे
विरंचिचतुर्भुजतिते ॥३९॥ घनतनपीतवस
नवनमाला ॥ अरुनकमलदलनेंनबिसाला
सीसनिललितकिरीटसुलोलें ॥ कुंडलकलि
तकपोलबिलोले ॥४०॥ कंबुकंठकोस्तुभम
निलसे ॥ निकरविभाकरद्युतिकहुहसें ॥ छवि
उलसीतुलसीदलदाम ॥ पगपर्यंतवनीअभि
राम ॥४१॥ वदनवदनसुसकनिछविलसी ॥
चंदनिमध्यचंद्रिकाजसी ॥ पुनिइकइकब्रह्मां
डकेनायक ॥ सवलाइकसुभकरनसुभाइक
॥४२॥ ब्रह्महिआदिचराचरजिते ॥ मूरतिधरेंउ
पासततिते ॥ अणिमामहिमादिकसिधजिती
महदादिकविभूतहैंतिती ॥४३॥ कालकर्मगु
नअवरअनंत ॥ सेवतहेंतहांमूरतिवंत ॥ अति

अचिरजदिषिविधिसुधिगई ॥ इकतोकुतीओ
रमईनई ॥४४॥ चकितभयोसुथकितअसम
यो ॥ हंसकोअंसपकरिरहिगयो ॥ चतुरानन
हिफवीछबिअसी ॥ चतुरसुषीबृजयुतरीजेसी
॥४५॥ सरसुतीपतिबिचारिइमकरे ॥ कहाआ
हियहसुधिनहिपरे ॥ तवश्रीहरिनिजहिये
विचारि ॥ अजपरअजाजवनिकाडारि ॥४६॥ क
हीकिएअभिमानीलोग ॥ मोमहिमानहिचा
हनजोग ॥ वडीवेरविधिसुधिभईअसे ॥ मरिके
बक्तुरिउठतकोऊतेस ॥४७॥ दुषनरिहगउघा
रिजोचहै ॥ तोवहश्रीवृंदावनअहै ॥ सुरतरु
सेसवतरुवरजहां ॥ सवरसभरेअमीरसतहां
॥४८॥ मृगअरुमनुजमृगाधिपजिते ॥ जहांनि
वैरबिराजततिते ॥ सुदमनिश्रीहरिकहुनि
तचहै ॥ काकेकामक्रोधमदरहे ॥४९॥ पस्यो

धानिधोरनतेआइ॥ सवमुकटनिकरिपरस
तपाइ॥ जिमजिमवहमहिमासुधिकरे॥ उठि
उठिपदकमलनिपरपरे॥५०॥ कछुनकहे
हरिअतिरिसभोरा॥ हमेरेषेलआनिइनषो
रा॥ उछोसुषसुमहिमाकरिवोस्यो॥ वृंदाव
नकीरजमेंषोस्यो॥५१॥ थरथरकंपतसकल
शरीर॥ सवनेंननितेवरषतनीर॥ गदगदकं
ठवचननहिफुरे॥ अंजुलिजोरिअस्तुतिअ
नुसरे॥५२॥ दोहरा॥ वत्सहरनविधिबुधिहरन
सुनेंजुयहअध्याइ॥ नंदसकलमंगलकरेज
गदंगलमिटिजाइ॥५३॥ इतिश्रीभागवतेम
हापुरानेकथादीपिकायांनंददासभाषायांत्रयोद
शोध्याइ॥१३॥ चौपई॥ अवसुनिलेचौदहोअ
ध्याइ॥ व्रह्मस्तुतिजहांअदभुतभाइ॥ अति

अगाधमहिमाअवगाहै ॥ पुनिपुनिरूपअनू
पमचाहै ॥१॥ अवरकछूनफुरैअरुबैरि ॥ विधि
नंदनंदनवंदनकरै ॥ अहोईडानवघनतन
स्याम ॥ तडितिवपीतवसनअभिराम ॥२॥ मो
रपच्छविछाजतभाल ॥ विलुलितउरवनमा
लरसाल ॥ छविपुंजागुंजाअवतंस ॥ बेत्रविषा
नकवलबरवंस ॥३॥ पटुपदवृंदाविपनवि
लासहार ॥ नमोनमोब्रजराजकुमार ॥ जोक
होकछुकियाकौकहाकह्यो ॥ वरन्योरूपजुतें
कछुचह्यो ॥४॥ तहांचतुराननबिनतीकरै
भक्तनिकीकिधौंरह्याधौरै ॥ हमसेजोकोटिक
पचिमरैं ॥ याकीमहिमाजानीनपरै ॥५॥ जो
त साक्षीवस्तुतुमआहि ॥ अवतारीअवलंबि
तजाहि ॥ ताहिजुजानैसोवहकोंन ॥ चंदहि

गहतलहहतक्योंबोन ॥६॥ जोकहहकुकिह
मअसडुडीय ॥ जानिपरैनरूपरसभेय ॥ तोग
इतारडुतरसंसार ॥ क्योंतरिहैपरिहैभवपार
॥७॥ तहांकहहतविधिसुविधिबनाइ ॥ डुगम
वस्तकोसुगमउपाइ ॥ ज्ञानविषैप्रयासप
रहैरे ॥ तुम्हरीकथ्याविषैअनुसरैं ॥८॥ सहज
सुहृदजेसंततुम्हारे ॥ कथाअमृतकेवरष
नहारे ॥ तिनपैहितसोंसोजसुपियै ॥ जगमें
इहिजीवनितेजियै ॥९॥ अहोअजिततिन
करितुमजिते ॥ ज्ञानवानसबभटकततिते ॥
तुम्हरीभक्तिअमीरससरवर ॥ मोह्लादिकजा
केसबनिर्भर ॥१०॥ तिहितजितजिकैं ज्ञानअ
नुसरै ॥ तेवडमंदव्यर्थश्रमकरै ॥ ज्योंकोऊक
नविहीनलेधान ॥ धमकधमककूटैअज्ञान

६८

॥२१॥ फलु न कछू केवल श्रम जैसे ॥ भक्ति विहीन ज्ञान पुनि तैसे ॥ अब विधि सदाचार दिषरावत ॥ भक्ति बिना न ज्ञान सिधि पावत ॥

॥२२॥ होप्रभु पाछे वक्ता कभोगी ॥ तजि तजि भोग भये जल जोगी ॥ दिढ अष्टांग जोग अनुसरे ॥ ज्ञान हेत वक्ते दुष भरे ॥२३॥ अति भ्रम जानि त होते फिरे ॥ तुमको कर्म समर्पन करे ॥ तिन करि सुद्धि भयो मन मर्मे ॥ फुरि आरो सब तुम्हरे धर्मे ॥२४॥ कथा श्रवन करि वढी जु भक्ति ॥ जाके संग फिरे सब मुक्ति ॥ ताकरि आत्म तत्व कौं पाइ ॥ बैठे सहज परम गति जाइ ॥२५॥ अब विधि कहत हे हरि तन चाहि ॥ होप्रभु तुम जो निर्गुन आहि ॥ जाके रूप न रेष न क्रिया ॥ जिहि लाल चलले चे जियौ ॥२६॥ तदपि केई तजि

हि

तजिसवकुत्ति ॥ निर्मलकैरैचित्तकी वृत्ति ॥ स
हजहिसुन्नसमाधिलगाइ ॥ लेतहैंतामैंतुम
कोपाइ ॥२७॥ पैयहसगुनसरूपतुम्हारो ॥ इ
तमनषोयोजातुहमारो ॥ एअद्भुतअवतार
गुलेत ॥ विश्वहिप्रतिपालनकेहेत ॥२८॥ ना
मरूपगुनकर्मअनंत ॥ गनतगनतकोऊल
हेनअंत ॥ धरनीकेपरमानजितेकु ॥ हिमकन
उडगनगगनतितेकु ॥२९॥ कालहिपाइनि
पुनिजनकोइ ॥ वकुतजनमकरिसमरथहोइ
अेपरिसगुनरूपगुनजिते ॥ काहूपैगनपैरेन
तिते ॥३०॥ तातेंतुम्हरीकृपाजुआहि ॥ वध्यो
करितरयनदिनताहि ॥ कवमोपरिनंदनंद
नहरिहै ॥ कृपाकटाक्षतनकइककरिहैं ॥३१
निजुप्रारब्धकर्मफलपाइ ॥ अनासक्तचितु

अन तनजाइ॥ अरुअतितपकलेसनहिक
रै॥ अ वनकीरतनरसअनुसरै॥२२॥ होप्रभु
इहि प्रकारजोजियो॥ मुकतिबिषैमुअम
तफ लुपियो॥ अधिकारीबिधियरथरडर॥
निज अपराधनिवेदनकरै॥२३॥ देषहुना
थहु जेनतामेरी॥ महिमाचह्योचहोप्रभुके
री॥ अ गिनितेबिसफुलिंगजोजगे॥ अगिन
हिबि मौदिषावनलगे॥२४॥ पटबिजनाजि
मपं षडुलाइ॥ लयोचहैरबिमंडलछाइ॥
अबै सुनोंप्रभुउपमाआछी॥ गरुडहिआ
षिदि षावैमाछी॥२५॥ अहोअच्युतहोंनि
पट असाध॥ छमाकरहुमेरोअपराध॥
रजो गुनतेउपज्योअज्ञान॥ तुमतेभिंन्नई
शभ गवान॥२६॥ मायामदउनमदह्वैग

यो॥ मूरुनकछूअंधतमछयो॥ यातेअनुकं
पायैकरौं॥ मृतिजानिनकछुवेजियधरो॥
॥२७॥ च्यारोंफुटीजुजनजानियें॥ ताकोनाथ
नाबुरोमानियें॥ जोकहछूकिकतइतौलिला
हिं॥ तुमहूंतोइकईश्वरआहि॥२८॥ तहां
कहतविधिइहिविधिवात॥ समुझिकहोहोई
श्वरतात॥ कितहोकितमहिमानाथकी॥ कर
तहोकिटीहाथीसाथकी॥२९॥ प्रकृतिमह
दहंकारअकास॥ वाइवारिवसुमतीहुतास॥
स॥ सप्तवरनजोयहइकभौंनु॥ तुमहीकहो
तहांहोंकोंन॥३०॥ सप्तवितस्तिकायकोक
ह्यो॥ रहतवहुरिकेहांधोंपरयो॥ ऐसेंकोटि
कोटिब्रह्मांड॥ तुम्हरीएकरोमकेषंड॥३१॥
उपजतभ्रमतफिरतनहिचेंनु॥ रंध्रुजालजेसें

अमरेनु ।। यातेतुह्मनकाह्लाऽक ।। कृपाकरो
नलरोवुजनाऽक ।। ३२ ।। होप्रभुजेमेंजननी
गर्भ ।। जाननतपदतानतनहिअर्भ ।। तौकहामा
तवुरोहैमानति ।। अछअछकहिअतिनेह्मबि
तानति ।। ३३ ।। तैसेंहोतुवकुक्षकेमाह्मी ।। कर
तुकलोलकछूसुधिनाही ।। अवबिशेषकरि
जन्मतुअपनो ।। कहतविरंचिनयोकरिष्य
पनो ।। ३४ ।। होप्रभुयहतुजगतहैजितो ।। प्रल
यउद्दधिमधिमजतहैतितौ ।। तबहोतुम्हरी
नाभिकमलते ।। उपज्योनहिइहिउदरअम
लतै ।। ३५ ।। कमलजकमजमेरोनाउ ।। मृषा
आहिसवजनतुगाउ ।। तौतूनाराइणसुत
आहि ।। जलमेंजाहिचाहिलेताहि ।। ३६ ।।
क्योंआयोहमरेवुजइहा ।। कहतहेबिधित

बबातहितहां॥ तुमनहिनहिनाराइनस्वामी
साह्मीसबकेअंतरजामी॥३७॥ नारकह्यावेजी
यजितेक॥ बक्कुरिनाराएनीरतितेक॥ तिनमेन
हिअयनरावरो॥ प्रभुतुममोहिकरतबावरो॥
॥३८॥ नीरनिमधनारायनजोइ॥ होप्रभुतुम्हरि
यामूरतिसोइ॥ तोतेंहमअैसेकरिपायो॥ पानी
मेंपरिछिंनबतायो॥३९॥ तहांकहतअंबुजको
तात॥ अहोतातअवसुनियेबात॥ जबहोंकम
लनालमगगयो॥ मनकेवेगवरषसतभयो
॥४०॥ जोतुमजलकरिआवृतहोते॥ रहतेदुरेक
हांतेमोते॥ पुनिजबतुमक्कुंदयाकरिकह्यो॥
तपतपसोमेंदृढकरिगह्यो॥४१॥ तबरंचक
मोहिहियमेंआइ गएदिषाइचटपटीलाइ
यहसबतुम्हरीमायानाथ बक्कुतअरुक

मुरझेइहिमाथ॥४२॥अरुअबहीएहीअव
तार॥होईश्वरव्रजराजकुमार॥जननीकहु
मायादिषराई॥चकितभईअतिबिस्मयपाई
॥४३॥विश्वचराचरहेयहजितो॥वाहरिप्रग
टदिषियततितो॥सोतुमजठरमध्यदिषराई॥
तहांइककौतुकऔरवनायो॥४४॥तामेंतु
देष्यो मदेषोइकमाइ॥सांटलयेंडाटतजसुमाइ॥
बिंबमध्यप्रतिबिंबुजुहोइ॥याकोचहेकहै
सवकोइ॥४५॥प्रतिबिंबमेंबिंबुदिषरावे॥मा
याविनुयहक्योंवनिआवे॥जननीहूकोंन
हिदिषरायो॥होंतुमहीअवहीवोरायो॥
॥४६॥जातेथरथरकंपतिहियो॥अजहूंसु
धिनकहाहेकियो॥प्रथमहीमेंतुमनिरषेए
क॥वहुरयौवालकवहुजितेक॥४७॥वेत्र

बिषानबेनुदलजिते ।। ह्वैगएचारुचत्रभुजति
ते ।। पीतबसननवघनतनस्याम ।। सबनिकैंउर
सीतुलसीदाम ।।४८।। पुनिइकइकब्रह्मांडके
नाइक ।। मोहतमोसमेतसबलाइक ।। पुनिए
कएककछुबिबादे ।। देषेमेंमनमोहनठाढे ।।४९
तवमहिमाकौततुजोआहि ।। कोसमरथजो
जानेंताहि ।। हेप्रभुतवपदकमलसुबेस ।। ता
केरसप्रसादकौलेस ।।५०।। कवहूंकाहूपरढु
रिआवे ।। तवमलमहिमातत्वहिपावे ।। ताते
नाथइहिदरनीदरौ ।। अपनेभक्तनिकौंकछू
करौ ।।५२।। जातेपदपंकजकाधूरि ।। पाऊंपरमस
जीवनिमूरि ।। अबविधिभक्त्यानंदसुपग्यौ ।। व्रज
कौभागुसराहनिलग्यौ ।।५२।। धन्यधन्यएव्रज
कींगोपी ।। धन्यधेंनुवत्सलरसओपी ।। जिनिंमक्ष को
रपयोधरपाइ ।। पियतभयजुअघाअघाइ ।।५३

कबकेजङ्गभागहैषात॥अजहूंनेकौनहिन
अघात॥अहोभागबुजकोअतिचित्र॥जिनि
केप्रभुमेंअद्भुतमित्र॥५४॥जाकेनैंकअनंदके
ज लेस॥वर्त्ततशिवअं[illegible]समसुरेस॥सर्वबियापी
ब्रह्मजुआहि॥प्रभुकीप्रभाकहतकविताहि
60 ॥५५॥पुनिपरिपूरिरहेजहांतहां॥जाकुतौत
बजबहोकुनऽहां॥इनकीभागमहिमतोर
हो॥हमरेभूरिभागतनचहो॥५६॥जिनकोइं
ड्रियगनहैंजिती॥नयनवयनश्रवणादिक
तिती॥तिनकेहमदेवताजितेक॥रबिससि
शिवसक्रादितितेक॥५७॥पानपात्रतेईभय
हमारे॥पियतसुधासबअंगतुम्हारे॥हमकरि
येकछुनाहिनरचे॥पेअभिमानमात्रहीमचे
॥५८॥पुनिइकइकइंड्रियरसरसे॥नयेकृता
र्थसबदुषनसे॥जेसबहीबिधितुमहीलगे

डोलतडेमपगोरंगमगे ॥५९॥ तिनकीभागम
हिमजोआहि ॥ होप्रभुवरनिमकैकोताहि ॥
तातेयहमांगतप्रभुपहियां ॥ कैव्रजकेहूंदा
वनमहियां ॥ ६० ॥ औषधिवीरुधतृणद्रुमवे
ली ॥ जहांइनव्रजवासिनिकीकेली ॥ तहांको
मोहिकछूअसकरो ॥ इनकीपदरजमोपर
परो ॥ ६१ ॥ जोकहोसत्यलोकक्योंतजो ॥ ला
भकवनजुजन्मकोभजो ॥ तहांकहतविधि
इहिविधिवेणु ॥ हेश्रीकृष्णकमलदलनेन ॥
॥ ६२ ॥ जाप्रभुकीपदपंकजधरि ॥ ढूंढतनिगम
सुअजहूंहरि ॥ सोतुमजिनकीजीवनिनाथ ॥
जैसेदीनमीनकोपाथ ॥ ६३ ॥ मोहितेसोचपरयो
हेमहा ॥ होप्रभुइनकोदेहोकहा ॥ वडीवडा
ईमुक्तितुम्हारे ॥ जाकोचारोवेदपुकारे ॥ ६४ ॥ इ
नकेवेषमात्रपूतना ॥ महापापिनीजगतध

तना॥६५॥बद्धरोगद्युकौमारनकारन॥आइथि
नलगाइगारदारन॥मोवहवकोसकलकुल
लेकें॥वेठीजाइतनकविषुदेकें॥६६॥जिनके
नेहदेहधनधाम॥लागेमवेरावेरेकाम॥देहा
महाउरफेरो॥मोह्यौजातुइहांमनमेरो॥६७॥
होजानोनितरिनीरहोगे॥चटकटकइनके
वदनचहोगे॥जोकहहुकिएतोसबरागी॥
सुतवितमित्रविषैमतिपागी॥६८॥मुहिकोउ
वीतरागहीपावे॥तहांबिधिभक्तिविषैदृषरा
वे॥तवहीलगिरागादिकचोर॥हेदिनमणिश्री
नंदकिशोर॥६९॥तवलोदेहगेहजंजार॥तेईम
हावंधनागार॥तवलोंमोहलोहकोवेरी॥परी
पगनिदृढफिरतिनफेरी॥७०॥तवलोंमलि
नवासनाछ्ए॥जबलगितुम्हारेनाहिनभए
जोकोउकहेप्रभुवैनवजितो॥हमसमप्रकजा

कह

जो

नतहैतितौ॥७१॥तेजानहुग्यानहुजगोचर॥मो
तेतौमनवचनअगोचर॥अबमुहिअपनौ
किंकरजानौ॥मोकूनकछुअपराधनमानौ॥
॥७२॥हमरौज्ञानवीर्यबलजितौ॥प्रभुतुमनी
केजानततितौ॥ईतनिग्रमागतअहोअनंत॥
वंदनकरौंकलपपरयंत॥७३॥बारवारपरिकर
माहूकै॥सुंदरवदनविलोकनिकैकै॥चल्योना
थकोमाथनवाइ॥अधिकारीपरह्योनजाइ
॥७४॥जबबिरंचगवन्योनिजधाम॥तवघनस्या
मपरमअभिराम॥कछुतेवछुलयेहीआए॥
तिहीपुलिनमिसुबैठेपाए॥७५॥निरषिमुदि
तनएसबब्रजवाल॥कहनलगेकिअहोनंद
लाल॥एकोकोरनजेवनपाए॥तुममिलियामलै
वेगिहीआए॥७६॥ऐसेजबवोलेव्रुजवालक

हसनलगेजगकेप्रतिपालक॥मुनिमंडलकरि
प बैठेआछे॥जेसोवँनुबन्योहेपाछे॥७७॥भोज
नकरिबनतेव्रजचले॥रंगरलेअतिलागतभ
ले॥चित्रतअंगबिचित्रसुधातनि॥राजतवाल
वजावतपातनि॥७८॥सीसनिबनेचंद्रवामोर
न के॥छेदकतिंकेउरकेओरके॥बिचबिचसुस
मकुसमकीडार॥जिनपरभवरकरतझंकार
॥७९॥वेनुबजावतअतिछबिपावत॥ग्वालबा
लनवकीरतगावत॥पंकजफेरतबछुरनिटेर
त॥लैलैतिनकेनांवनिवेरत॥८०॥गोपीहमनि
केउत्सवरूप॥व्रजआएनंदनंदअनूप॥घरघर
मिसुनिकहीसबबात॥आजजुएकनंदकेतात
॥८१॥मार्यौव्यालमहाबिकराल॥राषिलएह
मसबबछवाल॥यहचरितमोहनजुलालको

बनभोजनअरुहैनहिव्यालको ॥८३॥ अरुबिधि
स्तुतिसुनैसुनावै ॥ सुनरुसबैपुरुषारथपावै ॥
दोहरा ॥ चितुदैसुनैजुचतुरकोऊचतुरदशौंअ
ध्याइ ॥ सुनरुचतुरदशाभुवनतेपरैपरमगतिजा
इ ॥८४॥ इतिश्रीदशमस्कंधेमहापुराणेकृष्ण
दीपिकायांनंददासकृतिभाषायांचतुरदशोध्या
इ ॥१४॥ चौपई ॥ इहिसुंदरपंदरहैंअध्याइ ॥ बलस
मेतवृंदाबनजाइ ॥ बनकीस्तुतिकछूश्रीमुष
करिहैं ॥ धेनुकहतिसुषब्रजविस्तरिहैं ॥१॥ जग
पौगंडवैसजगमगे ॥ चाइनिगाइचरावनलगे
प्रथमचलेबनचारनगाइ ॥ वाछबिकामुहिल
गोवलाइ ॥२॥ सषासाथबलभैयासाथ ॥ राजत
रुचिरमंगलीमाथ ॥ तंडुलबीचसुकोछबिगनो
मोतीजमेचंद्रमधिमनो ॥३॥ आगेकरिहरणगो
धनबृंद ॥ वदनचमिघरबगदेनंद ॥ गाइनिकी

छबिनहिकहिपरै॥परमअनूपरूपहियहरै॥
॥४॥उज्जलबरनसुकोहैहंस॥कामधेनुसबजि
नकेअंस॥दरपनसमतनअतिद्युतिदेत॥जि
नमधिहरिझाईझुकिलेत॥५॥वृंदावनछबिक
हतबनैंन॥फूलिरहेजहांहरिकेनैंन॥जामैंसं
ततबसतबसंत॥प्रफुलितनानापहुपअनं
त॥६॥कंटकद्रुमएकोनहिजहां॥चिदाभास
भासतसबतहां॥चलतजुनहिंलीलारसरले
मतहरिआवैंइतहींचले॥७॥सुंदरतरुसुरत
रुजहांकोहैं॥जेमनमोहनकोमनमोहै॥अ
रुनअरुननवपल्लवपात॥जनुहरिकेअनुरा
ग ग चुचात॥८॥रटतविहंगमइममनहरैं॥जनु
द्रुमआपमैंबातैंकरैं॥कोकिलकलकूजित
छबिपावति॥जनुमधुबंधसुमंगलगावति
॥९॥कुसुममधुतिधिंधरीसुकुंजें॥मंजुघोषगुंजें

तअलिपुंजै॥ सुंदरसरनिर्मलजलऐसें॥ संतज
ननिकेमानसजैसें॥२०॥ तिनमधिअमलकम
लअमलसैं॥ जनुहरिनिरषिनिरषिसरहैंसें॥ जहां
लगिवृंदावनकीभूमि॥ औरहीबिधिरहीजसु
नाझूमि॥२१॥ परमाधारसुरसुजोआहि॥ वह
तिरहतिनिसिवासरताहि॥ जितदेषियेतित
सुषकीरेंनी॥ कनककरारेरतननिसैनी॥२२॥
मंजुलवृंदावनकीगुंजा॥ कृस्ननामसुषसुषकी
पुंजा॥ तिनहिविलोकिलटूह्वैगए॥ तुरतहीतो
रिहारगुहिलए॥२३॥ निरषेद्रुमअतुफूलफलन
ए॥ मधुकरनिकरनिकरिछविछए॥ नमितजु
फलफूलनिकेभार॥ कहनलगेव्रजराजकुमार
॥२४॥ देषहुधौंराइद्रुमइहिवनके॥ सबसुषकरने
हरनेमनके॥ सिषानि परमतत्तुम्हरेपाइ॥ जा
नतहोकछुइनैनाइ॥२५॥ कहतकिहोईश्वर

के

जगनाइक॥ हो तुमहीसबहीसुषदाइक॥
औपरिहमपरवकृतेटरे॥ जातेंयाबनकेदुमकरे
॥२६॥ अरुदेषौएबनकेरंग॥ बोलतडोलततुम्ह
रेसंग॥ जनुएमुनिगणअलिद्वैआए॥ छिपमनु
जगतितुमलहिपाए॥२७॥ कबहूंहंसनिमिलि
सुकलोलत॥ वैसेंहीडोलतवैसेंहीबोलत॥ कबहू
मत्तनित्ततदिषिमोर॥ तैसेंहीनित्ततनंदकिशो
र॥२८॥ कबहूंमरोंधमधुपजहांगावत॥ तिनसों
मिलिगावतछबिपावत॥ कबहूंहरिजातिजव
गांइ॥ बोलतलैलैतिनकेनांइ॥२९॥ हेहेगंगेहे
गोदावरि॥ हेजमुनेहेभांवरिचावरि हेमंजा
रिहेकुंजरिसीयरि॥ हेहेधौरीधूमरिपीयरि॥
॥२०॥ कबहूमल्लयुद्धमिलिकेलत॥ मदगजजो
ठेलतपगपेलत॥ श्रमितहोतआवततरुतैरे॥
किशलयशयनसुपेशलकेरे॥२१॥ पोटतसषा

जंघनिसिरनाइ॥कोईवडनागिपलोटतपाइ॥
कोऊकरकमलनिलैकरमीजत॥कोऊलैकुसु
मवीजनाबीजत॥२२॥कोऊअसमधकरमधकर
सुरगावत॥सोंवेरेकुवरहिनीदअनावत॥कब
हूंवलभैयाकेपाइ॥आपुनहरिचापतमनिभा
इ॥२३॥मुनिमनजाकोकरतविचार॥निगमअग
मपावतनहीपार॥लछिमीललनाललितसुपा
इ॥लालतिन्होंनिधनीधनपाइ॥२४॥वडीवेरसि
षआवतमनमें॥सोप्रभुइमविहरतइहिवन
में॥अैसेषेलतषेलसुहारा॥गोधनलेगिरिगोध
नआरा॥२५॥सपाएकश्रीदामानामा॥बोल्यो
जाइसकलगुनधामा॥अहोअतुलवलश्रीव
लराम॥अहोदुष्टनिरदनघनस्याम॥२६॥इत
तेनिकटतालवनमहा॥मिष्टमिष्टफलकहियै
कहा॥यहदिषिउनकोपरिमलआवत॥चप

स्योह मेरे चित निचुरावत ॥२७॥ मारी नृपबलगी
हे चलौ ॥ मैया वकुत मानि है नलौ ॥ अेपरित
हाइक धेनुकनाम ॥ बडो बामता को विश्राम
जाके डर नर जात न कोई ॥ तह्छिन मे छिन करि
डारे साई ॥ सुनत ही धाइ चले रंग रले ॥ अेसे डुह
किते हलमले ॥२८॥ पैठे जाइ हराज हुहलाइ ॥ मह
गयंद ज्यो कानन आइ ॥ सुनि के आयो धेनुक धा
इ ॥ पैरे बल कौं पिछले पाइ ॥३०॥ तेई पाइ पक
रि गहि डास्यो ॥ ऊंचे स्योसु ताकरि फास्यो ॥ औ
रो खर आरा रंग भीने ॥ ते ऊस बेंडे लसे कीने ॥३१॥
पेरे बिसाल ताल फल मही ॥ विच विच गर्द्दिन प
रत न कही ॥ ज्यों रवि अस्त होत आडंबर ॥ कोरंगि
ये रे वादर अंबर ॥३२॥ छिन कम्वाल डारि घर च
ले ॥ कहत है झार मलेजू मले ॥ व्रुज को आवत
अति छबि पावत ॥ वालक वृंद सुकीरति गाव

72

त ॥३३॥ ऊपरसुरसुमनसबरषावत ॥ मुदितम
गडुंडुभीबजावत ॥ गाइनिपाछेंआछेंराजत
मकुबरिबेनुशृंगदलवाजति ॥३४॥ सुनिकेंगो
पवधूतवनिकसी ॥ मुद्रिनकमलकलीजनुवि
गसी ॥ दृष्टिपरेतहांमोहनलाल ॥ उरवनमाल
सुनेंनबिसाल ॥३५॥ गोरजमंडितघूंघरे
केस ॥ रसधरधरजनुमधुपसुदेस ॥ मंजुलमोर
मुकटकीटरकनि ॥ काननकंचनकुंडलफल
कनि ॥३६॥ हरिमुषकमलमस्योरसरंग ॥ गोपी
लोचनलंपटभृंग ॥ करिकेंपानसमानअघाने
वासरबिरहसुतापसिराने ॥३७॥ तबकछुगोपि
नुपूजाकीनी ॥ लाजसहितमुसकनिरंगभीनी
ताकेपाछेंकुटिलकटाछें ॥ चलीजुप्रेमरंगम
गीआछें ॥३८॥ तिनकीयहपूजाअभिराम ॥ ले
घरआएसुंदरस्याम ॥ पोछतवदनजसोमति

रानी॥ राजनिरजअलकनिलपटानी॥ ३९॥ अब
टनिउवटिफुलेलनलगाइ॥ सुभगसुगंधसलिल
अन्हवाइ॥ विविधिविमलविंजनरसधाम॥ जे
येस्यामरामअभिराम॥ ४०॥ भोजनकरितब
षरकनिआइ॥ फिरिघरगवनेगाइदुहाइ॥
दुग्धफेनसमसुंदरसेन॥ पौढेकमलनैनछवि
ऐन॥ ४१॥ दोहरा॥ नंदनीदनंदनंदकीकही
जुइहिअध्याइ॥ गुणातीतकौसोइवोसबम
गतनिकोभाइ॥ ४२॥ इतिश्रीदशमस्कंधेमहापु
राणे कलदीपिकायांनंददासकृतिभाषायांपंच
दशोध्याइ॥ १५॥ चौपई॥ अबषोडसअध्याइसु
निमित्र॥ जामेंकालियचरितविचित्र॥ इक
दिनआपहीसुंदरस्याम॥ वनगवनेबिनही
बलराम॥ १॥ घाममसमेंपशु त्रषतजुभए॥ चले
चलेकालीदहगए॥ वनमालीआवतहैंपा

छै ॥ वन छु विदेषत देषत आछै ॥२॥ तबलगि
ग्वालवाल अरु गाइ ॥ महागरल जल पीयो जा
इ ॥ पाछै जो आवै नंदलाल ॥ मेरे परे सब गोधन
ग्वाल ॥३॥ अमृतदृष्टि करि सीचि जिवाए ॥ उ
ठे सबै अति विस्मय पाए ॥ तब वनमाली सब
गुनमाली ॥ काढि दयो तिहि ह्रद ते काली ॥४॥
राजोवाच ॥ हो प्रभु वह ह्रद महा अगाध अ
रु विषजल करि भर्यो असाध कमल ह्नुते को
मल बनमाली तहां ते कैसे काढ्यो काली
तामे वहुत जु गति को क ह्यो सर्प अजल
चर क्यो जल रह्यो गोपवेष श्रीकृस्न चरित्र
परम पवित्र वहुरि अति चित्र निरवधि
मधु की धारा आहि सुको जु विषतै पीयत
ताहि बहुस्यो तुम्हरे मुष ते झरे अमृत ते अ

१०५

मतमहासुषकैरे ॥७॥ श्रीसुकउवाच ॥ हरिलीला
रससिंधहिलोलैं ॥ मधरमधरहसिनृपवृति
बोले ॥ जमुनहिमिल्यो निकटहीमहा ॥ अति
अगाधकुंडकहियेकहा ॥८॥ विषकीआगि
लागिजलजरैं ॥ उडतेषगजहांगिरिगिरिपरैं ॥
पवनपरसिउछिसुठिजललहरैं ॥ तिनतेबिषकी
फुहीजुपहरैं ॥९॥ इकजोजनकोथिरचरजंत
जरिजरिमरिमरिगएअनंत ॥ जेब्रजकोंअनू
कूलनकुंते ॥ तेसबविषजलज्वालाहते ॥१०॥
ताहाढिगइकमृडुलकदंबु ॥ सोछुसकौन
विषकोअंबु ॥ यापरकृष्णचरनपरसिहैं ॥ इहि
चढियाद्रहहिकरसिहैं ॥११॥ नावीजिहिकदं
की बुंअसे ॥ विषजलपरसिसकैतिहिकैसें ॥ असैं
हीनावीनकिजुआहि ॥ कालादिकछुसकत

नताहि ॥२२॥ श्रीभगवानउवाच ॥ हमरेहूंव्रंदाव
नकीजमुना ॥ कौंबिषभरीपूछियेयमुना ॥ ताक
डूंसुद्धिकरनछ्विबैठे ॥ सुंदरवरकदंबुपरबैठे ॥
॥२३॥ किंकिनीमोंकटिपटहिलपेटि ॥ कुटिल
अलकमुकटमेंलमेटि ॥ जिहिजलछुवतजा
तजनजेरे ॥ तिहिद्हहकुंवरकूदेहीपरे ॥२४॥ वर
वारनसेतामेंधसे ॥ ज्ञातज्ञातधनुमवदिसजल
रसे ॥ अतिऊधमसुनिकालियडस्यो ॥ वज्रप
स्योकिगरुडवलकस्यो ॥२५॥ हेरेंहेरेंआयोरि
सुनस्यो ॥ कोमलकुंवरदिष्टपथ्यपस्यो ॥ सुंदरइं
दीवरसमस्याम ॥ सोभितपीतवसनअभिराम
॥२६॥ मोरमुकटसिरकुंचितकेस ॥ मंदस्मितयु
तवदनसुवेस ॥ विहरतहरिअपनेरसरंग ॥ ई
श्वरतातहोंनाहिनसंग ॥२७॥ ताकोंकहाजा
नेयहनीच ॥ लोचनभरेतमोगुनवीच ॥ कोम

म

लहीतिकौलपाइ॥ उसतनयौडुष्षातमआइ
॥२०॥ लपटिगयोपुनिसगरेगात॥रोषभरेहग
रुधिरचुचात॥ ओसेजवनिरषेनदलाल॥गाइ
हषनेवछवाछीवाल॥ ठाठापुरझिपरेसवओ
से॥ बिनमूलहिसुंदरतरुजेसे॥ वृजमेंहोनल
गेउतपात॥ असुभसूचनेफरकेगात॥२०॥ भू
मिकंपनभैंउडपरे॥ औरअशकुननिरषसब
डरे॥ कहतकिआजरामविनुश्याम॥ वनजु
गएकछुविगस्योकाम॥२१॥ अतिकलमले
विरहदलमले॥ बालविरधसबवनहूंचले॥
तिनैकछुनकहेबलदेव॥ जानतहरिमैयाको
भेव॥२२॥ चरनसरोजषोजहीलगे॥ जिनमें
सुभलछिनजगमगे॥ अरिदरमीनकमलज
वजहां॥ ध्वजाकुलिसअंकुसछवितहां॥

॥सगतेचरननिविषेचक्रादितिनकेलछिना॥

जोजनचरनसरनअनुसरे॥तिनकेहितराल
च्छिणधरे॥चक्रचिन्हचरननिरुलमले॥का
मादिकरिपुदलदलमले॥२४॥सोहतसुंदरद
रबरलच्छिण॥अज्ञहितच्छिणकरतविचच्छि
न॥मीनचिह्नछिनछिनछबिधरे॥जनकेम
नहिमीनलोकैं॥२५॥रसभरयोकमलचि
न्हइहिभाइ॥जनकोमनअलिअनतनजा
इ॥जवचिन्हसोंमनलगैजाको॥अमलसुज
सुजगप्रगटैताको॥२६॥चरनमेंअंकुसलच्छि
नयाते॥मनमदगजचलिसकैनताते॥कुलि
सचिह्नजुचरनराजितनित॥पातकपर्वत
चूर्नकरनहित॥२७॥ध्वजाचिह्नजिहिहिय
जगमगे॥ताकेसकलअमंगलभगे॥तिहि
चरननिकेषाजहिचले॥अतिकलमलेविर
हदलमले॥२८॥अतिआरतअंबरनसमार

त॥ हलहलगोविंदपुकारत॥ क्रमक्रमक
रिजमुनाअनुसरे॥ देषेग्वालवालपसुपरे॥
॥२९॥ द्रुदमेदिष्टिपरेवनमाली॥ लपटिरह्यौ
तनकारेकाली॥ जोवलभद्रवीचनहींपरे॥ तौ
मै सबजनविषजलमेंजरे॥३०॥ तिनैंगोपवधू
नुकैनेह॥ हगनिमेंप्रानरहेतजिदेह॥ जसुम
तिउमगिउमगिदहपरे॥ शंकरषनपुनिपुनि
सुजधरे॥३१॥ व्रजजनमगतिदिषिवनमा
ली॥ उतगहिडार्‌योकारेकाली॥ ठाढोभयो
भयानकभारो॥ इकशतफनवुरियारोकारो॥
॥३२॥ फनफनद्वैद्वैजीभकराल॥ लपलपकर
तसुकेवलकाल॥ छाडतवारवारफुंकार॥ छु
टतजुगरलअनलकीझार॥३३॥ द्वैशतलोच
नरातेऐसे॥ माडेसकनिभाडेजैसे॥ तिनतैं
अगनिकीचिनगीपरे॥ ठाढेइतहितीरकेद

रे॥३४॥ऐसेंकालीसोंबनमाली॥षेलनलगेसह
जगुनमाला॥वारवारतिहिउरडरमेलत॥जैसेंग
रुडसरपसोंषेलत॥३५॥वुझिगयोओजउरगकौ
ऐसें॥नागट्वनदेंषेंअहिजैसें॥रुटदैतिहिफन
परचढिगए॥नागरनटवरअतिछविछए॥३६॥
योहतिजवदूरसेसवसरसे॥सुरमुनिसुंदरसुम
ननिवरसे॥मोहेंनंदसुवनतहांऐसें॥सेसउप
रनाराइणजैसें॥३७॥तिहिछिणव्रजगंधर्वजि
तेक॥सुरपुरहरिपुरसुघरतितेक॥तैंतहांआये सव
रसलीन॥लेलेतालपषावजवीन॥३८॥तांडवनि
र्तसुनिर्त्तनलगे॥सकलकलागुरुअतिजगमगे
जोईजोईफनअहिउन्नतकरे॥तहांतहांमान
कान्हकोपरै॥३९॥पदकूटनिमेंअहिफनजिते
भगनभरामणिडारनतिते॥तेमंईहरिनिषम
णिकीजोती॥सवदिसिजगमगजगमगहोती

॥४०॥ पदअघातकरिकालियसर्प॥ सिथिलपरि
गयोगरिगयोदर्प॥ दुषितभयोसबफनदलम
ले॥ अहिकेप्रानजानकलमले॥४१॥ तबताकी
पतनीदृगभरती॥ आईसबदंडवतनिकरती॥
छुटेटेलरिकनिआगेकिये॥ जैसेंदयाफुरैंहरि
हिये॥४२॥ अतिभयभरीहोरिपगपरी॥ अंजुल
जोरिस्तुतिअनुसरी॥ नागपतीऊचुः॥ अहोनाथ
अनुचितनहिकस्यो॥ अहिकोंदंडन्याइहीधस्यो
॥दुष्टदमनतुम्हरोअवतार॥ होईश्वरब्रजरा
जकुमार॥ सहजदेषियतविश्वपसारो॥ होप्रभु
क्रीडासाजतुम्हारो॥४४॥ अहिकोंतुमकुंदं
डनहिधस्यो॥ यापरपरमअनुग्रहकस्यो॥ तुम
तेजगमेजितीबडाई॥ इनपाईसोकिनहूंन
को पाई॥४५॥ एकअंडैंभाहसुकितो॥ गरवतुसेस
धेरसितितो॥ अमितअंडमयबेषुतुम्हारो॥

ताकोभयोयहधारनहारो॥४६॥सुनिएवच
नकृपारसभरे॥अहितेतुरतउतरहीपरे॥ह
रेहरबोलेतवकाली॥होअद्भुतईश्वरबनमा
ली॥४७॥मेरेविषजालीअहिकाली॥प्रभुतुम
हीहमऐसेकरे॥गर्वभरेतामसगुनभरे॥तबन
हिंसोचेतऐसेबानत॥अबक्योंनाथबुरेहों
मानत॥४८॥तवतासोंबोलेवनमाली॥रेरेविष
जालीअहिकाली॥दृअवरमणकदीपहिजा
हि॥गरुडकेडरतेकोनडराहि॥४९॥सोपदचि
हननिचिहनतभयो॥कालव्यालकुकोडरगयो॥वंदनकरिनंदनंदनपाइ॥चंदनवंद
नहियेलगाइ॥५०॥सुतकलत्रलेभरिअनुराग
रमणकगयोनागवडभाग॥दोहरा॥कालीम
हनलालकीलीलासुनेजुकोइ॥महाव्यालक
लिकालकोतिहिनतनकडरहोइ॥५१॥इति

श्रीदशमस्कंधेमहापुराणेकलदीपिकायांनंदास
कृतभाषायांषोडशोध्यायः॥१६॥ चौपई॥ सुनहु
मित्रसत्रहैंअध्याइ॥ कालीउरगपीरीछितरा
इ॥ रमणकदीपअहिनुकोधाम॥ क्यौंआयौ
को छाडीउइहिकालीधाम॥१॥ गरुडैकौंनकियौ
अनभायौ॥ जातेयहइहिंकुंदमेंआयौ॥ श्री
शुककहीकिअहिनुकोठौर॥ परीरहतिनित
षगपतिरौर॥२॥ थोरेषाइबहुतहतजाइ॥ त
बसर्पनिमिलिकियौउपाइ॥ आवहुमासमा
सबलिदीजे॥ इहिविधिभलेकौऊदिनजीजे॥
॥३॥ तबपर्वणिपर्वणितरुतरैं॥ अपनीअपनी
बलिलेधरैं॥ यहविषकीबीरजमदमस्यौ॥ गरु
डतेंचकनाहिनडरयौ॥४॥ अपनोभागुअ
वरकोभागु॥ षाइजाइसबकालियनागु॥ सु
निकेंकुपितभयौषगराज॥ कद्रूसुतहिहत

नकेकाज ॥५॥ महावेगिधरिरिसिभरिधाधायो
वलिआलयउरगालयआयो इततेबलीव्या
लसमुहानो मधुरिपुआसनपरमतरानौं
इकशतफननिफुफांतसुमांतो द्वैशतनेंननि
अगिनिचुचांतो अतिवलिगरुडनषायुधजा
कें द्वैजेंमधुसूदनवलताकें बामबाजन
वकंचणमई ताकरिहपटएकजुदई तहां
तेभग्योसुबिह्वलभयो ॥ धाइआइइहिदहदु
रिगयो इहांगरुडकीनकछुबसानी ॥ फि
रिगयोसोभरिसंकामानी ॥ श्रीराजउवाच ॥ भा
जिखुजेंगमदुरिगयोजहां सोभरिसंकाकेसा
तहां ॥५॥ श्रीशुकउवाच ॥ एकसमेंतिहिंदहमेंआ
इ ॥ षगपतिकीनोअधिकअन्याइ ॥ तहांकेमीन
निकोंडुषदीनो ॥ तिनकोराउपकरिहेलीनो ॥
॥२०॥ जलचरदेषिदुषितजुषरे बोलेसोभरिक

रूनाभेर अबकेजोह्यांपगपतिआवे प्रानस
हिततौजाननपावे अकिलौकालीजानें
ताहि अवरुनलेलिहजानेंयाहि सोवहका
लीबिभुवनमाली काढिदियोकरिकान्निबि
माली तबनंदनंदनतहांतेनिकसे आव
तहसतकमलसेविकसे अद्भुतअद्भुतनव
मनिमाल अहिजुवतिनपूजेनंदलाल
बनेजुतिहिछिनकोछविगानौं चंदहिआपद
ईहमनों धाइघुरिगईजसुमतिमैया इति
हिहेरिघुस्योवलिमैइमैया गोपीगोपगा
इबछजिते अंगअंगलपटिगएतहांतिते च
लतसबनिकैनेंननिनीर जनुजलछेनिकसीउ
रपीर पीतममिलैजुलोचनबहे डुपजल
रूपहोतइमकहे आएब्रजकेद्विजअनुरागे
नंदसोंकहनसबैयोलागे जाकोंअसोबि

षधारषाइ सोसुतबकुरिमिलैंआइ तातेदानदे
कुवुजराज अपनेकुलमंडनकेकाज गुक
छुजन्मउत्सवकोकीनो वुजपतितातेहूनोदी
नो असेकरतिपरिगईसांझ रहिगएताहीका
ननमांझ सवदिनअतिकलेसकरिभरे मो
वतकुतेमहानिसपरे तहाअभिचारमंत्रक
रिप्रेस्यो उठ्योआगिनितिहिसववुजघेस्यो
उष्णपवनलगिउठतजुलपटै दूरहूरलों
अतिझरझरपटै जगजुलोगकुलाहलपस्यो क
हतकिअबकैसबवुजजस्यो पौढेकुतेसां
वरेजहां सबजनधाइआइगएतहा हेश्रीकृ
ष्णकृष्णहरिप्यारे जरतहैंमहादवानलजारे
हमहिकछूतोडरुनमरनको नहिसहप
रतवियोंचरनको सुनतजगेअतिआलसप
गे नीकेलगेउठतरंगमगे एकसकति

कोंआज्ञादई॥कवधोंअगिनिपानकरिगई॥
जेद्रुमलतादवानलजरे॥अमीदिष्टिकरितेसे
ईकरे॥ ॥दोहा॥अगिनिपानहरिजानको
यहसत्रहोंअध्याइ॥सुनेजुतिहिंसंसारफ़ुरनंद
नपरसैंआइ॥ ॥इतिश्रीदशमस्कंधेमहापुरा
णकृष्णदीपिकायांनंददासकृतिभाषायांसप्तदशो
ध्याइ॥१७॥चौपई॥अबसुनिअष्टादशोंअध्या
इ॥सुनतसहजसबतापमिराइ॥जामेंकृष्णके
लिअभिराम॥हतिहैंअसुरप्रलंबहिराम॥१॥श्री
शुककहतकिहोनृपशत्तम॥अवरएकलीला
सुनिउत्तम॥गोपवेषकरिअद्भुतसोहत॥रामकृ
ष्णसबकेमनमोहत॥२॥सहजहीतहांआयो
रितुग्रीषम॥सबजंतनिकोंनिपटहीभीषम॥अ
तिनिदाघजहांअसमुधिनाही॥दादुररहेंफनी
फनछाही॥३॥सोजबवृंदावनमधिआयो॥स

रसवसंतसमानसुहायो॥ ठांठागिरिनितेनिर्झ
रझैरे॥ तेसीतलजलधरसंचैरें॥४॥ तिनतेचल
तजुसलितागहरी॥ द्रहद्रहलौंपरसतलहरी॥
वङ्करोंमधिमधसुंदरसरवर॥ रसझूमेरेधूमेरत
रवर॥५॥ तिनढिगढिगहरिततृणसरसे॥ तरनि
किरनिनेकनहींपरसे॥ वरनवरनसुकुसमज
हांफूले॥ डोलतलंपटअलिकुलझूले॥६॥ स
रनिमेंसरसीरुहरसभरे॥ मधुकरनिकरनि
चंचलकरे॥ कदलिनितेघनसारतुसार॥ ह्वैर
ह्योवनदुहिंनआकार॥७॥ सीतलमंदसुगंध
समीर॥ कहींनपरतिअतिपरमलभीर॥ केकी
कोकिलकीरजुगावत॥ सुरपुरकेगंधर्वरिझाव
त॥८॥ इहिविधिवृंदावनछविपावत॥ तहा
मनमोहनधेनुचरावत॥ वलसमेतव्रजवाल
समेत॥ विहरतविपनहिअतिसुषदेत॥९॥

नानाविधिकेषेलनिषेलत॥कहूंडेलनिकहूं
बेलनिमेलत॥कहूंलैदलफलफूलग्वाल॥
रचिरचिपहरतभूषणमाल॥२०॥कहूंइकब
रहिंडोरवनावत॥आपुनझूलतसषनिझुला
वत॥मुरलीवजावतमिलिकछुगावत॥वनके
षगनगमृगनिरिझावत॥२१॥कवहूंराजसि
घासनवानत॥छत्रचवरपहुपनिकेठानत॥
राजाह्वैराजतअतिगाजत॥छबिबिछाजतदुं
दुभिगतिवाजत॥२२॥येलौकिकलरिकनि
कीनाई॥षेलतषेलजगतकेसांई॥असुरषल
बेगोपकेवानक॥आनिमिल्यातिनमांझअ
चानक॥२३॥दोहरा॥गोपवंशअवतंसहि
तप्रेरयोकंसनृसंस॥परमहंसगणमध्यजिम
वनिआवतवककवेस॥२४॥चोपई॥श्रीहरिक
व रितेंहीवहपायो॥तजिवहषेलअवरउपजा

यो॥कहतकिसुनन्दनियाहीहारी॥आवक्कु
खेलहिवटिवटिवारी॥२५॥चढाचढीखेलहिव
दिठांव॥धरिधरिआवक्कुअपनेनांव॥जोहारे
सोलेइचढाइ॥बटभांडीरतीरलैजाइ॥२६॥म
लोमलोकहिकिलकेहसे॥ललितकटिनिफ
टहेपटकसे॥नाइककरेस्यामवलराम॥आव
नलागेधरिधरिनाम॥२७॥कोउरविचंदकोऊ
अरविंद कोउरसमकंदमुकुंदगोविंद परलेवा
दिग्वालगनजिते नंदकिशोरऔरगरातिते
॥२८॥श्रीदामावृषभादिकग्वाल वलदिस
गराव जावतगाल जमुनापुलिनललितचौ
गान खेलनलगेजानमनिजान॥२९॥लेगरा
मारिटोलवलप्यारे कमलनेंनदिससवही
हारे श्रीदामाहरिपरचढिचले वलपुलंवप
रलागतभले॥३०॥हरिपरवन्यो श्रीदामाऔ

सें॥सरद चंदऊपरगुरुजैसे॥सोउपमाअवक
हियैकेसें॥वलवुलंवपरसोहैजैसे॥२१॥का
न्हकुवरतेदिष्षिवचाइ असुरअवधितेआगे
जाइ अपनेरूपहिआश्रितनयो तनकमें
अंबरलोवढिगयो॥३२२॥पहिरेकंचनभूषन
कारो तिहिछिनलग्योभयानकभारो तापर
वलभैयाअतिसोहै उज्जलतनछविदिष्षि
सवमोहै॥२३॥जैसेंभारीकारीघटा ऊपरठा
ठांचमकैछुटा तापरहोइसरदकोचंद त्यों
तहांवन्योरोहनीनंद॥२४॥विकटभ्रुभृकुटीव
डडेदंत॥विकटवदननहगअगिनिवमंत॥तपत
तामुसेकेसभुलसे॥हलधरदिषितवरंचकत्र
से॥२५॥पुनिसुधिआइमंदमुसकाइ॥दईमुष्टि
कामूडवनाइ॥किरचकिरचह्वैगयोलिलार॥
मुषतेचलीरुधिरकीधार॥२६॥पस्योवुलंवन

सोंबोलेनंदलाल॥मू॰ नयनगाइबछवाल॥२६॥
जबसबदृगमुद्रितभए तबहरिअगिनिपानकरि
गए दृगउघारिजोचहंहिअभीर ठाढेबटभांडी
रकेतीर॥२७॥हरितनचितैसुविस्मयपाए कहं
तकिकितहेकितहमआए यहैनंदकोकान्ह
कआहि नियामनुजजिनजानहुयाहि॥२८॥दे
वनिकोजुदेवहेकोइ आयोहैयहब्रजमेंसोइ
ऐसेंकहततसषासुदभेरे तिनतनदिषिमोहनह
सिपेरे॥२९॥नंदसुवनकोहसिबोजुहे जगतमो
हनीमायासुहे श्रीदामादिग्वालगनजिते षेल
मेंहरिसोंतितहीतिते॥२०॥ऐसीठारवनेजबआ
इ तबकहाअनलपियोहेजाइ॥दोहा॥सुनेजु
कोहरिचरितैऊंनबिशअध्याइ॥पापनपरसेनंद
तिहिमदमिनिदलजलन्याइ॥२१॥इतिश्रीदश
मस्कंधेमहापुराणेकृष्णदीपिकायांनंददासकृति

के
गु
मध्य३

भाषायांऊनविंशोध्याइ॥१९॥ चोपईछंद॥ अव
सुनिलेवीसवेंअध्याइ॥ बरननजहांहैरितुके
भाइ॥इकवरषाअरुसरदसुदार॥बिहरतजहां
ब्रजराजकुमार॥१॥ ग्रीष्महीग्रा बटग्रगरितत
हां॥सबजंतनिकोउद्भवजहां॥छुभितगगनप
वनसंचरे॥रबिअरुससिकोमंडलपरे॥२॥नी
लवरननीरदऊनए॥गरजिगरजिनभछादत
भए॥जैसेसगुनब्रह्मयहजीय॥सतरजतमक
रिआहतकीय॥३॥अष्टमासधराकोजलजि
रश्मिनिकरिरविपीयततितो॥चारिमासपुनि
निर्झरझरे॥सबदुषहरैसुषनिविस्तरे॥४॥जै
सेंन्रपअपनोंकरलेइ॥समयपायपुनिपरजैदे
इ॥तडितहगनिकरिमेघमहंत॥निरषितापत
पसबजंत॥५॥प्रेरेपवनसुजीवनवरषे सबनि
केदुषकरषेमनहरषे जैसेंकरुणापुरुषपर

हेत॥ अपनेप्यारेप्रानानिदेत॥ ६॥ ग्रीषमतप
करिकृशाकरि धरनी॥ सरसभईसोहतवरव
रनी॥ ज्योंसकामकोऊफलकोंपाइ॥ भोगनिजुग
तपुसिद्धिकैजाइ॥ ७॥ सांझसमेंपटवीजनाचमके॥
घनकरिछिएनछिननिदमकै॥ ज्योंकलिविषैंपा
पपाषंड॥ नहिननिगमकेधर्मप्रचंड॥ ८॥ घनगर
जनिसुनिमुदितजुभेक बोलेधानिअनेकअनेक
ज्योंगुरुआज्ञासुनिचटसार चटापढितउठतएक
हीवार॥ ९॥ पाछेंशुक्रकृतीजेभरिता उत्पथच
लींवक्रतजलभरिता अजितेंद्रियनरुज्योंइतरा
इ देहगेहधनसंपतिपाइ॥ १०॥ बुढीलुढीजुहरित
भईधरनी उछलिधुछविफविहियहरनी जनुको
ऊभूपतिउतसोआइ छत्रतनाइविछोंनिवि
छाइ॥ ११॥ निपजेछेत्रकांगुनीधान तिनहिनि
रषिहरषेजुकिसान धनीलोकउपतापहिजा

ही॥देवाधीनजुजानतनाही॥२२॥जलैंथलके
वासीजिते जलसेवनकरिसोहेतिते जैसेहरि
सेवाकरिकोइ रुचिररूपअतिराजतहोइ
॥२३॥सरितसंगकरिछुभितजुसिंध॥उमगि
ऊरमीह्वैगयोअंध॥ज्योंअपक्कजोगीचितुधा
इ॥विषयनिपाइभ्रष्टह्वैजाइ॥२४॥गिरिगनप
रजलधरबरबरसे अैंपरिगिरिकछूविथानप
रसे सरसेपैनिरसेनहिअैसे कष्टपाइसज्ज
नजैसे॥२५॥मारगठौरठौरतृनछाए पंथच
लतपथिकनिभ्रमभए ज्योंअभ्यासबिनुविह
सवेद समझिनपैंअर्थपदभेद॥२६॥मेघनि
विषैअलपजलपरे तडिभईचपलनेहपरह
रे ज्योंलंपटजुवतीजगमाही निधनुनयेपुरु
षहितजिजाही॥२७॥घनघमडिनिमधिचाप
सुरेस बिनगुनसोभितभयोसुदेस प्रगटप्रपं

चजगतमेंजैसें॥निर्गुनपुरुषबिराजततैसें॥१८॥
गगनमेंसघनघननिकरिछयो॥तहांउडराजजन
राजतमयो॥लपटिअहंताममताजेसें॥जगमेंजी
वनसोहततैसें॥१९॥सुनिकेसुंदरघनहरघोर॥नं
दिअनंदवनकुहककेमोर॥जेसेंग्रहनिविषैडुषपा
इ॥रहतहेंग्रही विरागहिआइ॥२०॥तिनकेंजा
हिसंतजनजेसें॥डुषहरनेंसुषकरनेंतैसें॥सरिन
केतटतहांकंटककीच॥चक्रवाकबसेतिनहीं
बीच॥२१॥ज्योंकुचीलघरनिमेंगवार॥वसतहें
विवसउदरव्योहार॥इंद्रकेवर[illegible]तजलभरना
री॥टूटिफूटिगईसबेमिडवारी॥२२॥ज्योंकलि
विषेंदंभरससवाद॥लोपहिभई वेदमरजाद॥
पकेंअविजामुनिअरुदाष॥मधकरषजूरसुला
षनिलाष॥२३॥तहांमनमोहनधेंनुचरावत॥व
लबालकसमेतछविपावत॥सीसनिसुंदरछ

तनादियें॥कंचनलकुटकरनिमेलियें॥२४॥सो
हतिसिरनिकसंनीषोरी॥लालनचोड्मनोरग
वोरी॥मुरलीमधुरमलारजुगावत॥उघेरअवुंद
फिरिघुरिआवत॥२५॥भीजिवसनसुंदरतन
लपटनि॥हगनिवंतकोंअतिसुषदपटनि॥ज
वहरिधेनुवुलावतवनमें॥फूलीनहिसमा
ततनमनमें॥२६॥चलिनसकतओंहनिके
भार॥आवतिइवतदूधकीधार॥ठाठाढु मति
भयेमधुनयें निरषिवनौकसभमुदितन
ये॥२७॥गिरितेगिरतजुजलकीधार॥तिनते
उठतनादझंकार॥वलसमेतव्रजवालसमे
त॥निरषतिडोलतरमानिकेत॥२८॥पवन
सहितजववरषतमेह॥परसतसीतसुको
मलदेह॥तवकंदरकदंवकेमूलनि॥उरति
हेजाइकलिंदीकूलनि॥२९॥कवहुंसव

छजलनितटजाइ॥ मिलनिकेथ्यारकचोरवना
इ॥ दधिओदनब्यंजनविस्तरैं॥ वैठिपरसपरभो
जनकरैं॥३०॥ अवरअनेकबिहारउदार॥ कर
तविपनब्रजराजकुमार॥ दोहरा॥ उपमाप्राव्
टकालकीउपादेयअरुहेय॥ जिनंमुनतिस के
हजसकलमलतिलअंजुलिदेय॥३१॥ चौपई॥
सरदसमेमनभायोभावन स्वछसलिलअरु
अनिलसुहावन पानीपकुनेसेचलिबसे सर
निमेंसरसिजछबिसोलसे॥३२॥ ज्योंजोगीजन
मनबहिपरे बहुरिजोगबलनिमलकरे गग
नकेघनजलमलभुवपंक जंतनिकीसंकीरन
संक सरदहरतभयोसहजहीअसें॥ कृष्णभ
क्तिआश्रमदुपजेसे॥ अपनोसर्वसुदैकरि महं
राजतभ्रोसुउज्जलदेह॥३४॥ सुतवितइ ह्ना
परहरिजेसें सोहतमुनिविनकल्मषतैसें ॥

रिवरनिर्मलजलकीधार॥कहूभवतकहूना
हिनढार॥३५॥जैसेंज्ञानअमृतकोज्ञानी दे
हिनदेहिदयारसवानी अलपजलनिमेंजल
चररहै छीनहोतजलनाहिनेलहै॥३६॥ज्यो
नरमूढछिनहिछिनमाही छीजतआयुसु
जानतनाही तुछसलिलकेपुनिएमीन सं
दतापतपिमरतुदीन॥३७॥कृपनदरिद्रकुटं
बीजेसें अजितेंद्रियदुषभरतहैतैसें शानैश
नैछलपंकमिटाई बीरुधदूननिकीगईक
चाई॥३८॥ज्योमुनिधीरशरीरनिविषै तजत
अहंताममताइषै सुंदरसरदागमजवभयो
निश्चलजलसमुद्रह्वैगयो॥३९॥आत्माविषै
एकचितजैसें त्यक्तक्रियामुनिराजततैसें॥
क्यारनुविषैकिसाननुबारि ढांढेरोकेसुदृढ
सुधारि॥४०॥ज्योइंद्रिनुतेंभ्रवतहेज्ञान रोकि

लेत जोगीजन जानि ॥ सरद अरक दिन तपत जु
दई ॥ उडप उदित ह्वै सब हरि लई ॥४१॥ ज्यों दे
हाभिमान कों ज्ञान ब्रजजुवती दुष कों भगवा
न विनु घनगगन सु सोभित जहा उदित अम
ल तारागन तहा ॥४२॥ जैसें सुद्ध चित्त अति सर
से शास्त्र ब्रह्म के अर्थ हि दरसें शसि अषंड मंड
ल जु गगन में राजत भयौ न छत्रगनन में ॥४३
ज्यों जदुकुल करि अवनी ऐन ॥ राजत कृस्न क
मलदलनैंन ॥ गोमृगषगजुवती रस रई ॥ सरद
समें पद्मावती भई ॥४४॥ तिनके संग पति फि
रति है ऐसें ॥ कृस्न कियनि पाछैं फलु जैसें ॥ र
वि के उगत कमलकुल लसे ॥ कुमुदनि हसें स
कुच ग्यो त्रसे ॥४५॥ नृप प्रताप जिमन भैय साध
दुरत भोर मन ये चोर असाध ॥ दोहरा ॥ सुनैं जु उप
मा सरद वार इहि बिसयें अध्याइ सरद समें के नी

रजिममननिर्मलह्वैजाइ॥४६॥नंदहेहरीदीप
जिमकरिविसवोंअधाइ॥नेहतैलमरिकंठध
को रिडुक्कुदिसँतमजाइ॥४७॥इतिश्रीदशमस्कंधेम
हापुरानेकृष्णदीपिकायांनंददासकृतिभाषायांवि
शोध्याइ॥२०॥चौपई॥अवसुनिइकईसवोंअध्या
इ॥सरदसमेंवृंदावनआइ॥वेनुबजेहैमोहन
लाल॥तिहिसुनिसुंदरबृजकीबाल॥१॥वर्नेनक
रिहैंपरमपुनीत अहोमीतसुनिगोपीगीत॥श्री
शुकोवाच॥सरदस्वछजलकमलजितेक॥प्रफु
वाइ लितभएअनेकअनेक॥२॥तिनकीबासुँलेग
यौ॥ताकरिसबवनबासितभयौ॥तिहिवन
अच्युतमोहनलाल॥गवनेवलबालकगोपा
ल॥३॥औरोसुसमकुसुमगनफूले॥मधुकर
मत्तभ्रमततहांभूले॥तरवरसरवरकेषगजिते
मुदभरेकरतकुलाहलतिते॥४॥जहांगिरिगि

धनसेछविछए॥ नितसरसतबरसतसुषनए
तहांनंदनंदनचारतधेनु॥ मधकरमधकरधकनिवा
नतवेनु॥५॥ सोवहवेनुगीतसुरसाल सुनति
नईब्रजमेंब्रजबाल बढ्योंजुतनमनप्रेमअ
नंग॥ मनुउतहीहैंहरिकेसंग॥६॥ बरनति
नईसंषिनप्रतिऐसें परतषिकान्हकुवरबर
जैसें हेसषीदिषिनटवरबपुधरैं करननिक
मलकरिनिकाकैरें॥७॥ बरहमुकुटचटकीचो लो
माथ॥ फिरतिसुकमलदाहिनेहाथ॥ राजति
उरबैजंतीमाल॥ चलतसुमत्तदुरदकीचाल॥
॥८॥ अधरसुधामुरलीकेरंध्रनि॥ निकसतिमि
लिसुरसनसुगंधनि॥ ताकरिसबवनुधपित
कियो॥ कान्हमांझरह्योनहिहियो॥९॥ निजु
पदअंकितनितकमनीय हेंदारंन्यपरमरम
नीय तहांप्रवेसकरतछबिपावत गोपहंद

बलकी रति गावत ॥२०॥ मोहन मंत्र सों मुरली
रागु ॥ सुनि के ब्रजतिय भरि अनुरागु ॥ बरननि
करति भई मिलि ऐसें ॥ हरि परिरंभन निर्दृत है जै
सें ॥२१॥ गोप्य ऊचुः ॥ हे सषि नैननि कौ फलु यहै
सुंदर प्रियतम दरसन चहै ॥ तिन कें कछु फल प्रिय
दरसन फेरें ॥ छिनहि छिन वदन विलोकनि करैं ॥

अवरु ॥२२॥ यातैं नहि न कछु परैं ॥ निसि वासर अव
लोकनि करैं ॥ सो फल सषनि सहित वन घन में
बल समेत डोलत गोगन में ॥२३॥ मधुर मधुर
धुनि वेनु वजावत ॥ अनेक रागु रागिनि उपजा
वत ॥ ताननि संग स्निग्ध कटाछै ॥ चलतु जु मं
द हसनि के पाछै ॥२४॥ जिन करि वह सुंदर मुष
चह्यौ ॥ नैननि कौ फल तिन ही लह्यौ ॥ अन्या
॥ हे सषी अवर एक छवि लही ॥ प्रिय घनस्या
म रामतन चहौ ॥२५॥ नूतप्रवालपकुपवरगु

जा

त॥ मत्तमयूर चंद्रिका स्व त॥ छबिपुंजा गुंवलि
पहिरै॥ तिनतेउठति जुछबिलहिरै॥ २६॥ कमल की
दलनिकी काछनी काछे॥ धातुविचित्रवन्योतन
आछें॥ चटकीलोपटकटितटलसे॥ नीलपीतदा
मिनिकोंहसै॥ २७॥ सषिनिमध्धि दिषिराजतकेसे
रंगभूमिविविनटवरजेसे॥ अन्याह॥ हेसषीय
हयुवेनुरंगभीनो॥ इनधोंकवनपुंन्यहेकीनो॥
॥२८॥ अधरसुधासरवस्वहमारो॥ ताकोंनिधरक
पीवनहारो॥ अरुदिषिजिनकेजलकरिपुष्ट॥ ते
सरितालषियतअतितुष्ट॥ २९॥ तिनमधिनहि
विगसेजलजात॥ जनुआनंदभरिपुलिकतगा
त॥ अरुदिषिसषीवनकेद्रुमजिते॥ मधधारा
धारबरषततिते॥ ३०॥ कहतकिधनिधनिहमरो
वंस॥ जामेंउपज्योयहवरवंस॥ मधुनम्रवतअ
तिहरषजुभरी॥ दृगनितेजनुआनंदजलढरे॥ ३१

ज्यौकुलवधूअपनेकुलमहियां॥निरषिनिरषि
हरिसेवगकहियां॥अतिप्रमोदभरिहगभरिनी
र॥सींचतजैसेंसकलसरीर॥२२॥अन्याह॥हेस
षिवृंदावनभुवकीरति॥सुरगतेअधिकभईसु
निईरति॥जसुमतिसुतपदपंकजकरिकै॥पा
ईहैछबिसंपतिभरिकै॥२३॥अरूढिपिसषी
नंदनंदनकांति॥प्रसरतिनीलमेघकीभांति॥
ताकौंआगमघनमनिकै॥मुरलीध्वनिगरजनि
जनिकै॥२४॥नृत्यतमत्तमोरछबिछया॥औरबि
हंगचित्रसेभए॥अनतनाहिसुनियतयहबात
यातेभुवकीरतिबिष्यात॥२५॥अपराआहि॥हे
सषीधनिइहिवनकीहरनी॥जदपिमूढमति॥
तिनकीकरनी॥वेनुनादसुनिअतिसचपावति
पतिनसहितचलिहरिपैआवति॥२६॥सुंदर
नंदकुवरकेभेष॥निरषतिलगतिननेंननिमेष

प्रेमचरितअवलोकनकूजे॥ आदरसहितहरि
हिजनुपूजै॥ २७॥ हमरेपतिजुगोपअतिमंद॥
जबउतकेनिकसेनंदनंद॥ तबजोहमअवलो
कनिकरें॥ सहिनपरेअवेरजियधरें॥ २८॥ अप
राहि॥ हेसषिअवरचरितइकचहो॥ गगनमेंसु
रवनिताकिनलहो॥ बैठीजदपिविवाननिमहि
यां॥ अपनेपियनिसोंटेगरबहियां॥ २९॥ दि
ष्टिपरेसांवरेअनूप॥ निपटहीबनिताउत्सवरू
प॥ पुनिसुनिवेनुगीतगतिगई॥ कलनहिपर
तबिकलह्वैगई॥ ३०॥ लगेजुसरसुमारमारके
षसतजुकुसुमकवरिभारके॥ धीरजहेरेहियेपु
निहेरे॥ नीबीबंधनषसिषसिपरे॥ ३१॥ अन्याहि
हेसषिहेवबधूनिकीरहो॥ तुमइनगैयनितन
किनचहो॥ हरिमुषतेजुस्रवतहेवाल॥ बेणु
गीतपीऊषरसाल॥ ३२॥ स्रवनउठाइपियत

८१

की

हे अैसे ॥ नेंककहूंछरिजाइनजैसे ॥ अरुदेषक्‍रु
वछियनिंआर ॥ सुनिकेबेनुगीतचितचार ॥
॥ ३३ ॥ पियतिनथनमुषभरिरहेषीर ॥ चित्रसे
लिषितगैयनिकेतीर ॥ गांइवृषभवछियांवछ
जिते ॥ हरितनइकटकचितवततिते ॥ ३४ ॥ हग

अैंग

निकेमगमोहनकहियां ॥ धरिकेअपअपनेहि
यमहियां ॥ पुनिपुनितहांपरिंभनिकरे ॥ अ
तिसुषआनंदअसुवाटरे ॥ ३५ ॥ अपराहि ॥ हे
सषिवनबिहंगकिनहेरो ॥ सुनितवेणगीतपि
यकेरो ॥ बेठरुचिरद्रुमनिकीडारें ॥ इकटकमो
हनवदननिहारे ॥ ३६ ॥ छुवतनफलनिवद
नकछुवात ॥ अतिसुषलेतनुउमगतजात ॥
निपटचटपटीसोंमुषचहैं ॥ फलप्रवालअंत
रनहिंसहें ॥ ३७ ॥ मुनिपुनिकमफलनितजि
जैसे ॥ अपअपनीप्रकृतिसाषाबेसें ॥ कमलनें

नअवलोकनिकरे॥ फलनिकेअंतरनहिंसहे
परै॥ ३८॥ तैसेंइहिवनषगगनजिते॥ मुनीहो
नकोंजोइहेंतिते॥ अपराहि॥ हेसषिचेतनज
नकीरहो॥ येजुअचेतनतेकिनचहो॥ ३९॥
वेएकगीतमुनिसरिताजिती॥ उपजिमनोम
वबिथकितितिती॥ वीचजुभ्रमतभवरअभि
राम॥ मारतमनहिंमसूसेंकाम॥ ४०॥ लेलैअ
मलकमलउपहार॥ लहिरजुजनिकरिठार
हीठार॥ पकस्योचाहतस्यामकेपाइ॥ जेसेका
मबिथ्थामिटिजाइ॥ ४१॥ अन्याहि॥ वनमेंबल
अरुसुंदरस्याम॥ पसुचारतपरसतदिषिघा
म॥ निरषहुसजनीमेहकोनेह॥ छत्रकरिल
योअपनोंदेह॥ ४२॥ बाहकियेडोलतहिन
संग फुहीफूलबरषतभतिरंग कनकदंड।
जिमहामिनिवनी छाजितछविकछुपरति

नगनी ॥४३॥ सषा मन्यो घन घनस्याम को ॥ ना
तो मानि एक नाम को ॥ जगत्र्यारलि हरनै रस
सनै ॥ दोऊ ये आनि एक सेवनै ॥४४॥ अन्या हिम
हंकारोक्ति ॥ हे सषि मेहहने हकारहो ॥ नील नामि
नीतन किन चहो ॥ प्रमुदित इतजु फिरि तहे स
षी मेंडकडन के मन की लषी ॥४५॥ भ्रियाउर जकुं
कुमरस पगे ॥ ते कुंकुम हरि पियपगाय पगे ॥ पग
नि ते वन टन रूषितभए ॥ ते हनसवर तिय
निलषि पए ॥४६॥ तिहि कुंकुम हि षिव ढिग
यो काम ॥ विकलनई नीलनि की नाम ॥ सो
कुंकुम मुषकुच निलगावति ॥ ताकरि मन म
थविथ्यासिरावति ॥४७॥ याते धनि धनि नील
नितिया ॥ हमनक छूतर फतहे हिया ॥ कष्टि
ताह ॥ देषकु सषि गोवरधन कहिंया ॥ परमश्रे
ष्ट हरिदासनि महिंया ॥४८॥ राम कृष्ण पद प

रसनकरिकै॥ रह्यौ सु अति आनंदनि भरिकै॥ न
वनव तॄण अंकुर छबि छए॥ रोम रोम जनु उत्थि
त भए॥ ४९॥ गोप वृंद गोबिंद समेत॥ आदर स
हिं सब निसु ष देत॥ सीतल जल सुंदर तॄण सुंद
र॥ सुंदर मंदिर सी बर कंदर॥ ५०॥ कंद मूल फल
धात बिचित्रि॥ और अनेक अनेक पवित्र॥ तिन
करि सेवत सब सुषदाइक॥ धन्य धन्य गोधन नि
रिझाइक॥ ५१॥ काव्य दोहा॥ हे सषी गिरि गोधन
की रहो सुंदर नंदकुंवर छबि चहो अद्भुत गोप
बेष बाकरें सेली कांध सु मुनि मन हरें॥ ५२॥ बांढी
गाइ गहन के काज लिये फिरत ग्वालनि में सा
ज तैसियै रूप माधुरी मासै रंगरली मुरली म
धुरा सै॥ ५३॥ ताकरि हेरम बनिं हिये चरकी
ने थिर थिर चर किये अहो मित्र इहि बिधि ब्रज
गोपी नंद सुवन लीला रस ओपी॥ ५४॥ बेढि पर

त

के

सपरबरनतिमई॥प्रेमविवसतनमनउद्धैगई॥ता
करिवढ्यौजुप्रेमअनंग॥रह्यौचहेहरिप्रियतम
संग॥५५॥तवकात्यायनिअर्चनकर्यौ॥पायौप
रमउदयरसमनर्यौ॥दोहरा॥नंदइकीसअध्याइ
यहऐसेंसुनिचितचाहि॥प्रियाबचनजिमपी
यकेंसुनिबोईफलआहि॥५६॥इतिश्रीदशमस्कं
धेमहापुराणेकलदीपिकायांनंददासकृतिभाषायां
वेनुगीतवर्ननंनामएकविंशोध्याइ॥२१॥चौपई॥
द्वाविंशतिअध्याइसुनिमित्र॥वस्त्रहरनमनह
रनपवित्र॥नंदगोपव्रजकीदारिका॥अद्भुतअ
द्भुतसुकुमारिका॥१॥जदपिसमस्तविवाहित
आहि॥नंदसुवनकेरूपहिचाहि॥विवसभई
पतिपतियरहरिहरि॥करतिभईव्रतहरिहिय
धरिधरि॥२॥हिमरितुप्रथममासअभिराम
देवीकात्यायनीजुनाम॥तिहिपूजनजमुना

तटन्हाहि॥तहांन्हाहिहवैषकलुषाहि॥३॥
उठहिवडेषनचाइनिचाइनि॥वोलतछविसों
लैलैनाइनि॥आगमोक्तिकरितिनकेनामकहि
यतिहैं॥प्रेमकलाविमलारतिकला॥कामक
लाकमलाचंचला॥४॥चंद्रकलाचंद्रावलिचं
द्रनि॥जगवंदनिवृषभानकीनंदनि॥कामल
ताललितारसबेलि॥रूपलताचंपलताएलि
॥५॥अवरअनेकनहिनकहिपरैं॥चंचलनय
नमयनमनहरैं॥सबदिसतेंआवतिअतिभा
वति॥भुजभुजजोरिचलतछविपावति॥६॥
नूतनमंगलगीतनिगावति॥अमुनाविधिज
मुनातटआवति॥करिसंकल्पसलिलमधिजा
हि॥मौनधरेंविधिसहितअन्हाहि॥७॥वहुरि
कलिंदीकूलअनुसरैं॥वारूकीवरप्रतिमाक
रैं॥दिव्यआभरनदिव्यदुकूल॥चंदनवंदनतें

डुलफूल॥८॥ प्रीतिमहिततितिहिचर्चनकरैं॥पु
निपुनिताकेपाइनिपरै॥ अथ ... गवराईअरस
वलाइक॥ महामाइवरदाइसुनाइक॥९॥दे
विदयाकरिअैसेंढरौ नंदसुवनहमरोपतिक
रौ वोलीवचनरसभरेभोरे पूर्नमनोरथहोहु
तिहारे॥१०॥कात्याइनितेयोवरुपाइ वक्रि
धसीजमुनाजलधाइ वुडिकिनिविहरतिअ
तिछविफलति जनुनवघनगनदामिनिषे
लति॥११॥तैनंतरसुंदरनंदनंदन चितकीपा
इआइजगवंदन नीरतीरतेचीरचुराइ चढ
गुविंदकदंवानजाइ॥१२॥लज्जितह्वैधसिग
ईजलमाहिं उघतजुतामेंडुतिकीलहिरैं व
दनवदनछविलषिचषिभूली कनककम
लजनुजमुनाफूली॥१३॥चपलदृगंचलपि
यमनरंजन कमलकमलजनुजुगाजुगखंज

ते

न॥ लटनिंचुवतगुजलकनजोती॥ जनुससिछिटिछिटिडारतुमोती॥२४॥ तबबोलेहरितिनतनचितै हेअबलाअनआवङुइते आनिकेअपनेअंबरगहो कतकछुभीतसीततनसहो॥२५॥ सतकहतकछूकरतनषेला आवङुचलिनबिलबकीबेला पाछेंहूमेअरुतुनकैवे बोल्योहेयेजानतसबे॥२६॥ चितेपरसपरतबसबहसी बङ्डीअषियनिअतिछबिलसी रूपउदधिमधिरसमनरिआछें मीनचलतजिममीनकेपाछें॥२७॥ सीतलसलिलकंठपरजंत तहांठाढीथरथरबेपंत तिनमधिमुगधवयसकीवाला ऐसें कहतभईतिहिकाला॥२८॥ अहोहोकान्हअनीतिनकरो बलिबलिकछूदईतेडरो नंदमहरकेसुतरावरे जानिबूझिकतहोङुवाबरे॥२९॥ देङुवसनबरेगईअसहसी मरतिहेसीतसलि

लमेंधसी॥पुनितिनमेंजोग्रोटाग्राहि॥तवोलींह
सिहरितनचाहि॥२०॥हेसुंदरवरकरहुनहासी
हमहेंसवेंतुम्हरीदासी॥जोतुमकहहुसोईह
मकरिहें॥देहुवसनविनकाजहिमरिहें॥२१॥
जोनदेहुहोरसंभाइसों॥कहिहेंजाइनंदराइ
सों॥तवबोलेव्रजराजदुलारे॥मेंसमुझेसंकल्प
तिहारे॥२२॥इतआवहुरंचकनलजावहु॥व्र
तकोफलुलेलेघरजावहु॥नंदसुवनकोमनहो
जैसें॥निकसीरसवसविकसीतेसें॥२३॥परमप्रे
मकेफंदजुपरी॥नंदकेललनषेलकीकरी॥तव
बोलेव्रजराजदुलारे॥पूरनमनोरथहोहुतिहा
रे॥२४॥पेग्रात्यंतिकनाहिनह्वेहे॥मनअभिला
षपाइपुनिजैहे॥मेरेविषैजुमतिअनुसरे॥सोम
तिवहुरिनविषेसंचरे॥२५॥भजितधानजगत
मेंजैसें॥वीजकेकाजनआवेतेसें॥ग्रेपरिजोमो

इछाहोइ॥ नृज्योऊबीजनिपजिपरैसोइ॥२६॥
आगामिनीजामिनीअहै॥ तिनमैंवुमहिवहुत
सुषदैहै॥ इहिविधिविरहपाइछविछुई॥ कैसे
हीकैसेकरिवुजगई॥२७॥ वसनपराएमननन॥
हिपरा॥ मनमनमोहनगोंहनलरा॥ दोहरा॥ वु
जतीयनिदेअपनपोक्ष्मलकमलहलनेन॥ जग
पतनीअपनीगनीचलेअतुग्रहिदैन॥२८॥ चौप
ई॥ तिनकेपतिशुभगतिहितहीन॥ कर्मनिविषै
निपटलवलीन॥ तिनतनहिह्यिह्यिमुसकांत॥ व
नकेडुमनिसराहितजांत॥२९॥ सषनिसोंकहत
कुवरनंदलाल॥ अहोभोजअहोओजविसाल॥
अहोसुवलअर्जुनअहोअंस॥ अहोश्रीदांमावं
सउतंस॥३०॥ देषहुयेकैसेडुमवनें॥ छत्रसेतनें
सबैगुनसनें॥ जिनकेतरहरसिथरेसिथरे॥ फलु
पियरेपियरेअरुनियरे॥३१॥ दलकरिफलकरि

फूलनिकरिकै॥वलकलकरिअरुमूलनिकरिकै
परकाजहीसवैकछुजिनकौ॥धनिहैजगमेंजीव
नुतिनकौ॥३२॥वातवरषअपनेतनसहैं॥काहू
सोकछुदुषनहिकहैं॥वैठतिआनिछाहहमसर
से॥घांममेंसुंदरसीतलघरसे॥३३॥ऐसेंकहतक
हतछविछए॥वलसमेतजमुनातटगए॥पहिलै
ता जलगाइनिकौंदियौ॥पाछैंआपुनपेपियौ॥३४
दोहरा॥विविविंसतअध्याइयह सुनैंजुहितचि
अ तलाइ॥धनुदेषंषगअवलिजिमपापवैवलिउड
जाइ॥३५॥ईतिश्रीदशमस्कंधेमहापुराणेकृस्न
दीपिकायांनंददासकृतिभाषायांचीरहंनडुमम
तोनामविविविंशोध्याइ॥२२॥चौपईछंद॥अ
वसुनित्रैविंसतअध्याइ॥द्विजअरुद्विजपतिनि
निकेभाइ॥ठाढेठकुतेजमुनकेतीर॥वलअरुसुं
दरवरवलवीर॥१॥श्रीदामादिग्वालगननजिते

आरतनएबहुधाकरितिते॥बस्त्रहरनमेंहरिकेसं
ग॥देषनगोपवधूनिकेरंग॥२॥भोरबडेषनउठि
उठिधाए॥भोजनकछूलेननहिपाए॥यातेभूषे
हैव्रजवाल॥आएतहांजहांमोहनलाल॥३॥
अहोवलरामअतुलवलधाम॥होघनस्यामप
रमअभिराम॥भूषलगीनियाउद्यमकरौ॥प्रा
नप्रहारनिपापिनिहरौ॥४॥जगिपतिनीनिअ
नुग्रहदेंन॥वोलेतवहरिकरुनाऐंन॥इतए
जाइकजज्ञहिकरें॥स्वर्गकामहितपचिपचि
मरें॥५॥तिनपेजाहुतनकनडराहु॥अरुजा
चेंज्ञातेनलजाहु॥लीजहुजाइहमारेनाम॥
वलअरुवलभैयाघनस्याम॥६॥एठाढेद्रोऊ
तरुकेंतरें॥तुमसोंकछूकप्राछेनाकरें॥जान
देहुकेवरिसिनगिजाहि॥लाजतोहमहितुम
हितोनाहि॥७॥योजवकान्हकुंवरकरिक

ह्यो॥ग्वालनियोंसम्पकनहिगह्यो॥गराजङ्ग
थरथरथरडरते॥दूरितेदंडवतनिकरिते॥८॥
अंजुलिजोरिडरातडरात॥कहनैविप्रनिसोंवा
त॥हो मूढ़देवसुनोइतहमपै॥रामकृष्णकरिपठ
एतुमपै॥९॥भोरकेआएगोधनसंग॥षेलतषेल
तअपनेंरंग॥घरतेभोजननाहिनल्याए॥भूषेह्वै
अवतुमपैआए॥१०॥अधाहोइतोओदनदीजे॥
धर्मसुविरुधकर्मकतकीजे॥कहांयहहरिईश्व
रकौजचिवो॥कहांउनिकौद्विजमदकरिमचि
वो॥११॥सुनततनसुन्यौभरेअभिमान॥जनुइन
द्विजनिकेनेननकान॥पुनिजवमोंहअमेठन
लगे॥तवएग्वालवालडरिभगे॥१२॥जिनकर्म
निमधिअधिककलेस॥फलुअनितुह्वामिटैन
अंदेस॥तिनमधिमूढधरिरहेआस॥छुट्योन
अमृतपाइअनयास॥१३॥ह्वैनिरासवालक

उठिआग॥ समाचारहरिख्रबुहिसुनाग॥ नंदकुं
वरतबहरहरहसे॥ हसतजुरहनवदनमेंलसे
॥२४॥ असकछुजगमगजगमगहोइ॥ मानिक
औपिधरेजनुपोइ॥ सषनिसोंवक्कुरिकहतरस
मने॥ रेमित्यानहिनहोकुअनमने॥२५॥ अर्थी
कैवैरागेआवे॥ सोअर्थीअर्थीनकहावे॥ जाच
कह्वैजगमेंअसकोन॥ जचतअनादरनयोन
जोंन॥२६॥ असेंलोकरीतिदिषराइ॥ पुनिवोले
प्रभुमृदुमुसकाइ॥ अहोमित्रइनकीतियकी
तियजिती॥ हमकोंनीकेंजाननतिती॥२७॥ देह
मात्रवेवसतगेहमें॥ मगनरहतइतनितसनेह
में॥ तिनपेजाकुलजाकुनमित्या॥ समफोगेतव
तिनकेहिया॥२८॥ सुनगसुगंधस्वछवरव्यंजन
दधिओदनमोदनमनरंजन॥ देहेंतातविलंबु
नलेहैं॥ अपनेकरलीयेहीओहे॥२९॥ जगपतनि

निके गृह हैं जहां ॥ सकुचित सकुचित गवनें तहां
राजति कंचन पीढनि बैठी ॥ सोहत सुंदर मोंहत अ
मेठी ॥२०॥ पहिरें अद्भुत मनिमय भूषन ॥ अद्भुत
बसन न हिन कहूं दूषन ॥ डहडहे वदन निरषि ।
सिसु भूले ॥ कंचन जलज अवन जनु फूले ॥२१॥
द्विजपतनि निके पाइनि परे ॥ बातें कहत महा मु
द भरे ॥ हे द्विजपतनि कान्ह मन मोंहन ॥ आए इ
तहि गाइ गन गोहन ॥ छुधित आहि कछु भोज
न दीजे ॥ सषनि सहित अघाइ सो कीजे ॥ जिनके
दरसन हित अरबरती ॥ पतिनि सों बिनती करती
अरती ॥२३॥ जुग जुग भरि निसवासर भरती ॥ नैंन
निनैं कनी दृत हि परती ॥ ते अच्युत ब्रजराज दुला
रे ॥ निकट ही पाए प्रान पियारे ॥२४॥ चारि प्रकार
विचित्र सुबिंजन ॥ भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य मनरं
जन ॥ लै चली कंचन भाजन भरि भरि ॥ सुतनि सों

पतिनिसौंअरिअरिलरिलरि॥२५॥सोकिरहेसुत
पतिअपनोसो॥मानतिभईताहिसपनोसो॥जे
सेंउभगतिसावनसरिता॥कोंनेंरुकहिवेंभरस पै
भरिता॥२६॥जमुनाकेनिकटसुभगइकवाग॥
सवअसोकतरुअतिवडभाग॥इकतरुतरैंकु
वरघनस्याम॥ठाढेकोटिकामअभिराम॥२७॥
पीतवसनवनमालरसाल॥मोरचंदछविछाज
तिभाल॥सषाअंसवांईभुजदियें॥केलिकम
लछिनकरकिये॥२८॥अद्भुतगुनसुनिसुनिहि
यधरिधरि॥रहींकुतीउत्कंठाभरिभरि॥सोसाह
तपूगटरसभेरी॥अतिरोचनलोचनपथपरी॥२९॥
हगरंघुनिकरिअंतरलए॥तहांप्रभुकोंपरिरंभ
नहए॥सुषितभईतिहिछिनसबअैसें॥तुरीअ
वस्थापाइसुनिजैसें॥३०॥तबबोलेहरिहेवडभाग
नीकैंआईभरिअनुराग॥प्रतिबंधकजेहुतेतिहा

रि॥तेतुमत्रिगणतेलघुकरिडारे॥३१॥मोदरमनहि
तइतिअनुसरी॥उचितकरीअनुचितनहिकरी॥
जेजननिपुनजथारथवेदी॥स्वारथअरुपरमार
थभेदी॥३२॥तेमोविषैनगतिरतिकरैं॥फलनक
छुरंचकचितधरै॥हमसबहीकेआत्माआहि॥
तत्वकेबत्तालेतहैंचाहि॥३३॥प्रानबुद्धिमनइं
द्रियदेह॥पुत्रकलत्रमित्रधनगेह॥जाकेअधा
मतेअचेत॥प्रियलागतिअपनेपममेत॥३४॥सो
तुमकरिहमपारासबै॥धनिधनिधन्यभईतुमस
तुम बै॥अबंदेवजजनप्रतिजाहु॥द्विजजज्ञनिकौ
करौनिवाहु॥३५॥तुमकरिसत्रसमापतिकरिहै
मन औरकछूनतनकँधरिहैं॥कहनलगीतवसबद्वि
जतिया॥सुनियहवातवहकिगगहिया॥३६॥
हेसुंदरवारसरसिजनेन॥जिनबोलहुअसकर
कसवैन॥अपनीप्रतज्ञातनकिनचहौ॥वेदपु

राननिमज्यौंकहौ ॥२५॥ मनक्रमवचनजुचेरौमे
रो ॥ फिरिभवभवननकरिहैफेरौ ॥ हमपदपंकज
प्रापतिभई ॥ सहजहीसवउपाधिमिटिगई ॥२६॥
पदअवसिष्टजुपरमरसाल ॥ डारहुगेगहितुल
सीमाल ॥ सोनितअलकरलकमेंधारिहै ॥ चरनसर
नपरीअरचनकरिहैं ॥२७॥ अहोअरिदमनदमन
केदारक ॥ काममोहमदलोभविदारक ॥ अबतो
पतिसुतबांधवजिते ॥ हमहितौतनकछुवैनहि
तिते ॥२८॥ तातेअवरगतिनहरिहमरी ॥ दासदे
हुदासीभईतुम्हरी ॥ तवबोलेव्रजराजकेनंद ॥ ज
गवंदनजगफंदनिकंद ॥२९॥ पतिसुतमित्रसुहृ
दजनजिते ॥ नहिनअसूयाकरिहैतिते ॥ लोकस
वेहमारकिये ॥ रोकिरहेहमसवकेहिये ॥३०॥ अ
रुद्वेषरादवजितेक ॥ हमरीआज्ञामांऊतितेक ॥
वुरोजुमानेसोवहकौन ॥ सर्वबियापीहमजिम

पौन॥४३॥ प्रेमवृद्धि जो कीनो चहौ॥ तौ तुम मो तें
न्यारी रहौ॥ बिरह में चित समाधि लाइ हौ॥ तुरत
ही तब हि मोहि पाइ हौ॥४४॥ ऐसें जब हित सौं ह
रि बरनी॥ घर आंई तब सब हि जब रनी॥ कि न हूं
नहिं न असूया कीनी॥ सुतपति सब निभु ज़ा भरि
सु लीनी॥४५॥ तिन में इक कै हूती पति गही॥ जान न पई
बहु तपचि रही॥ तब नंद सुवन सुने है जैसें॥ अ
तन पने हिय में धरि के तैसें॥४६॥ तजति भई तिहिं कों
ऐसें॥ जीरन पटु को ऊडारत जैसें॥ रपिय ज जहां मम
तु है तेरौ॥ यह लेअ व कहा करि है मेरौ॥४७॥ दिव्य
देह धरि के उहि घरी॥ सबनि तें आगें तें अनुसरी॥
तिन सों जोज्य परमगति पाई॥ उनके संग फिरि न
घर आई॥४८॥ जगपति निनि जे व्यंजन आनें॥ जे य
के गोप गोबिंद अघानें॥ द्विज जु कहावति है अति
बडे॥ तियनि की गति दिषि निपट ही गडे॥४९॥

दोहरा॥ नरद गोबिंदकी भगति बिन बडो कहावो कोइ बुझेदीपद्वं ज्यो बडो कहियतु सो गति सो ५॥ ॥चौपई॥ तिय्यनिकी भगतिहिजजिते पश्चाताप करत भगतिते जोप्रभुनिगमभ्अग मकहिगाए जाचनमिसतेहमपैअ्ाए धि गधिगहमधिगोंएक्रिया धिगधिगविप्रजनमुत्र्र रुजिया धिगवद्भुझ्ना ताधिगसवद्देषे विमुष गुरुकुलअधोह्नजविषे यहप्रभुकीमाया मोहनी जोगीजनमनकीषोहनी जाकरहम द्विजकेमदभरे गुरुकहाइसठनिमेपरे जिनकेनकछुसोचअचार गुरुकुलवासन आत्मविचार नहिजपनहितपनहिशुभक्रि या कर्कसकुटिलजटिलनितहिया तिन केनइनभगतिरतितेसी देषीमुनीनकतह्नअै सी सम्यकद्विजकर्मनिकरिनर तेहमरुषमा

निरषि

धिग

रतहैपरे॥५५॥करिजदपिसुन्यौअवतार॥जदुकु
लविषैहरनभूभार॥पुनिआएइतकरुनाकंद
जाचनपूरनपरमानंद॥५६॥औरनकहाचाहि
येतिनकै॥कमलापाइपलोटतिजिनकै॥सुमि
रिसुमिरिग्वालनकीवात॥करनमीजिसबद्विज
पछितात॥५७॥पुनिकहीहमकहुंउतमन॥म
नकेसबबसंसेमिटिगए॥जिनकीश्रीमीतियवड
भाग॥तनमननरीकुलअनुराग॥५८॥जिहि
अनुरागहमारेहियै॥चपरिकेकमलनयनिमें
किये॥दोहरा॥त्रैविंशतअध्याइयहसुनिनीकें
सुषकंद॥जपतपव्रतसंजमनकछुकुलमगति
बिनुनंद॥५९॥इतिश्रीदशमस्कंधेमहापुरानेक
लदीपिकायांनंददासकृतिभाषायांत्रयविंशोध्या
इ॥२३॥चौपई॥अबसुनिचतुरविंसअध्याइ चतु
रसिरोमनिहरिकेभाइ द्विजनिकोक्रियागर्वस

वहस्यो॥ चाहतिइंद्रहिनिमदकस्यो॥१॥ इंद्रको
नड़ाकरनजवलगे गोपीगोपसिहामुदपगे पू
छतहरिसोजानसभरो मंदसुसकिसुनहदि
गगरो॥२॥ कहहुतातयहवातहैकहा कवन
भवनसंत्रमहेमहा कवनसुफलकाकेउहैम
कवनदेवतासमसमहेस॥३॥ मोमनअतिअभि
लाषकहो लरिकाजानचाइजिनरहो यहक
रनीतुमसासुतेपाई अकिधोपरंपराचलिआ
ई॥४॥ अकिधोलोकरूढहैतात मासोंकहहु
सबैयहवात नंदसूकहतमेघगनजिते मघ
वाकेवसवर्तीतिते॥५॥ अपनोजीवनुजगमेंब
रषें डुषकरषेसबजंतनिहरषे यातेयहजुपुरंद
रआहि जजतुहेंजड़ानिकरिनरताहि॥६॥ हम
हूंयहमखतिहिउहेस करतहेंज्योंरसदेइसुरे
स ताकरिधर्मअर्थअरुकाम पावहिसबेपुरु

पु

षविश्राम॥७॥परंपरा चलिआयोधर्म अहो तात
नहिअबकोकर्म जुपुरुषयाकोनाहिनकरै लो
नद्वेषनयतेपरहरै॥८॥सुरुषनहिपावैकिल्या
न कहतहैवेदपुरानसुजान महानंदउपनंदसु
नंद निजानंदअरुबाबानंद॥९॥अैसेकरिजब
सबहिनिकह्यो केशवईश्वरनाहिनगह्यो सु
रपतिअतिश्रीमदकरिछयो महागरवपरब
तचढिगयो॥१०॥तहांतेताकोंडारयोचहै करम
कीगतिलियेंबातेक हे अपरिनहिपरमाणय
हनितही सुरपतिमाननंगकेहितही॥११॥इंद्र
हिरिसहिहिवाइद्वंदसों बोलेमंदहीमुसकिनं
दसों अहोतातह्यांदेवनकोई करमकीगति
शुहोइसुईहोई॥१२॥कर्महीकरिउपजतएजंत
कर्महीकरिपुनिसबकोअंत कुसलछेमसुषदु
षभयअमे होतहैंएककर्मकरिसमे॥१३॥रज

गुणकरिणउपजतमेह बरषतसबठांनहिनसंदेह
ऊषरपरपरबतपरपरै तेकहासबेजङ्गिहैकरैं
॥२३॥हमरैनहिपुरुपत्तनग्राम बनगिरिनदी
निकटबिश्राम जहांसुषतहांहमवसैनिसंक
करिहैकहापुरंदररंक॥२४॥एकेकरङ्कु जङ्गक
रिजिती करतेसुवैसामिग्रीतिती ताकरिवि न
प्रगाइगिरिगोधन पूजङ्कुसकलअमंगलसो
धन॥२६॥सुनतिहीमोहनमुषमधबानी भलो
भलोकहिसवहिनमानी कुलमंडनसपूतसु
षदेना सबकीजीवनिसबकेनैना॥२७॥रचङ्कुवि
बिधिपरकरसौविंजन सुनगसुगंधसवहमनरं
जन पुवासुहारीमोदकनारी गूफारसमूफाद
धिन्यारी॥२८॥मिश्रीमिश्रितपायसकरो बरसं
जावभावविस्तरो सुङ्कुकीदासीघतकीव्याली
रसकेकंदरसुंदरशाली॥२९॥जैसेंकमलनेन

२०७
२०६

उचस्यौ॥ प्रीतिमहि ततैंसें हीकस्यौ॥ पूजन चले
गोपगिरि गोधन॥ आगेंकरिलए अपने गोधन॥
॥२०॥ कंचनमकटनिचटिचटिगोपी चलीजु
तिनहूंसबछविआपी सुंदरनंदसुवनगुनगा
वति रागनरीसबरागरिझावति॥२१॥ हरिधरि
गिरिकौअद्भुतरूप बैठेनिकसिसुबिकसिअ
नूप गिरिनिकेंहैहैरूपबताए इकचेतनइक
ज डनिसुहाए॥२२॥ गोवरधनकीमूरतिदुसरी
द्विबि आगेगोबिंदचंदहितकुसरी द्विषिगोपमहामु
नि दनेरे नमोनमोकहिपाइँपरे॥२३॥ तिनके
संगरंगहरिकैं रे अपनेंपाइनिआपुहीपरें
जेतकभोजनब्रजतेआयौ गिरिरूपीहरिसिग
रौषायौ॥२४॥ नईप्रतीतिभेरमुदभारी देहिप्र
ना दक्षिनरुअरुनारी फिरितजुछविवादीतिहि
काला गिरिगरेंजनुमनिकंचनमाला॥२५॥ क

हनलगेदिषितुम्हरौकाजा प्रगटनयोयहगिरि
जिकौराजा यहहैमेघह्वैतरषावरषै कालरूप
ह्वैयहआकरषै॥२६॥ विछीव्याल हक्ककेहरि
जिते याकेडरछुमकतनतिते असेंकहिसु
निपाइनिपरे घरआएआनंदनिभरे॥२७॥दो
हरा॥ चतुरविंशअध्याइयहकोऊचतुरसुनिहै
सु॥जेदिनवीतेअवसुनेतिनकोंसिरधुनिहैसु
॥२८॥इतिश्रीदशमस्कंधेमहापुराणेकलदीप
कायांनंददासकृतभाषायांचतुरविंशोध्याय॥२४
चौपई॥ अवसुनिचविंशअध्याइ पंचविंशनिमै पं
लह्वैजाइ सुनिकैइंद्रनस्योरिसभारी लागो
देंनसबनिकोंगारी॥१॥धनमदअंधनंदकोवेटा
सोभनयोहमरेमषकोमेटा ताकेबलमोसोंकर
खांति रहिहैंकितहिगोपकिहिभांति॥२॥ ज्यों

२०१०

२२०

कोऊउरनपुछकरधारे तस्योचहैसठसिंक्रऋ
पारे झूठकीज्योंकोऊनावबनावै मूढतहांले
कुटबचढावै॥३॥असेगोपनिकृस्नसों
महाबिरुद्धकियोहैमोसों अबदेषहुकैसीसि
षलाऊं गोकुलगांवहिषोदिवहांऊ॥४॥बोले
मेघनिकेगनसोइ जिनकेजलजगुपरलैहोइ
जाहुबेगिजहांनंदकोगोकुल दूरिकरोतहां
तेसबकोकुल॥५॥मित्रकहतअहोजिनकेना
इक कृस्नकमललोचनसुषदाइक दाहन
कहतहैतिनकीकुटी इंद्रमंदकीचारोंफुटी
॥६॥नंदकहतश्रीमदसबअैसे सुनेनसुतकु
नके बेरकेजैसें उमगेघनगनरिसभरिभरि रातेता
तेपियरेहरिहरि॥७॥तरतराहिबज्रसेपरे घ
रहराहिघनऊधमकरैं मिलेजुप्रबलवातआ

घात॥उडेजातकहिवननतन बात॥८॥परतल
गीनान्हीवुंदवारी मोटेघ्याभा निहूंतेभारी
तववृजजनजहांतहांतेधारा सुंदरनंदकुवर
पैआरा॥९॥धोरीधोरीधेनुजुदोरी बडडीवूंद
निकेंदुषबोरी नमितसुगीवपुछउचकिये
छबिलिछतिनितरवछरनिदिये॥१०॥दोहा
गाइनिकीवहआवनीबनीवनकइहिदार
जनुहरिसागरमिलनहितगंगामईसतधार
॥११॥चौपई॥गोपनिपैकहिवनतिनवात घर
घरकंपतकोमलगात होश्रीकलकलवृज
नाइक अशुनहरनशुकरनसुनाइक॥१॥
गोकुलकेतातुमहीनाथ जैसेदीनमीनकोंथ
कुपतिनयोसुरपतिमतवारो हमरोअवरुक
वनरषवारो॥१२॥बोलेहरिबिलोकितिनमाही

पा

कतमयकरतइहांमयनाही मुसैंतमुसकतसा
मसुहारा छबिसोंचलिगिरिगोधनआरा ॥२४॥
फटदैउचकिलियोगिरिऐसें ॥ सांपवैठनाकों
शिशुजैसें ॥ गोपीगोपगाइवछजिते ॥ अपनेसु
षरेहतिहितरतिते ॥२५॥ वामहस्तपरगिरिअ
सवन्यो फूलकोजनुकिछत्रुहेतन्यो ललितत्रि
भंगअंगकियेठाढे मुरलीअधाधरैंछविवाढे
॥२६॥ गिरिमूलतेजुगिरिकीधात गिरिगिरिप
रीसांवरेगात अरुणपीतसितरंगसुहारा फा
गुषेलिजनुअबहीआरा ॥२७॥ मित्रकहतअ
चिरजुमोहिये ठाढेहरित्रिभंगतनकिये हुहूं
करवेणबजावतनाथ जापरगिरिसुकवनव
हेहाथ ॥२८॥ नंदकहतअचिरजुजिनमानि गि
रिवरधरअचिरजकीषानि वामहस्तलाघव

104

ताअैसी॥ तरलअलातचक्रगतिजैसी॥१९॥ क
लकलपतरुमतहांवेने सबसुषबरमतसबर
ससने तबइकउपमांमोमनगई कहीकहत
किधोंउपजीनई॥२०॥ परबतपरतरुमोहतष
ने तरुपरपरबतहोतनसुने जलदनुवरषनला
गेपानी काकहिएकछूअकथकहानी॥२१॥
महाप्रलयकोजलहोजितौ गोवरधनपरबरषे
तितौ तापरनगषगअरुतरुबेली तिनपरकु
हीनपरीअकेली॥२२॥ इंडहूंअपनेबज्रचला
ए पातिनलगितेऊमहिआए सातदिवसअ
हुतडरुठान्यो ब्रजवासिनितनकेनहीजान्यो
॥२३॥ सुंदरबदनविलोकनिआगे भूषप्यास
नयकोनहिलागे निकसेतबजबगिरिधरना
घ्यो गोवर्द्धनुफिरितहांईराष्यो॥२४॥ प्रेमभरी

१०९९८

११२

गोपीग्वालिअरा बारहअमरनलेहिबलाई चू
मतिकरनिजसोमतिमैया इतघुरिरह्योवडोव
८३ लभैया॥२५॥नंदपरमअनँहिपाइ सुतहिरह्यो
छातीलपटाइ मुनिबरसुरबरसिधवरजिते
न बरषतकुसमैंमुदभरेतिते॥२६॥डुंडुभिधनि
दरधनिहियहरै जयजयधनिपुनिपुनिमुनि
२ करै गावतगनगंधर्वमुगाइनि नृततअपछ
रचाइनिचाइनि॥२७॥तिनमधियहअमरनि
कोरानो होरानोनिपटहीपिमानो हरिदिसत
किअपनीदिसतकै सुरनिमेंबरनहिपाइनस
कै॥२८॥करनिमीजिपछतातहैजैसे सुरपा
नकरिद्विजबरजैसे॥दोहरा॥वलअनुजहिजु
मनुजकियेजानेजगुमेंकोइ अहोनंदइहिइं
दजिमहईविगासह्योसोइ॥२९॥चोपई॥तदनं

तरगोपीअरुगोप औपेपरमप्रेमकीओप लोक
निलेनिजओकनिचले रंगनिरलेलगतिअति
भले॥३०॥तिनमेंगोपवधूसुषबरसै नूतनगी
तनिमरमनिपरसै तिनआगेंहरिअरुवलरा
म आवतकरजोरैंछबिधाम॥३१॥कछूकह
तसबकेहियहरने पङ्कपनिपरपदपंकजधर
ने षेलिसोषलिकेइहिपरकार ब्रजआएब्रज
राजकुवार॥३२॥दोहरा॥पंचबिंशअध्याइय
हयोंहियमेंधरिराषि रसिकभगतविनुआन
सोंनंदनभाषितभाषि॥३३॥ईतिश्रीदशमस्कं
धमहापुराणेकृष्णदीपिकायांनंददासकृतभा
षायांपंचविंशतिअध्याइ॥२५॥चौपई॥अबसु
निषडविंशतिअध्याइ नंदगरगकेवचनसु
नाइ समाधानगोपनिकोकरिहै बालचरित
मधपुनिविस्तरिहै॥१॥अद्भुतकमेंकुंवरका

न्हके निरषिगोपसबअतिचकमके बिस्मय
भएमहाछबिछुए मिलिकेनंदमहरपैगए॥२॥
अहोनंदयहतेरोतात यामेसबअचिरजकीबा
क्यों त पूछियेजन्महममाही हमगवारइहिलाइ
कनाही॥३॥कहांयहसातवरसकोवारो कहां
वह गोवरधनगिरिभारो करकरिउचकिलयोइहि
ऐसे मदगजराजकमलकछुजैसे॥४॥अरुज
बपूथमैबसबरवारी आंध्योनाहिनकुतीउधा
री आईजबजुबकातकतकी हेतमईबिषु
नहिकछुसकी॥५॥पीगएताकेप्राणमिलाइ
जैसेकालआइपीजाइ पुनिवहसकटबिकट
भरभस्यो तामेआनिअसुरकोऊअस्यो॥६॥त
नकचरणइनऐसेंकस्यो गिरिकूटसोउलट
हीपस्यो पुनिजबएकवरषकोभयो तृनावर्त
उडिलेनभगयो॥७॥कैसेंकंठघोटिकेमास्यो

वछुरौ आनि शिलापरडार्‍यौ अरुजबचौरी
माषनषात पकरैवाधेजसुमतिमात ॥९॥
जमलार्जुनमधिआइसुभाइ कैसेंगिरिमै
तृणगिराइ अरुवहवत्सरूपधरिआइ कै
सेंपकरैपछिलेपाइ ॥१०॥ तृयोफिराइउपरही
मस्यौ कितककपित्थमाथलेपस्यौ वकीअ
सुजबकुबछुरनिचारत आयोसबनिसधा
रतमारत ॥२०॥ पकरिकेंचोंचबिदास्यौकैसे
चीरतकोऊपटेरहिजेसे धेनकुषरअतिबल
कलमल्यौ बलहाराकेसेंतृलमल्यो ॥२१॥ ता
केवंधफडेलमकरै ऊंचेफलतिनहीकरिफेरे
गोपवेषपुनिअसुरधेव कैसेंपगपोलग्पोनबि लं
लंब ॥२२॥ पशुअरुपशुपदवानलमाही चकि
तैंचितकितहेंजाही कैसेराषिआपनेलए अ मेए
गिनहितछिनमछिनकरिगए ॥२३॥ अरु

बहकालीगरलबिसाली ताकेफनपरचढि
बनमाली तांडवनतेननचेसुकेसें देष्यासुन्यो
नकिनदूजैसें ॥२४॥ जमुनाकेसेनिविषभई
मानकुवुहरिनईकरिदई अहोनंदव्रजजन
हेजिते नरनारीपशुपंछीतिते ॥२५॥ तेरेसुत
सोंसबकीप्रीति स्वाभाइकऐसीयारीति
संकाउपजतइहितनचाहि जैसोसबकोआ
त्माआहि ॥२६॥ कितयहसातबरसंसबे फू
लसोउचकिलयोगिरितबे तातेसंकाउपज
तमहा कहोनंदसोकारनकहा ॥२७॥ तिनस
माधानव्रजराइ कहतहेंगर्गवचननिसुनाइ
नामकरनमषिलछिएलहे कगरगआरगदे
सोसोकहे ॥२८॥ याकेचारिबरनतिहिवरते
हियहरनेहितमंगलकरने उज्जलअरुनवु
हरिइकपीत अबश्रीकृस्नजुपरमपुनीत ॥

को

॥१९॥ पूरबजनममबडुरिसुततेरो पूतभयोहै
वसुदेवकेरो तातेवासुदेवइकनाम पूरनक
रिहैंसबकेकाम॥२०॥ औरुबडुततेतुवसुतके
नाम सबगुनधामपरपअभिराम रूपअनं
तकरमजुअनंत गनतगनतकोउलहेनअं
त॥२१॥ अरुयहबडुतअयकोंकरिहै तुम्ह
रीसबेआपदाहरिहै जेयासोंकरिहैंअनुराग
तिनमेंअवरनहिनबडभाग॥२२॥ अरिपरभा
वकरिसके [illegible] केसें हरिअनुसरिनिर्भयजैसें
नाराइनमधिगुनहैंजिते तेरेसुतमेंफलकत
तिते॥२३॥ श्रीकीरतिअरुसंपतिनई नाराइ
णहूंतेअधिकई यातेयाकेकरमनिमाही रंच
कविस्मयकरिबोनाही॥२४॥ सुनियेवचगनं
दकनरा गोपसबेगतविस्मयभरा॥षदोहरा॥
षडबिंशकअध्याइमधिषडबिंशकजुअनूप

सोगिरिधारउप्रभुनंदकेदृशायेत्र्प्राश्रयरूप॥२४

इतिश्रीदशमस्कंधेमहापुराणेकृत्नदीपिकायां नंददासकृतनाषायांषडविंशोत्र्प्रध्याइ॥२६॥

चौपई॥ अबसुनिसत्तविंशअध्याइ जामेंइंद मंदइतआइ बिनतीकरिपरिहरिकेपाइ जे हैघरअपराधक्षमाइ॥१॥ अद्भुतकर्मकान्हज बकस्यो छत्राकारमहागिरिधस्यो आसारते लयोव्रजराषि निबेरसुरमुनिजयजयभाषि ॥२॥ तबयहसुरराजेविषलानों आयोकितहू तेबिररानों लोगनिमुषदिषलाइनसके नंद दुलारेन्यारेतके॥३॥ तनककछूएकांतहिपाइ धाइआइहरिलैरह्योपाइ रबिसममुकटचर नपरलुठे पुनिपुनिपगनिगुठेनहीउठे॥४॥ दे ष्योसुन्योप्रभावप्रभुको गतिगयोगबेत्रिलो कीविभुको क्रमक्रमउठिउसुप्ररपरडेरे अंज

लिजोरिसकतिकछुकरै ॥५॥ होप्रभुतुमहसत्वम
यरूप एकरूपपुनिनित्यअनूप रजगुनतम
गुणयेसबडौरें तुमकछुहरिपरेतेपरें ॥६॥ ह
मरजगुनतमगुणकरिभरे अंधदुगंधरातेम
घिपरे कहांतुमनिजानंदरसररे कितहमलो
भमोहमदसरे ॥७॥ दुष्टदमनतुम्हरोअवता
र हेअद्भुतब्रजराजकुमार परमधरमकीरक्षा
करतहो हमसेदुष्टनिदंडधारत ॥८॥ जोकहो
हमरीसकतिअसकोंन तुमकछुदंडधरसकै
जोन तुमतौत्रिभुवनदालकपालक हमब्रज
केगोपालकबालक ॥९॥ तहांकहतहसिसुरप
तिवेंन हेश्रीकृष्णकमलदललेन जगतजन
कतुमगुरुतुमस्वामी सबजंतनिकेअंतरजा
मी ॥१०॥ तुमहीमहादुरत्ययकाल घोरदंडप
रचंडकराल तुमकोंउचितदंडधरिवो मोसे को

उन्मदकोमदहरिवो॥२१॥जोकहोतुम्हरोकहा
हमकियो वृजआपनोराषिहैलियो तहांकह
तसुरपतिहोनाथ तुम्हरेतनकषेलिकेसाथ
॥२२॥मोसनकोमहाअभिमान मदनहोतजा
नमनिजान नहीजान्योतुम्हरोपरभाव मत्त
भयोसुरपतिकहाव॥२३॥मंदबुद्धिनिपटही
असाध छमाकरोमेरोअपराध अबमोपरप्र
भुऐसेंढरो असअसतीमतिवुहरिनकरो॥
॥२४॥मेरोजङ्गभागुनहीहस्यो मोपरपरमअ
नुग्रहकस्यो श्रीमदकरिसुअंधहोंभयो मनरं
जनअंजनतुमदयो॥२५॥तुमईश्वरगुरुआत्मा
अपने ओरतोसवजसनिसकेसपने ऐसेस्तु
तिसरसिजनैननकी कीनीइंद्रसुअभयदैनकी
॥२६॥तवबोलेहरिढरिङहिभाइ मधुरवचन
मधेमुसकाइ अहोअमरबारहोबडभाग मे

मेट्यो जुराव रोजाग ॥१७॥ ह्वै गयो कुतो महाम
तवारो श्रीमद मान पान करि भारो नृलिगरा
हे हम तुहि ऐसे पुनि रपि काज नहै है जैसे
॥१८॥ दोहरा ॥ गरबु करो जिन नृलि को ऊअ
भिजन धन कौं पाइ नंदइंद तेको बडो दीनो गुन
धरि मिलाइ ॥१९॥ तदनंतर सुरभी इत आइ
बंदे नंद सुवन के पाइ जगमें कामधेन है तिती
आई ताके गोहन तिती ॥२०॥ स्तुति करति हैं
नैन भरति हैं पुनि पुनि के पाइ परति हैं अहो प्रभु
हो कृष्ण अमित परभाव बलि गई इहि सरल हो
सुभाव ॥२१॥ इंद मंद तो यह ही करी अजहूं मि
टत न उर धर धरी हतो कुतो इहि हरि हितै यो र
गषी सुंदर कान्ह रषारे ॥२२॥ पूरो हो उर हो यह
मंद ॥ वलि बलि तुम कक्तुक करि है इंद ॥ गाइ विप्र
देवता जितेक तुव पद पंकज परत तितेक ॥

रस

॥२३॥अबतेहमरीरछाकरो अैसेइंद्रविनाही
सरो अभिषेककोंकरनजगमगी डोलतिसुर
भिपुमरंगमगी॥२४॥अपनेपट्यकंचणघट
भरे सुनगसुगंधनिसोंररे॥गगनगंगकेजलन
वरंग अनेककरकरिअपमतंग॥२५॥कंचण
आसनपरबुजचंद बैठोरेजबसबसुषकंद
तिहिछिनगनगंधर्बहेजिते विद्याधरबरचा
रनतिते॥२६॥लगेजुपरमबिमलगुनगाव
न तनककेसुनतिहोतजनपावन न्रत्तति
अपछरात्र्अतिमुदभरी जनुनगभरीछटनि
कीछरी॥२७॥अमरनकरबरवरषतफूल स
बकेहियनसमातिनफूल होनलग्योअभि
षेकजुमहा ताछिनकीछविकहियेकहा
॥२८॥कुटिलअलकनिचुवतजलकनी ब
दनकीदुतिपुनिपरतिनगनी जनुअंबुजर

सअलिंगनवारे मुषमरिमरिडारतमतवा
रे॥२९॥धरिगोबिंदनामअभिराम पूरनम
ारसबनिकेकाम जवहीइंद्रमएगोविंद उ
मगेठाठांपरमानंद॥३०॥बढीगाङकछूप
रतिनवरनी आडोरहतिदूधकीधरनी सरित
नकीछबिजातनकही उमगिउमगिसवरस
मरवही॥३१॥सबैजंतअतिहरषितनए स
हजबिरुद्वतेऊमितिगए फूलेफूलरहतद्रुम
जिते मधुरमधुरमधुबरषततिते॥३२॥अ
न्नअनेकभातिनितनए उपजतमएबिना
हीवए नगनिकेमघिजुकुते नगजिते लेले
वेठेऊपरतिते॥३३॥समदोपुनिउत्तममो
तीजे काढिकाढिवाहिरडारीजे मंदसुगंधप
वननितसरसे करकसद्वेकहूनेकुनपरसे

॥३४॥सुरगतेसुंदरसुंदरफूल बरषिउकरतस
हतअनुकूल इंदगोबिंदहिदेअवषेक सुरनर
मुनिगनगंधर्बजितेक॥३५॥आज्ञापाइ चलेनि
जओक सुषितभएतबतेसवलोक॥दोहरा॥
सत्तविंशअध्याइजहांइंद्रमएगोविंद नेंदतनक
तिहिगाइधोकोहेकलिमलमंद॥३६॥इतिश्री
दशमस्कंधेमहापुरानेकृस्नदीपिकायांनंददास
कृतभाषायांसत्तविंशोध्याइ॥२७॥चोपई॥अ
बसुनिअष्टविंशअध्याइ पैहोजहांनिरोधकेभा
इ सुरपतिउन्मदकोमदहस्यो अबचाहतव रु
णहिवसकस्यो॥१॥सोएकादसिव्रतआचरे हरि
रज्ञाविनुकेोअनुसरे एकसमेंद्वादसिदिषियो
री उठेनंदकछूनहिमतिभोरी॥२॥सास्त्रकेवल
करिअतिकलमले अरुनोदेतेपहिलेचले जा

इजमुननिर्मलजलधसे तहांअन्हाइतेनंदनूल
से॥३॥उज्जलअंगसुकोछबिगनो फोरतइंदक
लिंदमेंमनो जपुतपुकछूकाननहिपार बरु
णकेलोगपकरिलगए॥४॥ब्रजराजकेसंगजन
जिते कूकतभरजमुनतटनिते सुनितउठेम
नमोंहनलाल अलसरसभरेनेंनविशाल॥५॥
पितकेहितआतुरगतिभए करुनालयबरुना
लयगए बरुणतरफिजोउठेअकुलाइ पगनि
मेंलोटपोटह्वैजाइ॥६॥पाछेंप्रभुपूजाअनुस
र्यो डोलतबरुनतरुनगारमस्यो उत्तमउत्तम
निधिरिधिजितीं आनिधरीहरिचरननितिती
॥२७॥डुलमदरसदिषिबढोजुहेत अरप्योस
बअपनपेसमेत पुनिपुनिमाथनाथपगधरे
अंजुलिजोरिबिनतीकछुकरे॥८॥हेप्रभुअब
हिदेहमेंधर्यो अरुसबअर्थोहिप्रापतकर्यो

तवपदपंकजदरसेपरसे कोंपुंन्यमेरेधोंसरसे ॥८॥ अरुसंसारअसारअपार नाहिलघाइक स्योंमोपातुमअपनेपरमात्मास्वामी वृह्मरूपस वांतरजामी ॥१०॥ लोकसृष्टजुसृजतयहमाया तुमतेहरिमलीमसकाया हेसर्वज्ञअज्ञजनमे रे जानेनहिनधर्मप्रभुकेरे ॥११॥ तुम्हरेपितहि गुइतलेआर कछुमारमुहिकछुनहिमार पुनिपुनिधरनिपगनिपरसीस अतिप्रसन्नकीनेंजगदीस ॥१२॥ छबिलीभांतिअपनेघर आए बृजमेघरघरमंगलगाए नंदमृजबवरु णोंपगए निरषिविभूतअतिचकित ॥१३॥ पुनिजबसुतकेपाइनिपरयो तबबृजराजअचंभेभरयो कहनलग्योगोपनिसोंवात ईश्वरहेयह मेरोतात ॥१४॥ सूक्षमगतिजोब्रह्महेकोई हमकोंसहजहीदेहेसोई असेंजवनिश्चेकरि

लसे तबगोबिंदचंदमदुहसे ॥२५॥ नक्रमनोर
थपूरनकरने जेसेबेदपुराननिवरने जिहिग
तिबिरेजोगीजनमनु जातहेक्र मक्रमकरि
तपकेपनु ॥२६॥ संसारीजनतहांकिनगने का
मकमेजुअबिद्यासने तिहिगतिपठएसवव्र
जलोइ परमतरुनकरुनामेंहोइ ॥२७॥ ब्रह्म
महीब्रह्मविषेअनुरे आहंब्रह्मकरितामेरे
देहसहितब्रह्मविषेगए तहांकेसुषतेसबअ
नमए ॥२८॥ तहांतेपुनिबैकुंठपधारे तहांके
सुषंनीकेंअवधारे मूर्तिवंतजहांचारोवेद बर
नतब्रह्मकेनानाभेद ॥२९॥ अरुजेकर्मकान्हव्र
जकेर जिनिउद्दनेआदिरगभेरे तेसबगानकरत
श्रुतिजहां नंदादिकसुनिचकिरहेतहां ॥३०॥
परीचटपटीसबकेमनमें कबदेषेंवृंदावनघ
नमें मधुरमूर्तिबिनजबअकुलाने तबफिरि

वक्रस्यौं व्रुजही आने ॥२१॥ मित्र कहत कि व्रुह्म
मधि जाइ ॥ पुनि अकुंठ बेकुंठहि पाइ। वक्रूरि ज्यु
फिरि लोकनि में आवे ॥ यह संदेह मोहि भरमा
वे ॥२२॥ नंद कहत कछु जिनके चरित्र ॥ जिनके
मन मोहन से मित्र ॥ नंद सुवन हिन मनि सम रू
प ॥ व्रुह्म वियापी जाकी धूप ॥२३॥ बेकुंठह्नं म
घि सुष जिते ॥ व्रुज व्रुंदावन ठां ठां तिते ॥दोहरा॥
अष्टविंशअध्याइ की लीला सब सुषकंद ॥ मु
कति न मन मानी जहां फिरि आरा व्रुज नंद ॥२८

॥इति श्री दशमस्कंध महापुराणे कृस्नदीपिका
टां नंददासकृत भाषायां अष्टविंशो ध्याइ ॥२८

133

श्रीराधाकृष्णायनमः॥ पंचाईध्यालिष्यते॥
वंदनकरोंकृपानिधानश्रीसुकसुभकारी
सुद्धजोतिमयरूपसदासुंदरअबिकारी ह
रिलीलारसमत्तमुदितनितबिचरतजगमें
अद्भुतगतिकहूंनहिनअटकह्वैनिकसत
नगमें॥२॥ नीलोत्पलदलस्यामअंगनवजे।
बनभ्राजे कुटिलअलकमुखकमलमनो
अलिअवलिबिराजे॥३॥ ललितविसाल
सुभालदिपतिजनोंनिकरनिशाकर कृस्न
भक्तिप्रतिबिंबतिमस्कोंकोटिदिवाकर
॥४॥ कृपारंगरसअेननेनराजितरतनारे
कृस्नरसासवपानअलसकछूघूंमघुमारे
॥५॥ श्रवनकृस्नरसभवनगंडमंडलभल
दरसे प्रेमानंदमिलीमंदमुसकनिमधु
वरसै॥६॥ उन्नतनासाअधरबिंबसुक

कछुबिछौनी॥तिनविचअद्भुतभांतिलसत
गुकछुकमसमीनी॥७॥कंबुकंठकीरेषदे
षिहरिधर्मप्रकासे॥कामक्रोधमदलोभमो
हजिहिनिरषतनासे॥८॥उरबरपरअति
छबिकीभीरकछुबरनीनजाई॥ताभीतर
जगमगतनिरंतरकुंवरकन्हाई॥९॥पीप
रपत्रअकारउदारउदरअघनासक॥रोमा
वलिफलमलतिअनेकविवेकप्रकासक
॥१०॥सुंदरछबिकीक्रांतिरोमावलिराजति
भारी॥हियेंसरोवररसभरीचलीजनुउमगि
पनारी॥११॥तारसकीकुंडिकानाभिसोभि
तअतिगहरी॥त्रिवलीतामेंललितभांति
उपजतजनुलहरी॥१२॥अतिसुंदरसकटि
देससघनजंघनसोहतअस॥जुवजनिमन
आकर्षतवर्षतप्रेमसुधारस॥१३॥गूढ

[illegible]

see Bengali commentary of जीवगोस्वामी p. 159.

जातुआजानुबाहुमदगजगतिलोलें गंगा
दिकनिपवित्रकरतअवनीपरडोलें ॥२४॥
सुंदरपदअरविंदमधुरमकरंदमधुरजहां
मुनिमनमधुकरनिकरसदासेवतलोभीत
हां ॥२५॥ जबदिनमनिश्रीकृस्नदृगनितेदू
रिभएदुरि पसरपस्योअंधियारपारसंसा
रधमडिघुरि ॥२६॥ तिमरग्रसतसबलोक
लोकदिबिदुषितदयाकर प्रगटकियोअ
द्भुतप्रभावभागवतबिभाकर ॥२७॥ जेसंसा
रअंध्यारगारमेंमगनभएपर तिनहित
अद्भुतदीपप्रगटकीनोंजुकृपाकर ॥२८॥
श्रीभागवतसुनामपरमअभिरामपरम
गति निगमसारसुकुमारकृपागुरुविना
अगमगति ॥२९॥ ताहीमेंपुनिअतिरह
स्ययहपंचाध्याई तनमेंजेसेंपंचप्रानअ

115

समुकमुनिगाई॥२०॥परमरहसिइकमि
त्रमोहितिहिआज्ञादीनी॥तातैमेयहक
थाजथामतिभाषाकीनी॥२१॥श्रीवृंदाब
नचिदघनकछुछविबरनीनजाई कृस्न
ललितलीलाकेकाजधरिजडताई॥२२॥ रह्यो
अबसुंदरश्रीवृंदावनकछुवरणसुनाऊ
सकलसिद्धिदाइकनाइकपैसबसिधिपा
ऊ॥२३॥जहांनगषगवृछलताकुंजबी
रुधतृणजेते नहिनकालगुनप्रभासदा
सोभितरहैतेते॥२४॥सकलजंतुअविरु
द्धजहांहरिमृगसंगचरही कामक्रोधम
दलोभरहितलीलाअनुसरही॥२५॥स
बरितुसंततबसतरहतजहांदिनदिनलो
भा आनबननिजिनकीबिभूतसोभित
करिसोभा॥२६॥ज्योंलछमीनिजरूपअ

३
ग
नृपचरनसेवतनित॥नुवबिलसतजुविमू
तजगतजगमेंतजोतिअति॥२७॥श्रीअ
नंतमहिमाअनंतकोबरनसकेकबि॥सं
करषनसोंकछुककहीश्रीमुखजाकीछ
वि॥२८॥देवनिमेंश्रीरमारमननारायन
प्रभुजस॥बननिश्रीवृंदावनसुदेससोभि
तअसेंअस॥२९॥पावनकीबरबानिक
पावनहीवनिआवे॥सेससुरेसमहेसग
णेसनपारहिपावे॥३०॥जहांजेतकद्रुम
लताकलपतरुसमसबलाइक॥चिंता
मनिसमभूमिसवनिचिंततसुषदाइक
॥३१॥तिनमधिइकजुकलपद्रुमलगिर
हीजगमगजोती॥पत्रमूलफलफूलसक
लहीरामनिमोती॥३२॥तिनकेतिनमधि
लुब्धगंधअसगानकरतअलि॥बरकिन्न
३

रगंधर्वअपसरातिनपरकीनेबलि ॥३३॥
अमृतकुंडीसुषपुंडीअतिसुहीपरत
रहतनित॥रासरसिकसुंदरपियकोअ
मर्द्दिकरनहित॥३४॥तातरवरमधिअ
वरएकअद्भुतछबिछाजे॥साषादलफल
फूलनिहरिद्युतिबिंबविराजे॥३५॥तिहि
तरकोमलकनकभूमिमनिमयमोहत
मन॥दिषियतसबप्रतिबिंबमनोधरमेंउ
सरोबन॥३६॥थलजैलजफूलमलत
ललितबहुमधुपउडावें॥उडउडपरत
परागकछूछबिकहतनआवे॥३७॥ज
मुनाजूअतिप्रेमभरीतटबहतजुगहरी
मनिमंडफबहुभांतिहरिसोंपरमतल
हरी॥३८॥मृडुकोमलवालुकारमनिअ
तिसुभगसुहायो॥श्रीजमुनानिजुकरत

ज

(हिन्दी)

रंगकरिआपबनायो॥३९॥ तहांइकमनि
मयइकबितिस्तकोसंकसुनेगआति॥ ताप
रषोडसदलसरोजअद्भुतचक्रांकृति॥४०॥
मधिकवनीयकरनिकासबसुषसुंदरकंदर
जहांराजतब्रजराजकुंवरबररसिकपुरंदर
॥४१॥ निकरबिभाकरद्युतिमंडितसबको
स्कनमनिआस॥ सांवरउररुचिकबिबिस
पलागतउडगणजस॥४२॥ मोहनअद्भु
तरूपकहिनछबिआवतजाकी॥ अषिल
अंडव्यापीकब्रह्मआभाहेताकी॥४३॥ प
रमात्माधरमकरमसबअंतरजामी॥ नारा
यणभगवानधर्मकरिसबकेस्वामी॥४४॥
बालकुमारपौगंडधर्मआक्रांतिललितत
न। धर्मीनित्यकिशोरकान्हमोहतसबको
(उज्जवल) मन॥४५॥ मृदुकोमलस्पामलसुअंगअद्भु

तत्रि संगकिय॥नवकिशोरजेमोरतिनकी
चंद्रिकासुमनसिरदिय॥४६॥कंठमालमुक्त
निकीमालबनमालधेंपिय॥मंदमरुतब
सपीतबसनकरषतहरषतहिय॥४७॥अ
सअद्भुतगोपालबालसबसकलबसतज
हां॥तातेश्रीबैकुंठविनवकुंठितलागत
तहां॥४८॥जदपिसहजमाधुरीविपनस
बरहतिसुहाई॥तदपिरंगीलीसरदमिलैंत
अतिछविपाई॥४९॥ज्योंअमोलनगजग
मगाइसुंदरजरावसंग॥रूपवंतगुनवंतव
कुरिभूषनभूषितअंग॥५०॥रजनीमुषसु
षदेतललितप्रफुलितजुमालती॥मनोन
वजोबनपाइलसतिगुनवतीबालती॥५१
छविसोंफूलेअवरफूलअसलगीलुनाई
मनोंसरदकीछपाछवीलीबिहसतिआ

ई॥५२॥ तबतिहिछिनउडराजउदितरस
राजमहाइक॥ कुंकुममंडितप्रियाबदनज
नोनागरनाइक॥५३॥ कोमलकिरनअरु
(वा बनमें) नमेंबननमेंव्यापरहीयों॥ मनसिजषेल्योफा
गुघमडिउडिरह्यौगुलालज्यौं॥५४॥ फट
कछूटीसीकिरनकुंजरंध्रनिजबआई॥
मानोंअतनवितानसुदेसतनावतनाई॥
(चाल) ॥५५॥ मंदमंदचलिचालचंद्रमाअसछबि
पाई॥ उझकतिहैमनोंरमारमनपियकों
तिकआई॥५६॥ निरषिरजनिकमनीय
अनबैचनीयनिकाई॥ रीझिमांवेररसिक
रासषेलनमनुआई॥५७॥ तबलीनीकरक
मलजोगमायाश्रीमुरली॥ अघटतघटना
चतुरबहुरिअधरनिसोंजुरली॥५८॥ जा
ग कीधुनितेनिगमअगमप्रगटतबडनागर

नारदब्रह्मकीजननीमोहनीसबसुषसागर
॥५०॥ पुनिमोहनसोंमिलीकछुककलगा
नकियोअस॥बामविलोचनवालतिन
कोमनहरनहोइजस॥६०॥मोहनमुरली
नादकियोजुसुन्योसबकिनहू॥जथासुष
दसुषरूपतथाबिधिपरस्योतिनहू॥६१॥
तरनकिरनमनिसबपषानसबहिनसोंप
रसै॥सूरकांतिमनिबिनानहिनकहूपा
वकदरसै॥६२॥सुनतचलीब्रजबधूगीत
धुनिकोमारगगहि॥भवनभीतद्रुमपुंज
कुंजकितनहूअटकीनहि॥६३॥नादअम्र
तकोपंथरगीलोसूक्षमभारी॥तहांब्रजति
यनलेंचलेआनकोउनहिअधिकारी॥६४॥
परमप्रेममयरूपपंचभूतकतेन्यारी तिन
हिकहाकोऊगहेजोतिश्रीजगतउज्यारी

म (वह सुंदर)

॥६५॥कौउकतरुनउठिकलमल्लाइतनस
हतचलीइक॥मातपितापतिबंधुरहेफु
किनहिनरहीरुक॥६६॥जेरुकिगईघरऋ
तिअधीरगुनमयशरीरबस॥पापपुन्नप्रा
रब्धसच्योतननहिनपच्योरस॥६७॥परम
दुसहश्रीकृस्नबिरहदुषव्याप्योजिनमें॥
कोटिकठिनदुषभोगतत्तछिनमुगयोछि
नमें॥६८॥पुनिरंचकधरिध्यानपियहिपरि
रंभदियोजब॥कोटिस्वर्गसुषभोगतत्तछिन
कियेमंगलसब॥६९॥पीतलपात्रपारस
हिपरसकंचनाकेसोहै॥नंदसुवनसोंपरम
प्रेमयहअचिरिजकोहै॥७०॥तेपुनितिहि
मगचलीरंगीलीतजिग्रहसंगम॥मनोपि
जरानितेछुटेगुटेजनुप्रेमबिहंगम॥७१॥सा
वनसरितारुकैकैरैजोजतनकोउअति॥

कौ

कृस्नगहेजिनकेमनतैंरुकैंअगमगति॥७२
जदपिकहूंकेकहूंवधनिआभरनवना
ए॥हरिपियपैअनुसरतजहांकेतहांचलि
आए॥७३॥कृस्नतुष्टकरिकर्मकरेकरिअ
नप्रकारा॥फलबिभचारनहोइहोइसुषप
रमअपारा॥७४॥चलतअधिकछविफवी
श्रवनमनिकुंडलरुलकैं॥संकितलोचनच
पलचारुतहांविलुलितअलकैं॥७५॥क
हूंदिपियतकहूंनहिनवधूबनबीचवनी
यो॥विज्जुरिनकैसैंसघनसघनघनमाहिच
लतज्यों॥७६॥आइमिलींउमंगिसोंरगीली
गोपबधूंअस॥नंदसुवनसुंदरसागरकोंप्रे
मनदीजस॥७७॥जारबुद्धिश्रीकृस्नसौंश्रीसुक विषै
मुनिबरनी॥अवधिभूतप्रेमाअवेसकेशो
बसकरनी॥७८॥परमभागवतरतनरसिक

जुपरीछतराजा॥ब्रह्मकरीरसपुहकान
निजसुषकेकाजा॥७९॥जाकोसुंदरस्याम
कथाछिनछिननईलागे॥ज्योंलंपटपरि
जुवतिवातसुनिअतिअनुरागे॥८०॥श्री
भागवतकोपात्रजानिजगकोहितकारी
उदरदरीमेंकरीकान्हजाकीरषवारी॥८१॥
होमुनिकोगुनमयशरीरपरहरिपायेह
रि॥जानिभजेकवनीयकान्हनहीब्रह्मभा
वकरि॥८२॥तबकह्योश्रीशुकदेवदेवय
हअजरिजनाही सबभावभगवानकान्ह
जिनकेहियमाही॥८३॥परमहुहसमसि
पालवालपनतेनिंदकअति॥जोगीनहू
तिन३ कौंदुर्लभसुलभपाईसोगति॥८४॥एहरि
रसअोपीगोपीसकलतियनितेन्यारी॥क
वलनेंनगोबिंदचंदजूकीप्रानपियारी॥

॥८५॥तिनकेनूपुरनादसुनेअतिपरमसु
हाये॥तबपियकेमननैनसिमिटसबश्रव
ननिआये॥८६॥झनकझनकपुनिछबी
लीभांतिजबप्रगटभईसब॥पियकेअंग
अंगसिमिटमिलेछबीलेनैननितब॥८७॥
कुंजकुंजप्रतिनिकसतसोभितसुंदरआन
नअस॥तमकीकुटिनिमध्यतेनिकरराका
मयंकजस॥८८॥सबकोमुषअवलोकित
पियकेनैनबनेयो॥बकुतसरदससिमा
झअरबरेद्वैचकोरज्यौं॥८९॥अतिआदर
करिलईभईचहूंदिसिठाढीअनु॥छबी
लीछटनिमिलिघेरिमनोंमंजुलमूरति
घनु॥९०॥नागरगुरुनंदनंदचंदहसिमंद
मंदतब॥बोलेबंकेबेंनप्रेमकोपरमभेंनस
ब॥९१॥उज्वलरसकोयहसुभावबंकीछ

विपावे॥ वंकचहनिअरुकहनवंकअति
रसहिबढावे॥५२॥ जैसेंसुंदरनाइकरूप
गुनरसिकमहाहे॥ सबगुनमाटीहोंहिनें
कहे४ कुजोवंकनचाहे॥५३॥ कईकबचंगान
मेंकईकरसबरकमेंनिपर॥ कईककहेति
यधर्मपर्मनेंदकसुंदरबर॥५४॥ लालरसा
लकेव्यंगबचनसुनिचकितभईज्यों॥ बाल
मृगीसीमालसघनबननूलिपरीज्यों॥५५॥
मंदपरसपरहसीलसीतिरछीअषियनि
अस॥ रूपउदधिइतगतिरंगीलीमीनपाति
जस॥५६॥ येसबनवलकिशोरीभोरीभरी
नेहरस॥ तातेसमझिनपरीकरीपियप्रेम
बिवसअस॥५७॥ जबपियकह्योघरजा
कुअधिकचितचिंतावारी॥ पुतरिनिकेसी
पांतिरहिगईइकटकठाटी॥५८॥ दुषके

श्रीऊछबिग्रीवसीवनयचलीनालसी॥ अल
कअलिनकेभारनवतिमनोंकमलमालसी
॥९९॥ हियनस्योविरहकुतासउसासनिस
गआवतिफरि॥ चलेहेंकछुकमुरफाइमधकन
रेअधरबिंबबर॥१००॥ तबबोलींवृजबालला
लगिरिधरअनुरागी॥ सुंदरगदगदगिरागिरि
धरहिमधकरीलागी॥१॥ अहोअहोमोंहन
प्राननाथसोंहनसुषदाइक॥ कूरबचनजिन
कहोनहिनयेतुम्हरेलाइक॥२॥ जोकोऊ
पूछेधर्मतबतोतासोंकहियेपिय॥ बिनही
वूझेधर्मकतिकोंकहियेदहियेहिय॥३॥ ध
र्मनेमजपतपसबकोऊफलहिबतावे॥ य
हकछुनाहिनसुनीजुफलुफिरिधर्मसिषावे
॥४॥ अरुसैंबिस्वबिमोंहनमोंहनरूपतिहारो यह
पियजियमेंकतडरातनिपटधर्मकोरषवारो
॥५॥ पियतुम्हरोयहरूपधर्मकेधर्महिमोहे॥

घरमेंकोंधर्मनर्मयाआगेंकोहे॥६॥नगनको
षगनकोमृगनकोकेसोधर्मरह्योहै ध्याने
हीह्वेरहेकछूनहींजातकह्योहे॥७॥ज्यो
तुम्हेरेकरकमलमहाद्दूतीयहमुरली॥रा
खेसवकोधरमपरमअधरनिसोंजुरली॥८
जेसीपियकीमुरलीजुरलीअधरसुधारस
सुनिनिजधर्मनतजेतरुनिकोत्रिभुवनमें
अस॥९॥नगनकेधर्मनरहेपुलकितनच
लेठोरते॥षगमृगगोबछकछमछतेरहे
कोरते॥१०॥पियकोसुंदरबदननिरषिकव
ननजनभूल्यो॥रूपसरोवरमांझसरद्दअंबु
अलक जजनोफूल्यो॥११॥कुटिलअनवोललोल
मधकरमतवारे॥तिनमेमिलिगएलाल
मधुपयेनेंनहमारे॥१२॥चितवनिमोहन
मंत्रमोहजनोमनसिजफासी॥निपटठगो
रीआहिमंदमृदुमादिकहासी॥१३॥फुर

तअधरामधकरामृततनकधोकबष्यावोगे॥ ब
ढुतपुन्यहोइमितमरततुहमेंज्पावोगे॥
॥२४॥अधरसुधाकेलोनभईहमहासितु
म्हारी॥ज्योंलुबीपदकमलनिकमलाचंच
लनारी॥२५॥जोनंदढुअधरामृतरससुनि
मनमोहनहरि॥करिहैंयेतननस्मबिरह
पावकमेंकुदपरि॥२६॥पुनिपियपदवीपा
इवुहरिधरिहैसुंदरअंग॥निधरकह्वैयह
अधरामृतपीहैफिरिहैसंग॥२७॥सुनिगो
पिनिकेबचनरचनअंचिमीलागीजिय॥
पघरचल्योनवनीतमीतनवनीतसहृमहि
य॥२८॥विहसिअंकभरिलईरंकनवनिधि
कीनाई॥पुनिपुनिपियहियलाईजीवनमू
रसीपाई॥२९॥हरषिमिलेनंदलालनिरषि
वृजबालविरहबस॥जदपिआतमारामर
मितभयेप्रेमबिबसअस॥२०॥बिहरत

बिपिनबिहारउदारनवलनंदनंदन॥नव
कुंकुमघनसारतुसारबिचर्चितचंदन॥२१॥
व अद्भुतस्यामलअंगबन्योअद्भुतपीतांबर॥मू
रतिधरेंसिंगारप्रेमओढेंअंबरहरि॥२२॥वि
लुलितबरबनमाललालजबचालचलतव
र॥कोटिमदनकीभीरलुठतिउकुठतिच
रनतर॥२३॥गोपीजनगनमोहनमोहन
लालबनेयों॥अपनीदुतिकेउडगनिउडप
तिघनषेलतज्यों॥२४॥कुंजनिकुंजनिडो
लनिजनुघनतेघनआवनि॥लोचनत्रिषि
तचकोरिनिकेचितचोंपबढावनि॥२५॥
फूलनिमालबनाइलालपहिरतिपहिराव
ति॥सुमनसरोजसुघावतिआजमनोजबढा
वति॥२६॥सुभगसरितकेतीरबीरबलबीर
गयेजहा॥कोमलमलयसमीरछबिनिकी
महाभीरतहां॥२७॥कुसुमधूरिधूसरीसकुं

जचहूँओरेंअनु॥ मनसिजनिजकरकरीकु
वरकेकाजकुटीजनु॥२८॥ प्रफुलितलता
समूहकुंजमधुपुंजनिछाई॥ गुंजतहेंअलि
पुंजवेनुजनुबजतसुहाई॥२९॥ इतमह
कतमालतीचारुचंपकचितचोरत॥ इतघ
नसारतुसारमिलीमंदारफकोरत॥३०॥ रा
इबेलिअरुबेलिवेलिमगमहकीबेलिइत
नवकुरबककेवरोकेतुकीगंधवंधनित॥३१॥
इतलवंगनवरंगसंगसेवतीनिवारी॥ इत
सुगंधमहकातमाधवीमधुमतवारी॥३२॥
इततुलसीछबिछुलसीछाइतपरमलल
पटें॥ इतकमोदआमोदगोदभरिभरिसुषद
वटें॥३३॥ बैठेतहांसुंदरसुजानसबगुननि
धानहरि॥ बिलसतरासबिलासरासरसअ
तिछुलासभरि॥३४॥ परिरंभनमुषचुंबन

नीवीकचकुचपरसत॥सरसतप्रेमअनंगरं
गनवघनझिमिबरसत॥३५॥तहांआयोय
हकामपंचसरकरहैंजाकें॥ब्रह्मादिककोंजी
तिवादिरह्योअतिमदताकें॥३६॥निरषिव्र
जवधूरंगसंगभीनेकिशोरतन॥हसिकरिम
नमथमथ्योउलटयामनमथकोमन॥३७॥
मुरझिपर्योतहांमेनकहूंधनकहूंबिसषब
र॥रतिहिषिपतिकीदशाभीतमईमारतउर
कर॥३८॥छिनछिनपियहिअलिंगतरोवत
अतिअनुरागी॥मदनकेबदनचुवाइअमी
भुजभरिलैभागी॥३९॥असअद्भुतमोहन
पियसोंमिलिगोपदुलारी॥अचरिजनाहि
नगर्वहोइगिरिधरकीप्यारी॥४०॥रूपम
रीगुनभरीभरीपुनिपरमप्रेमरस॥क्योंनकरे
अभिमानकान्हभगवानजिनकेवस॥४१॥

जहांनदीगंभीरतहांअतिनवरीपरई॥छिल
छिलसलिलनपरेंपरेंतौछविनहींधरहीं॥
॥४२॥प्रेमपुंजबढैनकेकाजवृजराजकुवरपि
य॥मंजुकुंजमेंडुरेतनकअलिप्रेमभरेहिय
॥४३॥मधुरवस्त्रजसेंषातनिरंतरसुषतोमा
री॥बिचबिचकटकअमलतिक्तरसतेरुचि
कारी॥४४॥ज्योंपटपुटकेंदियेनिपटहीरस
हिपरेरंग॥तैसेंहीरंचकबिरहप्रेमकेपुंजब
ढेअंग॥४५॥जिनकौंनेननिमेषकोटिकोटिक
जुगजाहीं॥तिनकोंग्रहबनकुंजअटडुषग
ननानाहीं॥४६॥ठगीसीरहीवृजवाललाल
गिरिधरपियबिनयों॥निधनमहाधनपाइजा
इज्योंहीत्योंहीत्यों॥४७॥ह्वैगईबिरहबिक
लमनवूझतद्रुमबेलीबन॥कोंउकौंचेतंन्य जन
कछूनजानतबिरहीजन॥४८॥हेमालतिहे

जातिजूथकेतेहितदेचित॥मानहरनमन
हरनलालगिरिधरनिलहेइत॥४९॥हेकेतु
काइततेंचितयेकहूंतेपियरूसे॥किधोंनं
दनंदनमंदसुमकवुम्हेरमनमूसे॥५०॥हेमु
फल कतांबेलिधरेमुकताफलमाला॥देषेहेंनेंन
बिसालासुंदरनंदकेलाला॥५१॥हेमंदार
उदारबीरकरबीरमहामति॥देषेकहूंबल
बीरधीरमनहरनधीरगति॥५२॥हेचंदनदु
षकंदनसबकोंजरतजुडावहु॥नंदनंदनज
गबंदनचंदनहमहिमिलावहु॥५३॥हेकु
रबकबकबकीबिनासकपियकहूंदेषे॥अ
होलबंगनवरंगकान्हकहूंतेपुनिपेषे॥
॥५४॥अहोबंसबरबंससंसजोदेषेहेंतुम॥
गोपबंसअवतंसबिनाअतिभईदुसहम
॥५५॥अहोसुनगबनिसुगंधपवननेसक

के

थिरह्वैचलि॥सुषनवनदुषदवनखनकहूं
तेचितयेवलि॥५६॥वृक्षकुरीइहिलतहिफू
लरहीफूलनिजोई॥सुंदरपियकरपरसबि
नाअसफूलनहोई॥५७॥हेसषियेमृगबधू
इनहिकिनवृक्षअनुसरि॥डहडहेइनिके
नैनअबहिकहूंदेषेहेहरि॥५८॥अहोकदं
बअहोअंबनिंबक्योंरहेमोनगहि॥अहोब
टतुंगसुरंगबीरकहूंतेइतउतलहि॥५९॥
अहोअशोकहरिशोकलोककहूंहमेंवता
वहु॥अहोपनससुनसनसतियनिसबम
रतजिवावहु॥६०॥जमुनानिकरकेबिटपवृक्ष
नईनिपटउदासी॥क्योंकहिहेंसषीमहाक
ठिनयेतीरथबासी॥६१॥जमुनेतूसबजान
तिकहतिनहठहिगहतिहे॥जोजलपरमअ
धारताहितटउगटबहतिहे॥६२॥हेतुलसी

कल्यानसदागोबिंदपदप्यारी॥ क्योंकहेतूनं
दसुवनसोंबिद्याहमारी॥ ६३॥ हेअवनीनव
नीतचोरचितचोरहमारे॥ राषेहेंकितहिंदु
राइबताइधोंप्रानपियारे॥ ६४॥ तहांआवत
तमपुंजकुंजगहबरबनछाही॥ अपनीअप
नीमुषचंदनीचलीसुंदरितामाही॥ ६५॥ इ
हिबिधिबनघनबूझिढूंढिउनमत्तकीनाही॥
करनलगीमनहरनलाललीलामनमाही॥
॥ ६६॥ अग्निदग्धज्योंअंगवुहरिज्योंअग्नि
हिसेके॥ धरनिपतितकहांजाइबुहरिवुनि
धरनहिंटेके॥ ६७॥ मोहनलालरसालकील
लाइनहीसोहे॥ केवलतनमेंमईकछुनजा
नतहमकोहें॥ ६८॥ हरिकीसीबोलनिडोल
निचलनिहरिकीसीहेरनि॥ हरिकीसीगाइ
निबेरनिटेरनिअंबरफेरनि॥ ६९॥ हरिकी

126

सीबनबनतेंआवनगावनरसरंगी॥ हरिकोस
गिंडुकरचननचनपुनिहोंनत्रिभंगी॥७०॥
कोउसुदामक्कैबामचढतकान्हरकेकांधे॥को
ऊजसुमतिह्वैललितलालगहिऊषलबाधें
॥७१॥ कोऊजमलार्ज्जुनभंजतगंजतफनीजु
वलकों॥ कोऊकहेमूंदोलोचणमोचौंदावा
नलकों॥७२॥ कोऊअंवरकोऊगिरिवरधरवो
लतकोऊतब॥ निधरकइहितररहोगोपगो
पीगाइनिसब॥७३॥ न्रंगीनयतेंन्रंगहोइव
हकीटमहाजड॥ कृस्नप्रेमतेकृस्नहोइअ
चिरजिनाहिनबड॥७४॥ तबपायोपियपद
सरोजकेषजरुचिरजहां॥ अरिदरअंकुसकु
लिसकमलजवजगमगाततहां॥७५॥ सोरज
शिवअजढूंषोजतजोजतजोगीजिय॥ सोरज
वंदनकरनलगीसिरधारनलगीतिय॥७६॥ च

लीपुनिअंकनिअंकरंकजसनिधिषोयेमग
देषेहेंजहांजगमगातप्यारीपियकेपग॥७७
चकितिभईयोकहतकोंनयहबडभागिनि
असु॥परमकांतएकांतपाइपीवतजुअधर
रस॥७८॥आगेचलीअवलोकितजहांनव
पल्लवसेनी॥तहांपियसुमकुसुमेंअद्भु
तगूथीबेनी॥७९॥तहांपायोइकमंजुमुकर
मनिजटितबिलोलें॥तिहिफेंवुजबालबिर
हमस्योसोउनवोलें॥८०॥तर्ककरेंआपमों
कह्योयहक्योंकरलीनों॥तिनमेंतिनकेहि
यकीतिनयहकृतरहीनों॥८१॥वेंणीगुहन
समेंछबीलेंछेलपाछेवेंठेंजब॥सुंदरबदन
बिलोकनिसुषकोंअंतरभयोतब॥८२॥ता
तेंमंजुलमुकरसुकरलेवालदिषायो॥श्रीमु
षकौप्रतिबिंबसषीतबमनमुषआयो॥८३

लै

वृ

धंन्यकहत नई ताहिनहिनकछुमनमेंको
पी॥ निर्मलसरजेसंततिनकीचूडामनिगोपी
॥८४॥ इननीकेंआराधेहरिईश्वरहैंजोई॥
तातेंनिधरकअधरसुधारसपीवतसोई॥८५॥
पुनिआगेंचलीतनकदूरिदेषीसोईठाढी॥
जासोंसुंदरनंदकुंवरपियअतिरतिमाढी॥
॥८६॥ गोरेतनकाजोतिछूटिछबिछाइरही
धरि॥ मानडुठाढीकुवरिसुभगकंचनअव
नीपरि॥८७॥ जनुघनतेंबिछुरीबिजुरीमान
नितनकाछें॥ किधोंचंदसोंरूसिचंद्रिकारहि
गईपाछें॥८८॥ नेननितेजलधाररहारधोवति
धरधावति॥ भवरउडाइनसकतिवासबससु
षटिआवति॥८९॥ वासुंदरिकीदसादेषिक
छुकहतनआवे॥ बिरहभरीपुतरीजुहोइतो
कछुछबिपावे॥९०॥ कासिकासिपियमहा

वाकुयोंबदितिअकेली॥महाबिरहकीधुनि
सुनिरोवतिषगमृगवेली॥८१॥धाइसुजनिम
रिलईसबनिलैलैउरलाई॥मनकुमहानिधि
षोइमध्यआधीनिधिपाई॥८२॥कोऊचुंवि
तमुषकमलकोऊभ्रूभालसुअलकें॥जामेंपि
यसंगमकीमंजुलश्रमकनफलकें॥८३॥पैं
छतिअपअपअंचलरुचिरदृगंचलतियके
पीकभरेसुकपोललोलरदछदजहांपियके
॥८४॥तिहिलेतहांतेअकुरिबकुरिजमुना
तटआई॥जहांनंदनंदनजगबंदनपियला
डा डलैई॥८५॥कहनलगीअहोकुवरिकान्ह
ब्रजप्रगटेजबते॥अवधिभूतिइंदिराअलंके
तिह्वैरहीतबते॥८६॥सबकोंसबसुषबास
मरसजुबडेहितकारी॥तिनमेंपुनियगोप
वधूपियनिपटतिहारी॥८७॥नेनमूंदवोम

हाशखलेहासीहासी॥मारतहोकतसुरति
नाथविनुमोलकीदासी॥९८॥विषजलतेव्या
लतेंअनलतेदामिनिझरतें॥क्योंराषीनहिम
रनदईनागरनगधरते॥९९॥जनुतुमजसुदा
सुतननगपियअतिइतराने॥बिस्वकुशल
केंकाजविधिनिविनतीकरिआने॥१००॥अ
होमितअहोप्राननाथयहअचिरिजुभारी॥
अपननेजोमारिहोकरिहोकाकीरषवारी॥
॥१॥जबपसुचारनचलतचरनधरकोमलव
नमें॥सिलतृणअंकुरकटंककसकतहमरे
मनमें॥२॥जबतुमविपिनकोंजातसातजुग
समवीततछिनु॥दिनबीततजिहिभांतिह
महिजाननपियतुमविनु॥३॥जबतुमविपि
नतेआवतसुंदरआननदेषें॥तबहमजीव
नितिअपनोंजनमसुफलकरिलेषें॥४॥धनत

मनोरथकरनचरनसरसीरुहपियको॥क
हाघटिजेहैनाथहरतिदुषहमेरेहियको॥
॥५॥फनीफनिनिपरअरपेडरपेनहिनने
कुतब॥छबिलीछतिनिपरधरतडरतको
कान्हकुवरअब॥६॥जानतिहैपियतुम
जुडरतवृजराजदुलारे॥कोमलचरनमरे
जकठोरउरोजहमारे॥७॥मनेमनेपियध
रिहैंहमहूतोअधिकपियारे॥कतअटवी
मेंअटतगडततृणकूपअन्यारे॥८॥बुधि
जनमनहरनीवानीविनुजरतसबैतिय॥
अधरसुधारससहिततनकज्यावोप्यावो
पिय॥९॥यहपरतुम्हरीकथाअमृतसब
तापमिरावे॥अमरामरकोतुछकरैब्रह्मा
दिकगावै॥१०॥जिनयहप्रेमसुधाकरमो
हनमुषदेष्योपिय॥तिनकीजरननमिटै

रसिकसंमितिकोबिदहिय॥११॥ज्योंक्यों
हूकरिसांझसमेंतुम्हारोमुषदेषें॥तोवह
विधानाकूरकरीनेंननिकौंमेषे॥१२॥जद
पिपरमसुषधामस्यामपियकीलीलारस
तदपितिनहिंअवलोकनिबिनुअकुला
इगईअस॥१३॥ज्योंचंदनचंद्रमतनसब
सीतलकरही॥पियबिरहीजेलोगतिन जो
हिलगअगिनिवितरही॥१४॥छिनबैठ
तिछिनउठतिलुठतिपुनितिहिंरजमाही
थोरेजलजैसेंमीनदीनआतुरअकुलाही
॥१५॥मैंसेनयतेअनयकरतकरकमलति
हारे॥कहाघटिजैहैनाथतनकसिरछुव
तहमारे॥१६॥श्रवनमात्रमंगलदाइकअ
सऔरनहोइ॥मोहनमुषदेषेबिनुऔरसु
हाइनकोई॥१७॥ललितमधुरमृदुहासदे
मविछुरनितुम्हारोपिय॥मारतमननिम

सूसेंरूसेंनिकसतहेजिय॥१८॥कहांहमरी
यहप्रीतिकहांतुम्हरीनिठुराई॥मनिपषा
नमोंषचेहईसोंकछुनबसाई॥१९॥पारधी
ह्वैतेतुमजुकठिनअहोमनमोहनपिय॥
वेनुबजाइवुलाइमृगीसीमोहिहतीतिय
॥२०॥मातपितापतिबंधसिंधतरितुम
ढिगआई॥जानिवूझअधरातिगहरवनमें
बिराई॥२१॥अजहूंनहिनकछुबिगरयो
बेचकरचकधोंआवहु॥मुरलीकोजूठोअ
धरामृतदहैंहीमुषलावहु॥२२॥इहिबि
धिप्रेमसुधानिधिमधिवढईकलोलें॥विह्व
लह्वैगईबाललालसोंअलबलबोलें२३
तबतिनहीमधिप्रगटभयेनागरनगधार्यो
द्वैद्वैबंधकरिद्वुरेबुहरिप्रगटेनटवरज्यों
॥२४॥पीतवसनबनमालधरेमंजुलमुरली
हथ्थ मंदमधुरमुसकातिनिपटमनमथ्थ

ग

केमनमथ॥२५॥पियहिनिरषितियवंदउदी
सबडकहीबारियो॥फिरिआयेघटप्राणबु
हरिउजगीइंद्रीज्यों॥२६॥हीरलपटगईल
लितअंगकछुकहतनआवे मीनउछरि
पुनिपरैपुलिनजसपानीपावै॥२७॥महा
छुधितकोजेसभोजनसोप्रीतिसुनीहै॥ता
हूतेसतगुनीसहसगुनीकोटिगुनीहै२८
कोऊचटपटसोलपटीकरकोऊउरवरलप
टी॥कोऊगरलपटीकहतभलेजूकान्हरक
पटी॥२९॥कोऊनगधरबरनटकीगहिर
हीपरकरपटकी॥जनुनवघनतेसटकीदा
मिनिदामिनिअटकी॥३०॥कोऊपियभु
जनिसोलपटीमटकीनाहिनवेली॥जनुसुं
दरसिंगार बिटपलपटीछबिबेली॥३१॥
कोऊकोमलपदकमलकुचनिबिचराषि

रहीयो॥ परमकृपनधनपाइछुतीसोंलाइ
रहेज्यौ॥३२॥कोऊहरिरूपनैननगरिउरमें
धरिधरिआवति॥मधमाषीलोंदीठडुङ्करि
सिअतिछबिपावति॥३३॥कोऊदसनन
दलअधरबिंबगोविंदहितताडति॥कोऊइक
चारुचकोरचषनमुषचंदनिहारति॥३४॥
जाकाभ्रूभंगभीतभएअतिकालयरहेरे॥
प्रभुसोईगोपिनिकारिसभरीमोहनकेडर
डरे॥३५॥बैठेपुनितिहिपुलिनपरमआनं
दभयोहे॥छबिलिनअपनोंछादनछबिसों
बिछाइदयोहे॥३६॥इकहिबेरहरिदेवस
स बहिआँनपरबैसे॥कियेहेमनोरथपूरनजा
केंउपजेजेसे॥३७॥कलपबृछजडसुनिय
तिहेचिंततफलदाइक॥एतोश्रीब्रजराज
कुवरसबलाइकनाइक॥३८॥ज्योंअने

कजोगीश्वरहियमेंध्यानधरतिहै॥इककहिबे
रइकमूरतिसबकोंसुषबितरतिहै॥३९॥
कहूंकुंकुमेंकज्जलकहूंकहूंलीकपीकवर कहुँ
तहोंराजतनंदनंदचंदगोबिंदचंदहरि॥४०॥
जोगीजनबनजाहिजतनअतिकरहिअन
तपचि॥अतिनिर्मलकरिकरिराषतहिय
रुचिआसनरचि॥४१॥कछुघिनाततहांजा
तनवलनागरमोहनहरि॥ब्रजदेविनके
अंबरपरबैठेअतिरुचिकरि॥४२॥कोटिको
टब्रह्मांडजदपिअकिलीठकुराई॥ब्रजदेवि
नकीसभासाबरेअतिछबिपाई॥४३॥स
बसुंदरिकेसनमुषसुंदरस्यामविराजें॥ज्यों
नवदलमंडलमेंकमलकर्निकाभ्राजे॥४४॥
बूझनलागीनवलबालनंदलालपियेजब॥
प्रेमरीतिकीबातमनमेंमुसकातिजातिस

बा॥४५॥इकभजतेकोंभजेंभजहिविनुराक
जुभजही॥कहुहकान्हतेकवनआहिजेउ
वनितजही॥४६॥जेभजतेकोंभजेतेपअप
नेस्वारथहित॥जेसेंपसूपरसपरचाटतसु
षमानतचित॥४७॥जेअनभजतनभजेंते
पधर्मीसुषकारी॥जेसेंमातपिताजुकरेंसुत
कोरषवारी॥४८॥जेदुहुवनिकोंतजेंतेप
होंकहोंसुनोंतिय॥केवेहेंआत्मज्ञकेबवे
हेंअकृतज्ञजिय॥४९॥अकृतज्ञहोंनाहि
तुम्हरेचितप्रेमबढावन॥जेसेंमहाधनजा
इपाइपुनिचोंपवढावन॥५०॥जद्पिजगत
गुरुनागरनगधरनंदडुलारे॥गोपिनिप्रेम
केआगेंअपनेहीमुषहारे॥५१॥तवबोले
ब्रजराजकुवरहोंरिनीतुम्हारो॥अपनेमु
षतेंहूकिरोंअपराधहमारो॥५२॥तुमजु

करीसोकोऊनकरैअहोनवलकिशोरी॥
लोकबेदकोसुदिटसंषलात्तनममतोरी॥
॥५३॥कोटिकलपलगितुमप्रतिप्रतिउप
कारकरोंजो॥हेमनहरनीतरुनीअरिनीन
हिनहोंउतो॥५४॥सकलबिस्वअपबसक
रिमोमायासोहतिहैं॥प्रेममईतुम्हरीमाया
सोहममोहतिहैं॥५५॥सुनिपियकेरसवच
नसबनिगसखाडिदयोहै॥बिहसिअपपने
कंठनिलाललगाइलयोहै॥५६॥कोटिकल
पतरुबसतलसतपदपंकजछाही॥कामधे
नुपुनिकोटिकोटिबिलुठतरजमाही॥५७॥
सोपियनएअनुकूलतूलकोऊभयोनहैअ
ब॥निरवधिसुषकोमूलमूलउनमूलकरी
सब॥५८॥पुनिआयेतिहिसुरतरुतरिसुंद
रगिरिवरधर॥आरंभितअद्भुतसुरासउहि

कमलचक्रपर॥५९॥इकहिकालब्रजबाल
लालतहांचंढेजोरिकर॥नमितनकितह्वै
होहिसबैनर्त्तकबिचित्रबर॥६०॥मनिदर्पे
नसमअवनिरवनतापरछबिछैही॥बिधुरति
कुंडलअलकतिलकझुकिझाईलेंही॥६१॥
कमलकर्निकामध्यराधिकाललबनीछबि
ह्वैह्वैगोपिनिविचविचमंडलमाहिरहेफबि
॥६२॥ललनाअद्भुतभांतिलेतसोभितसो
भाअस॥ज्योंबहुमंजुलमुकरमांझबिधुआ
निपरतजस॥६३॥मूरतिएकअनेकदृषिय
तअद्भुतसोभाअस॥ज्योंरतनावलिमध्यनी
लमनिझलकतिहैजस॥६४॥एकएकहरि
देवमध्यमूरतिरगनीने॥अनेकजूथब्रजजु
वतिमनोरथपूरनकीने॥६५॥नवमर्कतम
निलालकनकमनिगणब्रजबाला॥छंदा

बनक्कोरीझिमनोपहिराईमाला॥६६॥एकेमू
रतिललितलालआलातकानाई॥सबकेअं
सनिधरीसांवरीबाकुसुहाई॥६७॥नूपुरकं
कनकिंकिनीकरतलमुरली॥तालमृदंगउ बाजत
पंगचंगएकहिरसजुरली॥६८॥मृदुलमुरज
टंकारतारझंकारमिलीधुनि॥मधुरजंत्रकीता
रनवरझंकाररलीपुनि॥६९॥तेसीयेमृदुपद
पटकनिचटकनिकठतारनिकी॥लटकनिम
टकनिझलकनिकलकुंडलहारनिकी॥७०॥
सांवरेपियसंगनृत्तत चंचलब्रजकीबाला॥
जनुघनमंडलमंडितिषेलतिदामिनिमाला॥
॥७१॥मिलिजुनईइकअद्भुतधुनितिहिसु
निमुनिमोहे॥सुरनरगंधर्वसिद्धिकछुनजा
नतहमकोहे॥७२॥पवनथक्योसमिथक्यो
चलेनहींआगेंडगरो॥७३॥पीछेंरविरथथक्यो कौ

थकिउडुगनसबठाढे॥

अनअधिकारीजितेतितेतहांमुनिमुरझा
ए॥अद्भुतरासबिलाससुरसदेषनहूंनपाए
॥७४॥वृंदाबनकोत्रिगुनपोंनबिजनासुवि
लोलै॥जहांजहांभ्रमितविलोकैतहांतहां
रंगमस्योडोलै॥७५॥रागरागिनीमंडलढि
गतहांठाढीगावति॥तालपषावजआवज
बिनुमूरछावजावति॥७६॥ललनाअद्भुत
भांतिलितसोभितसोनाच्यो॥सुभगघटा
परछटाछबीलीथिरकिरहतज्यों॥७७॥उ
डेअरुनपटवासरासमंडलमंडितअस
मनोंसघनअनुरागघटाघुमडनिउमडनि
जस॥७८॥अमभरेसुंदरवृंदनरंगभरेकहूं
कहूंबरसत॥प्रेमभक्तिजिनकेविरवातिन
केहियसरसत॥७९॥गिरिधरपियकीलट
कनिमटकनिमुरलीरवअस॥कुहककुह

कमानेंनाचतमंजुलमारमरोजस॥८०॥अप
नीपनीजतिगतिमेदनिसोंन्रतलगतजब
अलिगंधर्पन्रपसिसुमनोंसुंदरगानकरततब
॥८१॥छबिसोंपरसपरन्रततनिमस्कनिमंड
लडोलनि॥कोटिअम्रतसमसुमकनिमंजु
लततथेईबोलनि॥८२॥छबीलीतियनि
केपाछेंआछेंविलुलितबैनी॥चंचलरूपल
तनिसंगडोलतजनोंअलिश्रेनी॥८३॥सी
सनितेसुवनसुदेसजुबरसतअतिआनं
दभरि॥जनोंपदगतिपररीझिअलकपूज
तपुहपनिकरि॥८४॥मोहनपियकीलटक
निचटकनिमोरमुकटकी॥सदाबसोमनमे
रिफरकनिपियरेपटकी॥८५॥कोईसषीक
रपरतिरपबांधिन्रततछबिलीतिय॥मान
कुठांटेकुंवरलहूदिपिलहूहोतपिय॥८६॥

कोईनाइकके भेदभावलावन्यरूपसब ॥
अभिनयकरिदिषरावतिगावतगुनपिय
केजब ॥८७॥ तबनागरनंदलालचाहिचित
चकृतहोतयों ॥ निजुवृतिबिंबबिलासनिर
षिसिसुनूलरहतज्यों ॥८८॥ रीझिपरसपरवा
अंबर रतिनूपरौंअंगके ॥ अवरतबहिबनिरहत
तहांतहांअद्भुतरंगरगके ॥८९॥ कोऊमुर
उ लीसुररलीरगालीरगहिचटावति ॥ कोंमु
रलीकोछेकछबीलीअद्भुतगावति ॥९०॥
तिहिंधुनिसुनिजेब्रह्मलीनतेपुनिमोहेमु
नि ॥ सिलासलिलह्वैचलीसलिलसिलहो
इगईपुनि ॥९१॥ ताहिसावरोकुवरझिह
सिलेतभुजनिभरि ॥ चुंबनकरिसुषसदन
बदनतंवोरदेतढरि ॥९२॥ जोजगमेसंगीत
नृतसुरनरारीझतजिहि ॥ सोवजतियन्हिकों

सहजगवनआगमगावततिहि ॥८३॥ राग
रागिनीसमजिनकोबोलिबोसुहायो ॥ सो
कापैकहिआवैजोब्रजदेविनिगायो ॥८४॥
ग्रीवग्रीवभुजमेलिकेलिकवनीयवटीअति
लटकिलटकिबङ्कनृतनिकापैकहिआवै
गति ॥८५॥ गंडनिसोंमिलिललितगंडमंड
लमंडितछबि ॥ कुंडलमोकचअरुझिसुरुझिज
हांबडडेकबि ॥८६॥ अद्भुतरसरह्योरासिदे
षिकछुकहितनआवै ॥ ज्योंमूकेरसकोच
सकोमनहीमनभावै ॥८७॥ कहिननपरेरम सेस
हेसपैगुरुगणेशपै ॥ चकृतजहांसरस्वतीऽ
तीमतिकहांसुरेसपै ॥८८॥ कुसमधूरिधूस
रेकुंजमधुकरनिपुंजजहां ॥ ऐसेहिरसआ
वेसलटकिकीनोंप्रवेसतहां ॥८९॥ नवपल्ल
वकरिसेनीअतिसुषदेनीतिहितर ॥ तापर

सुवनउसीसवैसेमधकरेजिहिपर॥१००॥छवि
सुपरसपरबिबसुरावहैप्रेममदनभर॥प्रा
कृतकामकीछुतीअजह्वधरकतिजाके
डर॥३०१॥बिलसतअतिरसजुद्दरुद्दसोरति
सुषसागर॥उज्जलप्रेमउजागरअगरसब
गुननागर॥३०२॥रासिसरदकीरजनीनजनी
कितिइकबाढी॥बिलसतसजनीस्यामज
थ्यासुषअतिरतिगाढी॥३०३॥इहिविधिवि
विधिबिलासविलससुषकुंजसदनके॥च
लेजमुनजलक्रीडनब्रीडनकोटिमदनके
॥३०४॥उरसिमरगजीमालचालमदगजग
तिमलकत॥ढलकतरसभरेनैंनगंडस्थ
लश्रमकन॥३०५॥टुटिमुकतनिकीमालछू
टिरहीसावरेउरपर॥जनोंसिंगारपहारते
सुरसुरीधाइधसीधर॥३०६॥तहांकाह्नकीग

नफ़लकत ३

मनहीजमुनाअतिसुषदैनी॥जगमगाततत
टघाटमहामनिजटितनसैनी॥३०७॥कलवि
टपनिसोंलपटैलताफूलीफूलीजल॥वोल
तसारसैवंसबिगसतअंबुजफल॥३०८॥घू हंस
मतरसरंगमेंनचलनिमलकनिमनहरनी
जनोंविहरतगजराजसंगलियेंतरुनीकरनी
॥३०९॥तहांअद्भुतजलकेलिवनीछबिकह
तनपरई॥जिहिचितवतिचितरंचकवंच
ककलमलहरई॥३१०॥कोईआपुनहीधसी
लसीपियसोंरतिमानी॥कोऊगहिकोऊप लटि
टगहिछबिसोंपानीआनी॥३११॥तियनिके
तनजलमगनबदनतहांयोछविछाए॥फू
लीहैंजनोंजमुनाजककनेंकेकंजसुहाए॥३१२ कउ
मुषकमलनिकेआगेजलअरविंदलगेअस
भोरभयेंनवननिकेदीपकमंदपरतजस॥

च

छिरकति छल छल छबि सो मंजुल अंजुल म
रि भरि ॥ अरुन कमल मंडिली फगुवे लत रस
रंग करि ॥ ३१३ ॥ चलत दृगंल चंचल अंचल मे
फूलकति अंस ॥ सरस कनक कंज निबंजनि
जनो जाल परत जस ॥ ३१४ ॥ कवलनि तजित
जित अलि गन मुष कवलनि आवत जब ॥ छ
बिसो छबीली भांति छपति जल मे बुडकनि
तब ॥ ३१५ ॥ जमुना जल मे दुरि मुरि कामिनि क
रत कलोले ॥ जनु घन भीतर भीतर बीज सोत
रती डोले ॥ ३१६ ॥ कबहुंक सब मिलि बाल ला
लको छिरकत छबि अंस ॥ मनसिज पायो राज
आज अब षेकहो तजस ॥ ३१७ ॥ मंजुल अंजुलि
न रि भरि पियको तिय जल मेलति ॥ मनो अलि
सो अरबिंद वृंद मकरंद निफूलति ॥ ३१८ ॥ निक
सी है सुंदर भांति क्रांति मन ही मन भावे ॥ वा

लैबैसंधियोगंडसुकबिपैकहै तनआवै॥३१९
भीजबसनतनलपटेनिपटहीकहाकहोंछ
बि॥ नैननिकेनहीबैनबैनकेनहीनैनतब
॥३२०॥ नीलनिचोलनिचुवतनीरहिषित्र
तिअधीरमनु॥ तनबिछुरनिकीपीरचीररो
वतअसुवनजनु॥३२१॥ तामैकोउअज्ञात
जोबनाछबिपावततब॥ रोमावलीसिवार
जानिपूछतडारतजब॥३२२॥ तबइकैतन डुम
चितैकुवरअसआज्ञादीनी॥ निर्मोलकरू
पनअंबरतिहिबरषाकीनी॥३२३॥ अपनीअ
पनीरुचिपहेरतबकहाछबिकहूं॥ जेजग
मेमोहनीतिनकीमोंहनीहूजबहूं॥३२४॥ बु
ह्लमहूरतिकुवरकान्हतबघरआएजब॥
गोपनिअपनीगोपीअपनेहिगपाईसब॥
ऐसीजितकसरदकीपरममनोहरराते॥ क्री
डतरासरसिकपियदिननदिनअनअनराते

॥३२६॥ नित्यरासरसमत्तनित्यगोपीजनव
ल्लभ॥ नित्यनिगमयोंकहतनित्यनौतन
अतिदुल्लभ॥३२७॥ यहलीलागोपालला
लकीपरमरसावधि॥ सिवसुकसारदनार
दतिनकोंयहेपरमनिधि॥३२८॥ यहअद्भु
तरसरासव्याससुनिनारदकेमुष॥ राजाप
तव तिसुकदेवकह्यौंलह्यौअधिकसुष॥३२९॥
सोरससेससहसमुषगावेअंतनपावे॥ सिव
मनहीमनधावेकाहूनहनजनावे॥३३०॥
जदपिपदकमलकमलाअमलासेवति
हेदिन॥ यहसुषअपनेंसुपनेकबहूनहि
पावतछिन॥३३१॥ अजअजअजहूरजवंछत
सुंदरहंदावनकी॥ सोनतनककहूपाव
तसूलमिटतनहिमनकी॥३३२॥ विनेअ
धिकारीमयेनहिनहंदावनसूझे॥ अंनक
वल१ हांतेसूझेजेगिवरुनबूझे॥३३३॥ निपटनि

कटघटमेंज्यौंअंतरजामीआही॥ बिषैबिद्द्‌
षितइंद्रीपकरिसकैंनहीताही॥३३४॥ ज्यो
यहलीलागावेहितसोसुनेंसुनावे॥ प्रेम
भक्तिसोईपावैअरुसबकेमनभावे॥३३५
हीनबुद्धिनिंदकनास्तिकहरिधर्मबहमु
ष॥ तिनसोंकबहुनकहेकहेतोनहिनल
हेसुष॥३३६॥ नेंनहीननाहकैंनवलनाग
रिनारीरस॥ मंदहमनिसुँटाछिलसनिब
हकहाजानेरस॥३३७॥ भक्तिजननिसोंक
हेजिनकेंभागवतधर्मबल॥ ज्योजमुनाके
मीनलीननितरहतजमुनजल॥३३८॥ ज
हपिसत्तनिधिभेदनिजमुनानिगमबषा
नें॥ तातिहिधारहिधाररमतनछुवतजल
आने॥३३९॥ यहउज्वलरसमालाकोटिज
तनकरिपोई॥ सावधानह्वेरापहिरोतोरो

मतकोई ॥३५०॥ श्रवनकीरतनसारसार
सुमिरनकोहैपुनि ॥ ग्यानसाररहरिध्यानसा
रश्रतिसारगृथिगुनि ॥५१॥ श्रघहरनीम
नहरनीसुंदरप्रेमवितरनी ॥ नंददासकेकं
ठवसोनितमंगलकरनी ॥३५२॥ इतिश्रीपं
चाध्याईश्रीनंददासकृतिभाषसंपूर्णसमाप्त

श्रीकृष्ण

श्रीकृष्णचरित्रसिद्धांतपंचाध्याईलिष्यते ॥
रोलाछंद ॥ जैजैजैश्रीकृष्णरूपगुनकर्मश्र
पारा ॥ परमधामजगधामपरमश्रभिराम
उदारा ॥ श्रागमनिगमपुराणस्मृतिगनजे
इतिहासा ॥ श्रवरसकलविध्याविनोदजि
हिप्रभुककृस्वासा ॥१॥ रूपगंधरसपरस
सवदजेपंचविषयवर ॥ महाभूतपुनिपं
चपवनपानीश्रंवरधर ॥ दशाइंद्रियश्ररु

अहंकारमहातत्वत्रिगुनमन॥यहसबमा
याकरविकारकहेपरमहंसैं॥२॥सोमाया जन
जिनकेअधीननितरहतमगीजस॥वि
श्वविभवप्रतिपालप्रलैकारकआइस
वस॥जाग्रतसुप्तसुषुप्तधामपरब्रह्मप्र का
स॥इंद्रियगनमनप्रानइनहिपरमातम
भासे॥३॥षडगुनअरुअवतारधारनना
रायनसोई सबकोआश्रयअवधिभूत
नदनंदनसोई॥सिसुकुमारपौगंडध
र्मिपुनिवलितललितलस॥धर्मीनित्त
किशोरनवलचितचोरएकरस॥४॥जे
जगमेअगदीसकहेअतिरहेगवेभरि॥
सबकरक्रियानिरोधअपनेनिजसहज
खिलकरि॥महामोहनीमहमाताकरि
मोहेअली॥कोटिकोटिब्रह्मांडनिरषि

विधिकृगतिमूली ॥५॥ महाप्रलेकेजल
वललेगिरिपरवरस्योहरि ॥ नजनुगर्वगि
रितेगिरकतगयोधूरिमूरिरि ॥ ब्रह्मादि
ककोजीतिमहामदमदनभस्योजव ॥ द
र्पदलननंदललनरामरसभ्रगटकस्यो
तव ॥ ६ ॥ अवधिभूतयुनरूपनाद्नत्तन
तहांहोई ॥ सवरसकोनृजासरामरसक
हियेसोई ॥ ननुवीपरतधर्मइहिपरसुंद
रीपरसकरि ॥ कवनधर्मरखवारीअनुस
रजीवसहसहरि ॥ ६ ॥ कालधर्ममायाअ
धीनजेजीवववषाने ॥ विधिनिषेधिअरुपा
पपुंनितिनसनसवमाने ॥ परमधामपर
ब्रह्मगपानविग्यानप्रकासी ॥ तेक्योकहि
येजीवसहसकृतिसिषरनिवासी ॥ ८ ॥
कर्मकालअनिमाहिजोगमायाकेस्वामी

ब्रह्मादिककीटांतजीवसर्वांतरजामी॥ व
ह्नजातसंसारधारमेजियफंदेफंदन॥ पर
मतरुनकरुनाकरिप्रगटेश्रीनंदनंदन
॥९॥ सघनसच्चिदानंदनंदनंदनईश्वरज
स॥ तेसईतिनकेभगतजगतमेभयेभर
रस॥ श्रीवृंदावनचिद्घनखनखनघन
छविपावें॥ नंदसुवनकोनित्तसदनस्रुति
गणजिहिगावें॥१०॥ सुंदरसरदसुहाईऋ
तुजहांसदाविराजे॥ नवअखंडमंडलस
शिसवहीरजनीभ्राजे॥ जमुनतीरवलवी
रचीरहरिवरजिनदीने॥ तिनसंगविविध
विलासरासरसमवेमनकीने॥११॥ तिहिछि
नसोंउडराजउदितरसरासमहायक॥ प्रा
चीदिसनायकावदनजनुरंजितनायक॥
कवलनयनपियकोहियसुंदरप्रेमसमु

दजस ॥ पूरनशसिननिरषिहरषिवाढीत
रंगरस ॥१२॥ अरुनकिरनिमिलिअरुन
भयेछविनहीकहीजाही ॥ मनुहरिहि
यअनुरागनिकसिविगसोवनमाही ॥ स
ब्दब्रह्ममयवेनुवजाइसवेजनमोहे ॥ सुर
नरगनगंधर्वकछुनजानेहमकोहे ॥१३॥
प्रेममधुरमादकसुनादजिहिव्रजजुव
मोही ॥ तोहीधुनिसुनिचलीछटासीअ
निरषि तिसैमोही ॥ इकपहलेहींमनसुसुंदरस्मर
तिहरि ॥ अवमधुराधरमधुमिलाइवे
लीसुनाइकरि ॥१४॥ सुनीउमगिअनुरा
गभरीसावनसरिताजस ॥ सुंदरनगधरना
गरसागरमिलिनवढीरस ॥ केइगवनत
जिसोहनदोहनभोजनसेवा ॥ अंजनमं
जनचंदनपतिद्विजदेवनिषेवा ॥१५॥

धर्मअर्थअरुकामकर्मइहिनिगमनिदेसा
सबपरहरिहरिभजतभईकरिवडउपदेसा
पीतमसूचकसबदसुनतिजवअतिरति
वाढी।होतसहजसबत्यागनागजिमकंचु
कीछाडी॥१६॥जदपिकहूकेकहूवधन
आभरनबनाये॥हरिपियपेंअनुसरतज
हांकेतहांचलिआये॥कृस्नतुष्टकरिक
र्मकिरेंजेआनप्रकारा॥फलविभचारनहो
इहोइसुखपरमअपारा॥१७॥मातपितापा
तिकुलपतिउपपतिरोकिरहेजब॥नहिन
रुकीरसधकीलुकीसीजाइमिलीतब॥
मोहननंदसुवनपियहियेहरिलीनेजाके
कोटिकोटिवि घनेसविघनकरिसकेंहिन
ताके॥१८॥जेअररवरमेंअतिअधीनरुकि गई
भुवनजव॥गुनमेतननतजिचिदसरूपाधरि

पियहिमिलीतव॥ग्यानविनानहीमुकत
यहजुपंडितगनगायो॥गोपिनिअपनेप्रे
मपंथन्यारोदिषरायो॥१८॥ग्यानआतमा
निष्टगुननतेआतमगामी॥कृष्णअनाहू
तपारब्रह्मपरमातमस्वामी॥नहिनकछू
सिंगारकथायहपंचाध्याई॥सुंदरिअति
निरवृत्तिपरातेइतीवडाई॥२०॥जिनगो
चरित पिनकेनिरषिंशुकभयेअनुरागी॥ब्रह्मा
नंदमगनतेनिकसेह्वैवैरागी॥पुनितिन
कीपदपंकजरजअजअजहूंवंछे॥उद्धव
नि बुधिविसुद्धवहेपुनिपुंरजइंछे॥२१॥संक
रनीकेंजाननसारदनारदगानन॥तातेस
वेजगतगुरुगोपिनगुरुकरिमानत॥हज
रवनीगजगवनीकाननमेंजबआई॥सुंद
रहृंदावनघनताछिनअतिछविपाई॥

॥२२॥ त्रिगुनपवनलेआगेंअलिंधायेआये ॥ अवरसहेलीचेलातिनहूंअतिसुखपाये ॥ मणिमयनूपुरकंकनकिंकिनीकेरुनका
रा ॥ तेसीयेअलिरुंकारा चंचलकुंडलहारा ॥२३॥ आइहरिनिकटठाढीसोहतिप्रेम
नवेली ॥ मानोसुंदरसुरतरुचहूंदिसआ
नंदवेली ॥ नागरगुरुनदनंदनवोलेंअति
अनुरागे ॥ कामविषेपरवचनकहेसवरस
केपागे ॥२४॥ जेपंडितसिंगारग्रंथमतया
मेसाने ॥ तेकछुभेदनजानेहरिकछुविषई
माने ॥ अनाकूडमनकूलडुडमदहारनपि
यारे ॥ जहांजहांउज्जलपमेंधर्मताकेरषवा
रे ॥२५॥ पमेंअर्थेपरवचनेंतेकाहेतेइति ॥ कहे
हजदेविनिकेसुद्धप्रेमरसप्रगटकरनहि
ति ॥ सुनिपियकेअसवचनचकितभईव्रज

३०

कीवाला॥गद्गद्कंठरसालाबोलीयोति
हिकाला॥२६॥अहोअहोजसुमतिप्यारे
सुंदरनंदडुलारे॥जिनकहोवचनअन्यारे
नि तुमतोप्रानपियारे॥धर्मकहोहृढनाकहुं
अधरमरतिजोहोई॥जोधर्महिआचरतम
मलमननिर्मलसोई॥२७॥मननिर्मलभ
येसुद्धबुद्धिविग्यानप्रकासे॥तितिग्यानआ
नंदआतमातत्वअभासे॥तबतुम्हरीनि
जप्रेमभक्तिरतिअतिह्वैआवे॥तोकहुंतु
म्हरेचरनकमलकोनिकटहीपावे॥२८॥
धर्म तिनकेह्वै[illegible]तुमप्रानमाथफिरिसिषाव
हु॥समझिकहोपियवातचतुरसिरमोरक
होवहु॥औरजेसाधनिपुनिजननेसवक
रहिहुमहिरति॥तुमअपनेआतमानिज
प्रियनिजपरमगति॥२९॥हारगारसुतप

तिहितइनकरकवनआहिसुख॥बड्डोरो
गसमहिनदिनछिनछिनदेंहिमहादुख
॥ब्रह्मादिकजाचितवनिलगिनितसेव
करीहे॥सोलछमीसवछुडितिहारेपाइस
रीहे॥३०॥तेसेंईहमसवपरिहरितुम्हरे
चरननिआई नहिनतजोपियमनजोत
जोयेसवनिठुराई मुनिगोपिनकेप्रेम
वचनहसिपरेभेररस॥जदपिआतमारा
मरमतभयेनवलनेहवस॥३१॥विहर
तविपनविहारकहतकछुनहिकहिआ
वे॥वारवारतनपुलकिपुलकिसुकमुनि
जिहिगावे॥अविधिभूतनागरनगधर
करपारसपाये॥अधिकअपनपेजानित
नकमोऊभगमदछाये॥३२॥गवीदिक
जेकहेकामकेअंगआहिते॥सुद्धप्रेमेंअं के

गनहिंनजानेप्राकृतजे॥कवलनैंनकुर
नामेसुंदरनंदसुवनहरि॥रम्पाचहतरस
रासइनहिंअपनीसमसरकरि॥३३॥ता
नेतिनहींमाहितनकहुरिरहेललनयो
॥दिष्टकेरिवहुसभामांझिसुंदरनटवरजो
॥अलकपलककीओटकोटिजुगसमजि
ही नजाही॥तिनैंपलछिनओटसकछुदुखग
घि ननानाही॥३४॥सुंदिनरहीकछूतनमें
वनमेंवृक्षतडोलें॥निगमसारसिद्धांतव
चनतेअलवलवोलें॥कृष्णविरहनहीवि
रहवेमउछलनकहावे॥नियतपरमसुख
रूपइतरसवहुखविसरावे॥३५॥टूटनल
गीव्रजवाललालमोहनपियकोंतहां॥तू
तवयालकदंवनिंकअरुअंवपनसजहां
॥आवकुरीयवडमहंततवटपापरवूझें॥मा

हनपियहिवतेहेंजोकढ्ढइनकढ्ढंसमफे॥ ३६॥
आगेंचलिवृजजुवतीरुवतीआनिपरीत
हां॥हरनीतालतमालसुमनजुहीद्रुमगुही
जहां॥सखियेतीरथवासीपरउपगारीस
वदिन॥वृक्षकुरीनदनंदनमधुइनसुफत
हेकिन॥३७॥रूपगुनभरीलतायेंसोहत
वनमाही नदनंदनइन्हेंवृफेनिरखेहेंकि
धोंनाही॥इहिविधिवनघनवृफद्रुमवस
लगतिसुहाई॥करनलगेमनहरनलाल
लीलामनभाई॥३८॥शिसुकुमारपोगंड
चरित्रैभिवैहिदिषाये कवलनेनआप
तिउपायसवलोकसिषाये॥ओरजोआ
हिउपासकतिनहिअभेदवताये॥शिसु
कुमारपोगंडकान्हएकेदिषराये॥३९॥
अवतारीअवतारधारनिअरुजितेकविभ

ती॥ यहसवत्राश्रयकेत्र्प्रधारजगजिना
कीऊती॥ ततोजगतगुरुगोपीपुनिपुनि
श्रुकमुनिगावें॥ सनकसनंदनजगवंदन
तेऊसिरनावें॥४०॥ नंदनंदनलीलाकरि
गोपीधंनिभईजव॥ सुंदरचरनसरोजखो
जनिकटहीपायेतव॥ सुनिसवधाईत्र्प्रा
ईजीवनिमूरतिसीपाई॥ पुनिपुनिलेंहिव
लाईत्र्प्रपनीकरहिवडाई॥४१॥ सखिय
हकृष्णचरनरजत्र्प्रजसंकरसिरधारै॥ रमा
रवनपुनिधारैत्र्प्रपनेदोषनिवारै॥ पुनिपे
षेपियपगढिगप्यारीपियात्र्प्रंकजव॥ कव
नत्र्प्राहियहवडभागनियोंकहनलगी
तव॥४२॥ इननीकेंत्र्प्राराधेहरिईश्वरव
रजोई॥ तोपियत्र्प्रधरसुधासवपीवतिनि
धरकसोई॥ सोपुनितहांत्र्प्रभिमानभरीत

वकहनलगीतिय॥मोपेंचल्योनजायज
हांतुमचल्योचहतपिय॥४३॥जवजवजो
उइगारहोइरसप्रेमविधंसक॥सोसोक
रेनिरोधगोपकुलकेअवतंसक॥नाहिक
छूइंद्रियारामीकामीकामिनिवस॥सव
घटअंतरजामीस्वामीपरमैएकरस॥४४॥ श्री
नितआतमानंदअखंडसरूपउदारा॥
कवनेंप्रेमसैंगंम्यागंम्यअवरपरकारा॥
तातेतिनहीमांऊडुरपतिहुरिनहीभायो
सावालाअतिविलपिअखंडितप्रेमदि
षायो॥४५॥जैसेंकृस्नअखंडरूपचिहरू
पउदारा॥तैसेंईउज्जलरसअखंडतिन॥
करपरिवारा॥जगतउधारनकारनगुरुन
येमबुद्दिषरावे॥कामिकामिनिसमफावे
जोकोऊइहिमघआवे॥४६॥सोतवति

33

नहूं देषी ठाढी सो ह तज्र्रैसी ॥ नवज्र्रंबुद ते
अवही विछुरी विजुरी हे तैसी ॥ सोचें चितवें
वन में मन में अचरज भारी ॥ किनि किनि चं
डु ते चारु चंडिका मो नोन्यारी ॥ ४७ ॥ धायनु
जनि भरि लेपुनि तिहि जमुना तट आई ॥ क
लदरसलाल सा सुतरफै मीनकी नाई ॥ अ
पने ई प्रेम सुधा निधि मधिव टगई किलोलें
॥ विहवल ह्वै गई वाल लाल सों अलवलवो
लें ॥ ४८ ॥ तव प्रगटे नंदनंदन सुंदर सव जग
वंदन गोपी तापनिकंदन को है को टिकचं
दन ॥ मधुर मधुर मुसकाते विलुलित उर
वनमाला ॥ केवल मन मथ मन मथ चंचल
नेन विसाला ॥ ४९ ॥ पियहि निरषि ब्रजवा
ल उठी सव एकी ही काला ॥ ज्यों प्रान निके
आयें उजगहि इंद्रिय जाला ॥ सांवरे पिय

33

करपरसपायसबसुषितभईंयों ॥ परम
हंसभागवतमिलतसंसारीजनज्यों ॥५०॥
अरुजेसेजाग्रतसुपनसुषपतअवस्थाउतुष
सव ॥ तुरीअवस्थापाइजाइसवभूलि
भईतब ॥ मिलिजमुनातटविहरतसुंद
रनंदकेलाला ॥ तेसियेब्रजकीवालभ
रीअतिप्रेमरसाला ॥५१॥ जदपिअखंडा
नंदनंदनंदनईश्वरहरि ॥ तदपिमहाछ
विपाइछवीलीब्रजेंदविनकरि ॥ पुनि
ब्रजसुंदरीसंगमिलीसोहतसुंदरवरयों
॥ अनेकसकतिकरिआवृतसोहेपरमात
मज्यों ॥५२॥ पुनिजेसेपुरुषउपासिकग्याना
दिककरिसोहें ॥ योंरसओपीगोपीमिलि
मोहनमनमोहें ॥ रूपदरसआनंदवरस
दुषदूरिभयोमन ॥ पाइमनोरथअपनोजे

३५ सेहरेषेअतिगन॥५३॥जवलगिअतिअ
मकोंडहिकरमाकरमपरवाने॥तवलगि
इंद्रवरुनरविइनहोईश्वरगानें॥ग्यानको
डमेंपरमेश्वरविग्यानपरमसुख॥विसरि
गयोसवकामकमेंत्रग्यानमहादुख॥५४
तेसेंईगोपीप्रथमकामत्रभिरामरसीरस
पुनिपाछेंनिहसीवेद्रमजिहिकल्लभयेव
स॥जोनकोंनपरकारहोइअतिकल्लमग
नमन॥अनावरनेचेतंन्यकछुनचितवे
साधनतन॥५५॥महाद्वेषकरिमहासुद्वसि
सुपालभयोजव॥मुक्तहोतवहुड्डपनो
श्रवा कछुसंगनगयोतव॥औरजोसरवेंजगर
साधनअवशेषे॥स्वर्गजाइसुषपाइवकु
रिकोतिनतननेद्वेषे॥५६॥जोगीजिहिअ
ष्टांगजोगसाधनसाधतजे॥पाइपरमपरमा

तमैंकहावक्कुरिकरतते॥तैसीयेव्रजकीवा
मकामरसउतकटकरिके॥सुद्देवममय
भईलईगिरिधरउरधारिके॥५७॥आरंभि
ततवरुचिररासअद्भुतमुलासजहा॥अ
मलअष्टकमलमहामंडलमंडिततहां ९८
॥मधिकवनीयकरनिकातापरविविकि
सोरवर॥पुनिद्वैद्वैगोपीकरिहरिमंडित
मंडलपर॥५८॥एकेमूरतिललितलालआ
लातकीनाई॥सवकेअंसनिधरीसांवरी
वाकुसुहाई॥जद्दपिवछस्थलरमतरमा
रमनीवरकामिनि॥तद्दपिनयहरसपायो
पायोजोव्रजभामिनि॥५९॥जितकक्कु
तीव्रजवधूकोटिकोटनहिमरीरति॥तिति
येतहांरागिनीरागसंगीतभेदगति॥का
हूकेकाहूनगीतसंगीतछुयेजहां॥भि

न्नभिन्नअपनपैअनागनप्रगटकियेतहां
॥९०॥ वनिताजहांसतकोटिकहतकछु
नहीकहिआवे॥ अपनेगुनगतिन्हननाद
कोउपारनपावे॥ जगमेंजोसगीतनाद्युजि
हिजगतरिक्तायो॥ असहूजतियनिकोस
हजगमनयोआगमगायो॥ जोहूजदेवी
न्हत्ततमंडलरासमहाछवि॥ तिहिकोऊ
केसेंवरनेअैसोकवनआहिकवि॥ रागरा
गिनीसमजिनकोवोलिवासुहायो॥ सुक
वनपेकहिआवेजोहूजदेवीनिगायो॥
॥९१॥ जसश्रीकुलअमितमहमाकोऊ
पारनपावे॥ अैसेंईहूजवनितागुनगन
तागनतनआवे॥ जवनायककेभेदभाइ
लावन्यरूपगुन॥ अभिनयकरिदिषराये
गायअद्भुतगतिउन॥९३॥ तहांसांवरेकुं

वरराजिके रीझि रहत यों ॥ निज प्रतिबिंबविलास
निरषि सिसु भूलि रहत ज्यों ॥ जिनकी गीत
धुनि छुटा सकल जुग छाइ रह्यो है ॥ जिम
रंच कल छमी कटाछ सब विभव कह्यो
है ॥ ६४ ॥ ते तो मदन मोहन पिय रीझि भुजन
भेरि लीनी ॥ चुंबन करि सुष सदन वदन ते
वारी दीनी ॥ लटकि लटकि हज वाला ला
ला उरज वरजूली ॥ उलटि अनंग अनंग द
हीत वस सव सुधि भूली ॥ ६५ ॥ रीझि सरद की
रजनी न जनी केतक वाढी ॥ विहरत सज
नी स्याम ज्यां रुचि अति रति गाढी ॥ कैथ
उडप अरु उडगन उनकी कोन चलावे
कालचक्र पुनि चकित थकित कछु मर
म न पावे ॥ ६६ ॥ निरषत मार हनार द संक
र सनक सनंदन ॥ हरषत वरषत फूलनि
जे जे जे नंद नंदन ॥ अद्भुत रस रह्यो रासक

हतकछुनंहीकहिआवे॥सेससहससु
खगावेअजहूअंतनपावे॥६६॥होस
ज्जनजनरसिकसारसमनकरियहसु
नियें॥सुनिसुनिपुनिआनंदहहेदेहदनी
कौंगुनियें॥सकलसास्त्रसिद्धांतपरमए
कांतमहारस॥जाकेरंचकसुनतगुनत
श्रीहरिलहोइवस॥६७॥एसकवलमंड
लरसकेजेभवरभयेहे॥नीरसविषयपा
विलासछिंयाकरिछाडिदयेहे॥नंदहा
ससोंनंदसुवनजोकरुनाकीजे॥तिनभ
गतनिकीपदपंकजरजसोंरुचिदीजे
॥६८॥इतिश्रीसिद्धांतपंचाध्याईनंददासे
नकृतंसंपूरण॥संवत१७६४चैत्रसुदितेज
गुनस्वारथअरुरूपकोंप्रीतिकरेसवको
इ॥स्वारथप्रीतितवजानियेइनसोंन्यारहोइ

१४९

राधावल्लभो जयति॥ रुक्मिनीमंगल॥ लिष्यते॥ रोलाछंद॥ सिसुपालहि दइ रुकमरुकमिनी वात सुनी जब॥ चित्रलिषत सम भइ दइ यह कोन भई अब॥ चाकित चहूं दिसि चहत विछुरि मानो मृगी मालते॥ भयो वदन कछु मलन नलिन मनो गलित नालते॥१॥ भरि आये जल नेंन नत्र मर सत्रें न सुहाये॥ जनों सुंदर अरविंद अलिंद निवठि हलाये॥ अलि पूछें वलि वालक हो क्यों नेंननि पानी॥ पुहपरें नि उडपरी कहत तिन सो मधुवानी॥२॥ कान्हकी दिग कुवरि वडे डे स्वास निलेई॥ पूछे सुदरि मुख हि मुदित तिहि ऊतर देई॥ जो को ऊतपतउ सासकु तासवदनमेलहई॥ कंन्यावि

१

रहनिवतीकहतासोंकेसेंकेकहिई॥३॥
सुसमकुसमकोहारुउदारसखीगुहला
वें॥करकरिकुंवरिनपरसेअरसेनिकट
धरावे।अपनेकरजुविरहजुरकरिजान
तअतितातें॥मनफुरिजाइसुमालावा
लासकुचतयाते॥४॥मिटिगईमृषपि
यासपासतबकोऊनभावे।कोनेजाइ
उसासभरेदुखकहतनआवे॥दुरीरह
तक्योंपियरतिप्रगटहीदेयदिखाई॥
पुलकिअंगसुरभंगस्वेदकवहूजइता
ई॥५॥उरवरथरथरकंपितजंपितकुंव
रिकहाई॥कवहूटकिलगिजातकव
हुंआवतमुरझाई॥ह्वैगयोकछुकवि
वरनतनछाजतयोछविछाई॥रूपअ
रूपमवेलितनकमनोघाममेंआई ६

१

मंगलदुंदुभिसुनेंधुनेंधुनसोंमनमा
ही॥निरखिनिरखिकरककनादृगजल
कनभरिजाही॥टपकिटपकिछ्वाले
नेननितेअसुवापरही॥जनोंनववनील
कमलदलतिनतेमुतियाफरही॥१॥
कबहूमनहिमनसोचतमोचतिस्वा
सडारे॥मोहनसोंहनस्यामनह्वैहें
पीयहमोरे॥उपजिविरहदुषआवतवा
तनतापतयेहें॥केउकेउहारकेमुति
यातचितचिलालभयेहे॥८॥करतवि
चारमनहिमनहियेंअबकेसीकीजे।
लोककलाजकुलकानिकरेमोसर्वसुछी
जे॥आगिलागिजरिजाउलाजजोका
जविगारे॥सुंदरनंदकुंवरनगधरसोंअं
तरपारे॥१०॥सोईपतिहरिअनुसरो ॥

२

वरोंसोजतनकरोंहठि॥मातताततअरु
वंधभ्रातजनसवैपरोंभठि॥पतिपरह
रिहरिभजतभईगोकुलकीगोपी॥तिन
ह्नसवैविधिलोपीप्रेमपरमरसओपी॥
॥१०॥जिनकीचरनकवलरजअजसेवं
छनलागे॥सनकसनंदनशिवसारदना
रदअनुरागे॥इहिविधिघरिमनधारची
रअसुवासिरायके॥लिष्योपत्रसुविचि
त्रभांतिनांनांवनाइके॥११॥नवइक
द्विजवरवोलिषोलिसवलाजकह्यो
तब॥अहोदेवद्विजदेवपीयपैतुरतजा
ह्नअव॥यहपतियामोनाथहाथतुम
लेपुनिदीजो॥काहूनहिनपतीजोव
लिवलिइतनीकीजो॥१२॥द्विजफिरि
गयोनभवनगवनकियोधरिजुपवन

गति॥ औरतिनिरषिरुकमिनीअतिही
कृस्नहरसरति॥ पुरीपरमछबिछुराबि दुरी
थचाहिचकितचितु॥ औनिवासकोनि
जुनिवासछबिकोकहियेनितु॥१३॥
वनउपवनकेरूषभूषभोगतजिनदेषें
अम्रतफलनिकरिफेरभेरसुरद्रुमनि
विशेषे॥ ललितलतनिकीफूलनिफूल
नियोछबिछाजे॥ तिनमेंअलिरवराजे
मधुरेजंत्रसेवाजे॥१४॥ सुकसारिकपि
कचाचातकमैथुनऔसेंरटई॥ मनो
मारचटसारसुटारचटागनपटई॥
औरविहंगमरंगभरेबोलतहियहर
ही॥ जानोतरवररसभरेपरस्परवाते
करही॥१५॥ सुभगसुगंधसरोवरनिमे
लमुनिमनजेसे॥ प्रफुलितिवरइंदीव

३

रत्नअरुनराजीवकुसेसे॥कंजकंजअतिपुं
जभवरगुंजतअनियारे॥मनोरवित
मतजिउयोभयेरोवतयोंबोरे॥१६॥उ
ज्ज्वलमनिमेंअटाघटासोंवातेकरही।
जगमगजगमगहोतजोतिरविससि
सोंअरही॥चपलपताकाफरकेअरके
स्त्रकिरनिसों॥धामनकवहूपरसेनि
तहींरहतछरनिसों॥१७॥जालरंध्रमग
अगरधूममनोंजलधाधरवा॥भरिभ
रिअनेंदउरवानाचतमध्धरेमुरवा
वगरवगरसवनगरउडीनवगुडीव
नीछवि॥मनोंगगनमेंअगनचखटे
चेंदरहेफवि॥१८॥तेमेंईदवविवाने
हारावतिदिपनआग॥दिपदिपछवि
हियेमरसेवरसेसुमनसुहाए॥कलस

३

भोवतीपुरीनिरषिहिजहांरषभयोअस
जगतहूंदतेनिकसिवुह्माआनंदमिले
जस॥१९॥सिंघपौरछविरवारहीनक
हीवनिआवै॥पमेंअर्थअरुकाममोछि
जिहिनिरषतपावै॥जहांअनेकप्रचा
रमारसेवनिवनिठाढे॥फूलकलपतरु
सुंदरसीतलछांहकेवाढे॥२०॥वुह्मरु
डअमंदइंदकीभीरभुलावै॥भीतरजा
निसुपावैजिहिहरिदेवबुलावै॥चलो
गयोयोंविप्रछिप्रगतिकिनकुनअट
के॥प्रभुहिजानिवुह्मरूपपोरियापाइ
निलटके॥२१॥जादोपरषदमहिदेषि
छविहिजसचुपायो॥जतोउडपतिसि
सुमंडलसोमहमंडलआयो॥किधोंक
मलमंडलमेंअमलदिनेसविराजे॥कं

कनकिंकिनीकुंडलनिरषिमहाछवि।
छाजे॥२२॥नाहिदूरितेनिरषिपरषिह
रिहरषितहोइ॥त्रियासंदेसोकहिईय
हेयहद्विजवरकोइ॥उठिनंदनंदनजग
वंदनपगवंदनकरिकै॥लाइचलेघरद्वि
जवरकोंकरपरकरधरिकै॥२३॥दुगधफे
नसमसेंनरमामनऔनसुहाई॥ताऊ
परवैठारिपाइधोयेजदुराई॥खानपान
वहुमानिपानिनिजपानषवाये॥कहो
कहांतेंआयेवोलतवचनसुहाये॥२४॥
तवरुकमिनिकोकागरनागरनेहनवी
नो॥वसनछोरतेंछोरिविप्रश्रीधाक
रहीनो॥मुद्रापोलिगोविंदचंदतववा
चनआचे॥प्रेमपरमरससोचेआछरप
रतनवांचे॥२५॥श्रीहरिहियासिराव

तलैलैलावतछाती॥लिखीजुबिरहके
हाथनिपातीअजहूंताती॥छतीलगा
इसुखपाइफेरिद्विजवरकरदीनी॥रुक
मिनीअसुवनभीनीअवहरिअसुवन
भीनी॥२६॥पढनलगेद्विजगुनीरुक
मिनीवचनसुहाये॥तवहरिकेमननें
नसिमटिसवश्रवणनिआये॥स्वस्ति
श्रीश्रीश्रीनिवासकृतिवाससुहाय
क॥सुरनरमुनिजराउसमप्रभुतुमस
वमधिनायक॥२७॥नृपविद्रुमकीकं।
न्यारुकमिनीअनुचरिगुनिये॥ताके
प्रथमप्रनामवांचिपुनिविनतीसुनि
ये॥अलगुनाहिनेमानियेजानियेअप
नीकरिकै॥मगतहोतदुषजलनिधिमं मैं
धिंउधारोकरधरिकै॥२८॥जवतेतुम्हारे

गुनगनमुनिजननारदगाये॥ तवतेत्र्यो
रनभायेत्र्प्रमीतेत्र्प्रधिकसुहाये॥ मेंतुम
मनकरिवेरकुंवरगिरिधरनपियारे॥
हमभईतुमपरचारनाथभयेनाथहमा
रे॥२८॥ त्र्प्रवहिनहिकछुकरोवरोत्र्प्रभु
त्र्प्रवनिमलसुंदर॥ नित्तपरमत्र्प्रभिराम
परमसुखधामपुरंदर॥ त्र्प्रोरसवेदुषभ
रेसेरत्र्प्रंतरहीत्र्प्रंतर॥ कालकमलसेम
रेपरेछिनछिनपरतंतर॥३०॥ देषतके
१ सवगोरनवनवपानिंदोरे॥ हारकाज
नहीत्र्प्रावेजेसेंउज्जलत्र्प्रोर॥ तिनमेंड
कसिसुपालताहिमोहिदेयपरुकमस
ठ॥ मातपितापचिहोरहोतनसोपठ
तेमठ॥३१॥ महाहंसजडुवंसवीरनिज
मनसोंविचारे॥ हेत्र्प्रवतुम्हरोभागका

154

गसिसुपालविटारे॥ उचितहोइ सोकु
रिये मरिये नाथ यह तो॥ बारन बृंद वि
दारन विलगो माइ गहे जो॥३२॥ परत
परेवा नभ ते परकर निरषि ती यकों॥
तुमसवलायक दृछि तुछ सिसुपाल
छी यको॥ जो अवन गधर नागर मोहि
न करिहो द्रासी॥ तो परि पावक मरिहो
करिहों तनु तिनुकासी॥३३॥ मरि मरि
धरि धरि देह निगेह निद्धर हिहों हरि॥
हरि वर ओपर हरोस्पाल सिसुपाल गहे
कर॥ सुनि रुकमिनि की पाती छाती वु
नि लगाइके॥ मागपो रघ रुकम कोरुक
म परि अति रिसाइके॥३४॥ तुरत चटे
छवि वेट चटत वानिक वनि आये॥ अ
रवर मेंखि सपस्यो पीत पट हि जपकरा

यो॥ बातकरतबिड्सोंलमननविगसतसु
दरमुख॥ मनोंकुमदनिकेघरहिचंद्रमा
देंनचल्योसुख॥३५॥ अहोद्विजसबदल
दलमलडुलहनिलावोंऐसे॥ दारुमध्य
नकरिसत्रुअग्निमथ्यकाढियेजेसें॥ जानि
प्रियाकीअरबरदरबरदेंऐसेंधाये॥ मन
कीसीगतितनकीकरिकुंदनपुरआये॥
॥३६॥ इहांकुंवरितरफरतफिरतघरआ
गनऐसें॥ रविकरडुषितकरीमकरीथो
रेजलजेसें॥ चढिचढिअटनिझरोखनि
झांकततनबलकिशोरी॥ चंद्रउदेंजेसेंआ
तुरचातुरचकितचकोरी॥३७॥ बाकुंच
खकलागीफरकनसुभगआंगलागीफर
कन॥ उरबरलाग्योफरकनहियेतेंडुख
लाग्योसरकन॥ ताहीछिनयहद्विजवर

ऐंतहपुरचलिआयो॥बदनडहडह्यो
देषिरुकमिनिधीरजपायो॥३८॥पूछि
नसकेमुषतकेदईयहकहाकहेगो॥
अमीवचनसोचिहेकितरलगरलनिद
हेगो॥निकसिप्रानतियतनतेहिजके
वचनमेंआयो॥तवकह्योश्रीहरिआये
तवफिरिवफुरोपायो॥३९॥दियोचह
तकछुताकोदेषतनहिलायक॥तवउ
ठिपाइनिपरीभरीआनंदमहायक॥
जाकोंसुरनरसेवतसेवतहूनहीलहि
ये॥सोलछमीतिहिपरेंताकीकहाक पा६
हिये॥४०॥पुनिसवलोगनिसुनीकिसुं
दरश्रीहरिआये॥जहांतहांतेधायेदेषि
सवविस्मयपाये॥कोटिकामलावंण्य
धामअंगसांवरेपियके॥जोईजोईजा

७ ७३३

कोदिष्टपरेसुभयेतितहीके ॥४१॥ केऊ
जुग्रलकछविग्ररफेग्रजह्नाहिनेसु
रफे॥ललितिललटपटीपगियालषितेत
होईसुरफे॥केऊघुघुरारीतोंहनिनिप
टहीविवसकरेहे॥केऊहगकीछविग
नतगनतहीहारिपरेहे॥४२॥केऊक्र
तिमंडलकुंडलचलजगमगजोती॥नि
रषतहीमिलिगयेभयेजलनिधिकेमो
ती॥केलिषलितकपोलनिमधरावो
लनिग्रटके॥महगजज्योंपरिचिहलें
दहलेफिरिह्नमटके॥४३॥केऊजुर
हेचकिचोंधिरुचिरपातांवरछविपर
॥मानोछविलीछटारहीथिरसुंदरघ
नपर॥केऊजुग्रागतेग्रारग्रंगकेलोभ
लुभारे॥केऊजुरुचिरचरनारविंदम
नेरेभुवनकेचोरभयेवलतहीहां

ऊ